1 * तू ज़िन्दा है तो.....

'तू ज़िन्दा है तो..... ' कविता गहरे जीवन राग और उत्साह को प्रकट करती है । इस जीवन राग में अतीत के दुखदायी पलों को भूलकर आशा और जीत की नई दुनिया का स्वागत करने की प्रेरणा है ।

तू ज़िन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यक़ीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर

ये ग़म के और चार दिन, सितम के और चार दिन
ये दिन भी जायेंगे गुज़र, गुज़र गये हज़ार दिन
कभी तो होगी इस चमन पे भी बहार की नज़र
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो.....

सुबह और शाम के रंगे हुए गगन को चूमकर
तू सुन ज़मीन गा रही है कब से झूम-झूम कर
तू आ मेरा सिंगार कर तू आ मुझे हसीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो.....

हजार भेष धर के आई मौत तेरे द्वार पर
मगर तुझे न छल सकी, चली गई वो हारकर
नई सुबह के संग सदा तुझे मिली नई उमर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो.....

हमारे कारवां को मंज़िलों का इंतज़ार है
ये आँधियों, ये बिजलियों की पीठ पर सवार है
तू आ कदम मिला के चल, चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो.....

ज़मीं के पेट में पली अगन, पले हैं ज़लज़ले
टिके न टिक सकेंगे भूख रोग के स्वराज ये
मुसीबतों के सर कुचल, चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो.....

बुरी है आग पेट की, बुरे हैं दिल के दाग़ ये
न दब सकेंगे, एक दिन बनेंगे इंकलाब ये
गिरेंगे ज़ुल्म के महल, बनेंगे फिर नवीन घर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो.....

शंकर शैलेन्द्र

शब्दार्थ

यक़ीन	–	भरोसा
सितम	–	ज़ुल्म
गुज़र	–	बीतना
चमन	–	बाग़, फुलवारी
बहार	–	शोभा, सुन्दरता
ज़ुल्म	–	अत्याचार
सिंगार	–	शृंगार
कारवाँ	–	काफ़िला
ज़मीं	–	ज़मीन
अगन	–	आग
ज़लज़ले	–	भूकंप
स्वराज्य	–	अपना राज्य

गतिविधि :

1. अपनी कक्षा में समूह के साथ सस्वर गायन कीजिए।
2. कविता से निम्न श्रेणियों के शब्दों की सूची बनाइए:-

तत्सम	तद्भव	अरबी–फ़ारसी

2 ईदगाह

प्रेमचंद रचित यह कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। यह कहानी वंचित बचपन के परिस्थितियों पर मार्मिक ढंग से टिप्पणी करती है। अभावग्रस्त जीवन बाल मन को वयस्क की तरह सोचने के लिए मजबूर करता है। हामिद खिलौने की जगह अपनी दादी के लिए चिमटा खरीद कर लाता है और दादी अमीना के लिए यह दृश्य गहरी संवेदना की अभिव्यक्ति का कारण बनता है। दादी को लगता है, काश ! इस बच्चे को भी वह सब कुछ मिलता, जो पड़ोस के बच्चे को मिलता है।

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आई है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। उनकी जेबों में कुबेर का धन जो भरा हुआ है। बार-बार जेब से अपना ख़ज़ाना निकालकर गिनते हैं और ख़ुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद के पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास पंद्रह पैसे हैं। इनसे तो अनगिनत चीज़ें खरीद सकते हैं खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या-क्या । और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद। वह चार-पाँच साल का ग़रीब-सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट चढ़ गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं! इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही थी।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है "तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।"

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद को कैसे अकेले मेले में जाने दे। कहीं खो जाए तो क्या होगा ? नन्ही-सी जान! तीन कोस चलेगा कैसे! पैर में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद ले लेगी; लेकिन यहाँ सिवइयाँ कौन पकाएगा? धोबिन, नाइन, मेहतरानी और चूड़िहारिन सभी तो आएँगी। सभी को सिवइयाँ चाहिए। साल भर का त्योहार है।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। उसके पैरों को तो जैसे पर लग गए हैं। कभी-कभी कोई लड़का कंकड़ी उठाकर आम पर निशाना लगाता है। माली अंदर से गाली देता हुआ निकलता है। लड़के खूब हँस रहे हैं।

ईदगाह आ गई। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया। नीचे पक्का फर्श है। रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक दूर तक चली गई हैं। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर हैं। लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सबके-सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ घुटनों के बल बैठे जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएँ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)



नमाज़ ख़त्म हुई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौनों की दुकानों पर धावा होता है। तरह-तरह के खिलौने हैं सिपाही, गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती, धोबिन और साधु। महमूद सिपाही लेता है, ख़ाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर पर मशक रखे। नूर को वकील से प्रेम है। काला चोंगा, नीचे सफ़ेद अचकन, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? कहीं हाथ से छूट गया, तो चूर-चूर हो जाएगा, पानी पड़ा तो सारा रंग धुल जाएगा। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा?

सब अपने-अपने खिलौनों की तारीफ कर रहे हैं। हामिद ललचाई आँखों से खिलौनों को देख रहा है। चाहता है कि ज़रा देर के लिए ही सही, वह उन्हें हाथ में ले सकता। वह हाथ आगे बढ़ाता है लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते, विशेषकर जब अभी नया शौक है। हामिद ललचाता रह जाता है।

मिठाइयों की दुकानें आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब जामुन, किसी ने सोहन हलवा। मजे से खा रहे हैं। लेकिन हामिद! अभागे के पास सिर्फ तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता?

मोहसिन उसकी ललचाई नजरें देखकर कहता है ''हामिद, रेवड़ी ले खा, कितनी ख़ुशबूदार है।'' जैसे ही हामिद हाथ फैलाता है, मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद, नूरे, और सम्मी ख़ूब तालियाँ बजा-बजाकर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।



मिठाई की दुकानों के बाद लोहे की चीज़ों की दुकानें हैं। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख़याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है, अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वे कितनी प्रसन्न होंगी? फिर उनकी

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

उँगलियाँ कभी नहीं जलेंगी। खिलौने से क्या फ़ायदा! व्यर्थ में पैसे ख़राब होते हैं।

अम्मा चिमटा देखते ही कहेंगी 'मेरा बच्चा अम्मा के लिए चिमटा लाया है।' हज़ारों दुआएँ देंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी, हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौनों पर कौन दुआएँ देगा। बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरंत सुनी जाती हैं।

दुकानदार से बड़ी मुश्किल से मोलभाव करके हामिद ने चिमटा तीन पैसों में ले लिया। उसे कंधे पर रखा, मानो बंदूक है और शान से अकड़ता हुआ साथियों के पास आया। मोहसिन ने हँसकर कहा ''यह चिमटा क्यों लाया पगले? इससे क्या करेगा?'' महमूद बोला, ''चिमटा कोई खिलौना है?''

हामिद बोला, ''क्यों नहीं? अभी कंधे पर रखा तो बंदूक हो गई। हाथ में लिया फ़कीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ तो तुम सबके सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है चिमटा।''

सम्मी ने खंजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला ''मेरी खंजरी से बदलोगे?''

हामिद ने खंजरी की ओर उपेक्षा से देखा ''मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खंजरी का पेट फाड़ डाले।'' चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया। औरों ने तीन-तीन, चार-चार पैसे ख़र्च किए, पर कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया।

सबने अपने-अपने खिलौने देकर चिमटा पकड़ने का प्रस्ताव रखा। हामिद मान गया। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने ख़ूबसूरत खिलौने हैं। पर उसका चिमटा तो रुस्तमे हिंद है सभी खिलौनों का बादशाह।

गाँव पहुँचकर बच्चों ने अपने-अपने खिलौने से खेला, पर थे तो वे मिट्टी के। कुछ ही देर में टूट-फूट गए। अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी। गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी! ''यह चिमटा कहाँ से लाया?''

''मैंने मोल लिया है।'' ''कै पैसे में?'' ''तीन पैसे दिए।''

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है, न कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा। ''सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?''

हामिद ने अपराधी भाव से कहा, ''तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।'' बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। यह स्नेह मूक था, ख़ूब ठोस,

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्‌भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर कितना ललचाया होगा मन! इतना ज़ब्त इससे हुआ कैसे! वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्‌गद् हो गया।



अमीना की आँखें भर आईं। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता।

प्रेमचंद

शब्दार्थ

अभागिन	–	भाग्यहीन स्त्री
गत	–	पिछला
दिल कचोटना	–	अफसोस होना, मन में कसक होना, घबराना
ईदगाह	–	वह स्थान जहाँ ईद के दिन नमाज़ पढ़ी जाती है
सिजदे	–	सम्मान में सर झुकाना
निगाह	–	दृष्टि, नज़र
प्रदीप्त	–	जला हुआ
मशक	–	पशु की खाल से बना थैला
भिश्ती	–	मशक से पानी भरने वाला
पोथा	–	मोटी किताब, कॉपी
उपेक्षा	–	नज़रअंदाज
विवेक		भले-बुरे का ज्ञान, समझ
ज़ब्त	–	दबाया हुआ
गद्‌गद्	–	अत्यन्त प्रसन्न
दामन	–	आँचल
ठोस	–	मज़बूत

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. ईद के दिन अमीना क्यों उदास थी ?
2. हामिद मिठाई या खिलौने के बदले चिमटे का चयन करता है। क्यों ?
3. मेला जाने से पहले हामिद दादी से क्या कहता है ?
4. मेले में चिमटा खरीदने से पहले हामिद के मन में कौन-कौन से विचार आये ? वर्णन कीजिए।
5. हामिद ने चिमटे को किन-किन रूपों में उपयोग करने की बात कही है ?
6. ईदगाह कहानी आपको कैसी लगती है? इसकी मुख्य विशेषताएँ बताइए ।
7. चिमटा देखकर अमीना के मन में कैसा भाव जगा ?

8. **निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए और उसके आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए**

नमाज़ खत्म हुई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकानों पर धावा होता है। तरह-तरह के खिलौने हैं सिपाही, गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती, धोबिन और साधु। महमूद सिपाही लेता है, ख़ाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर पर मशक रखे। नूरे को वकील से प्रेम है। काला चोंगा, नीचे सफेद अचकन, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले ? कहीं हाथ से छूट गया, तो चूर-चूर हो जाएगा, पानी पड़ा तो सारा रंग धुल जाएगा। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा ?

(क) नमाज़ खत्म होने के बाद लोग क्या कर रहे थे ?

(ख) दुकानों में किस-किस तरह के खिलौने थे ?

(ग) वे खिलौने किस चीज के बने थे ?

(घ) महमूद, मोहसिन और नूरे ने कौन-कौन से खिलौने खरीदे ?

(ङ) परिच्छेद में सिपाही, भिश्ती और वकील के हुलिये का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार आप राजा और साधु के हुलिये का वर्णन कीजिए।

(च) अनुच्छेद में आए विशेषण शब्दों को छाँटकर लिखिए।

(छ) 'वर्दी' और 'पोथा' के समानार्थी लिखिए।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

पाठ से आगे

1. महमूद, मोहसिन, नूर और हामिद में किसका चरित्र अच्छा लगा? कारण बताइए।
2. क्या हामिद बच्चों की सामान्य छवि से अलग हटकर एक नयी छवि प्रस्तुत करता है? कैसे?
3. ''चुनौती बच्चे को परिपक्व बना देती है।'' इस उक्ति की व्याख्या कीजिए।
4. 'त्योहार हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं।' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

व्याकरण

वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(क) रंग जमाना

(ख) गद्‌गद् होना

(ग) भेंट चढ़ना

(घ) बाल बाँका न होना

(ङ) पैरों में पर लगना

(च) कुबेर का धन मिल जाना।

गतिविधि

1. मेले में आपने क्या-क्या देखा, उसका चित्र बनाइए।
2. अपने शिक्षक से रमज़ान के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
3. ईद और मुहर्रम में क्या अंतर है ? अपने शिक्षक से समझिए।
4. **आपके अनुसार निम्न परिस्थितियों में हामिद क्या करता?**

-- यदि उसके पास बारह पैसे होते।

-- यदि उसके पास पंद्रह पैसे होते।

-- यदि उसके साथ उसके पिता होते।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

3 कर्मवीर

कर्म के प्रति निष्ठा ही व्यक्ति की सफलता का निर्धारण करती है। बाधाएँ व्यक्तित्व को निखारने का काम करती हैं। कविता बाधाओं से जूझते हुए उन कर्मशील लोगों की बात करती है, जो सभ्यता-संस्कृति का निर्माण करते हैं।

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।
हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले ।।

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।
सोचते-कहते हैं जो कुछ, कर दिखाते हैं वही।।
मानते जी की हैं, सुनते हैं सदा सबकी कही।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत् में आप ही।।
भूलकर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं ।।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं।
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं।।
आज-कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं।
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं।।
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके किए।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए ।।

चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पड़ने पर करें जो शेर का भी सामना।।
जो कि हँस-हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना।
'है कठिन कुछ भी नहीं' जिनके है जी में यह ठना।।
कोस कितने ही चलें, पर वे कभी थकते नहीं।
कौन-सी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं।।

काम को आरम्भ करके यों नहीं जो छोड़ते।
सामना करके नहीं जो भूलकर मुँह मोड़ते।।
जो गगन के फूल बातों से वृथा नहीं तोड़ते।
संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते।।
बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से है कारबन।
काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन ।।

पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे।
सैकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे।।
गर्भ में जल-राशि के बेड़ा चला देते हैं वे।
जंगलों में भी महामंगल रचा देते हैं वे ।।
भेद नभ-तल का उन्होंने है बहुत बतला दिया।
है उन्होंने ही निकाली तार की सारी क्रिया।।

कार्य-स्थल को वे कभी नहीं पूछते 'वह है कहाँ'।
कर दिखाते हैं असंभव को भी संभव वे वहाँ।।
उलझनें आकर उन्हें पड़ती हैं जितनी ही जहाँ।
वे दिखाते हैं नया उत्साह उतना ही वहाँ।
डाल देते हैं विरोधी सैकड़ों ही अड़चनें।
वे जगह से काम अपना ठीक करके ही टलें।।

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले-फले।
बुद्धि, विद्या, धन, विभव के हैं जहाँ डेरे डले।।
वे बनाने से उन्हीं के बन गए इतने भले।
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले।।
लोग जब ऐसे समय पाकर जनम लेंगे कभी।
देश की औ' जाति की होगी भलाई भी तभी।।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

शब्दार्थ

बाधा	–	रूकावट, डर, भय
विविध	–	विभिन्न, अनेक प्रकार के
बहु	–	बहुत, ज़्यादा
भाग	–	भाग्य
आन	–	गौरव की भावना, प्रतिज्ञा, संकल्प की भावना
यत्न	–	प्रयास
उज्ज्वल	–	चमकीला
बेड़ा	–	जलयान
विभव	–	ऐश्वर्य, दौलत
सपूत	–	अच्छा बेटा

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. कर्मवीर की पहचान क्या है?
2. अपने देश की उन्नति के लिए आप क्या-क्या कीजिएगा?
3. आप अपने को कर्मवीर कैसे साबित कर सकते हैं ?

पाठ से आगे

1. परिश्रमी के द्वारा मनोवांछित लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। कैसे ?
2. ''कल करै सो आज कर, आज करै सो अब। पल में परलय होइगा, बहुरि करेगा कब।'' इस पंक्ति का अर्थ लिखिए ।
3. आप किसे अपना आदर्श मानते हैं और क्यों?

व्याकरण

1. दिए गए शब्दों से विपरीतार्थक शब्द-युग्म बनाइए, जैसे: अमीर-ग़रीब,
   दुख, कठिन, भलाई, सुख, जन्म, सरल, बुराई, सपूत, मरण, विरोधी, कपूत, समर्थक, असंभव, नभ, फूल, आरंभ, बुरा, वीर, संभव, तल, शूल, अंत, भला, कायर
2. सामान्य वाक्य - रेगिस्तान में जल ढूँढ़ना बहुत कठिन है।
   मुहावरेदार वाक्य - रेगिस्तान में जल ढूँढ़ना लोहे के चने चबाने की तरह है।

उक्त उदाहरण की तरह निम्नलिखित सामान्य वाक्यों को भी मुहावरेदार वाक्यों में बदलिए

(क) रमेश अपनी माँ का प्यारा लड़का है ।

(ख) पुलिस को देखते ही चोर भाग गए ।

4 बालगोबिन भगत

रामवृक्ष बेनीपुरी रचित रेखाचित्र बालगोबिन भगत धर्म के इस मर्म का उद्घाटन करता है कि धर्मपालन आडम्बरों या अनुष्ठानों के निर्वाहण में नहीं बल्कि आचरण की पवित्रता और शुद्धता में है। नायक बालगोबिन भगत गृहस्थ हैं, उनकी वेश-भूषा भी साधुओं जैसी नहीं है, लेकिन उनकी दिनचर्या और निर्णय मनुष्यता की सच्ची और सही परिभाषा रचने में सहायक है। इस पाठ के माध्यम से आप एक नयी गद्य विधा रेखाचित्र की विशेषताओं और रूप से भी परिचित होंगे।



बालगोबिन भगत मँझौले कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे। साठ से ऊपर के ही होंगे। बाल पक गए थे। लंबी दाढ़ी या जटाजूट तो नहीं रखते थे, किंतु हमेशा उनका चेहरा सफ़ेद बालों से ही जगमग किए रहता। कपड़े बिल्कुल कम पहनते। कमर में एक लंगोटी-मात्र और सिर में कबीरपंथियों की-सी कनफटी टोपी। जब जाड़ा आता, एक काली कमली ऊपर से ओढ़े रहते। मस्तक पर हमेशा चमकता हुआ रामानंदी चंदन, जो नाक के एक छोर से ही, औरतों के टीके की तरह शुरू होता। गले में तुलसी की जड़ों की एक बेडौल माला बाँधे रहते।

ऊपर की तस्वीर से यह नहीं माना जाए कि बालगोबिन भगत साधु थे। नहीं, बिल्कुल गृहस्थ! उनकी गृहिणी की तो मुझे याद नहीं, उनके बेटे और पतोहू को तो मैंने देखा था। थोड़ी खेतीबारी भी थी, एक अच्छा साफ़-सुथरा मकान भी था।

किंतु, खेतीबारी करते, परिवार रखते भी, बालगोबिन भगत साधु थे—साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरनेवाले। कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दो-टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से ख़ामख़ाह झगड़ा मोल लेते। किसी की चीज नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता! कभी वह दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते! वह गृहस्थ; लेकिन उनकी सब चीज 'साहब' की थी। जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते। जो उनके घर से चार कोस दूर पर था। एक कबीरपंथी मठ से मतलब! वह दरबार में 'भेंट' रूप में रख लिया जाता और 'प्रसाद' रूप में जो उन्हें मिलता, उसे घर लाते और उसी से गुजर चलाते!

इन सबके ऊपर मैं तो मुग्ध था उनके मधुर गान पर-जो सदा-सर्वदा ही सुनने को मिलते। कबीर के वे सीधे-सादे पद, जो उनके कंठ से निकलकर सजीव हो उठते।

आषाढ़ की रिमझिम है। समूचा गाँव खेतों में उतर पड़ा है। कहीं हल चल रहे हैं; कहीं रोपनी हो रही है। धान के पानी-भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं। औरतें कलेवा लेकर मेंड़ पर बैठी हैं। आसमान बादल से घिरा; धूप का नाम नहीं। ठंडी पुरवाई चल रही। ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर-तरंग झंकार-सी कर उठी। यह क्या है-यह कौन है। यह

पूछना न पड़ेगा। बालगोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े, अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनकी अँगुली एक-एक धान के पौधे को, पंक्तिबद्ध खेत में बिठा रही हैं उनका कद एक-एक शब्द को संगीत के ज़ीने पर चढ़ाकर कुछ को ऊपर स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कानों की ओर। बच्चे खेलते हुए झूम उठते हैं; मेंड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते हैं, वे गुनगुनाने लगती है। हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते हैं; रोपनी करनेवालों की अँगुलियाँ एक अजीब क्रम से चलने लगती हैं! बालगोबिन भगत का यह संगीत है या जादू!

भादो की वह अँधेरी अधरतिया। अभी, थोड़ी ही देर पहले मुसलाधार वर्षा ख़त्म हुई है। बादलों की गरज, बिजली की तड़प में आपने कुछ नहीं सुना हो, किंतु अब झिल्ली को झंकार या दादुरों की टर्र-टर्र बालगोबिन भगत के संगीत को अपने कोलाहल में डुबो नहीं सकती। उनकी खँजड़ी डिमक-डिमक बज रही है और वे गा रहे हैं-''गोदी में पियवा, चमक उठे सखिया चिहुँक उठ ना।'' हाँ पिया तो गोद में ही है, किंतु वह समझती है वह अकेली है चमक उठती है, चिहुँक उठती है। उसी भरे-बादलों वाले भादो की आधी रात में उनका यह गाना अँधेरे में अकस्मात् कौंध उठने वाली बिजली की तरह किसे न चौंका देता? अरे, अब सारा संसार निस्तब्धता में सोया है, बालगोबिन भगत का संगीत जाग रहा है, जगा रहा है। तेरी गठरी में लगा चोर, मुसाफ़िर जाग जरा।

कातिक आया नहीं कि बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ शुरू हुई, जो फागुन तक चला करतीं। इन दिनों वह सबेरे ही उठते। न जाने किस वक्त जगकर वह नदी-स्नान को जाते-गाँव से दो मील दूर! वहाँ से नहा-धोकर लौटते और गाँव के बाहर ही, पोखरे के ऊँचे भिंडे पर, अपनी खँजड़ी लेकर जा बैठते और अपने गाने टेरने लगते। मैं शुरू से ही देर तक सोनेवाला हूँ, किंतु एक दिन, माघ की उस दाँत किटकिटानेवाली भोर में भी, उनका संगीत मुझे पोखरे पर ले गया था। अभी आसमान के तारों के दीपक बुझे नहीं थे। हाँ, पूरब में लोही लग गई थी जिसकी लालिमा को शुक्र तारा और बढ़ा रहा था। खेत, बगीचा, घर-सब पर कुहासा छा रहा था। सारा वातावरण अजीब रहस्य से आवृत मालूम पड़ता था। उस रहस्यमय वातावरण में एक कुश की चटाई पर पूरब मुँह, काली कमली ओढ़े, बालगोबिन भगत अपनी खँजड़ी लिए बैठे थे। उनके मुँह से शब्दों का ताँता लगा था, उनकी अँगुलियाँ खँजड़ी पर लगातार चल रही थी। गाते-गाते इतने मस्त हो जाते, इतने सुरूर में आते, उत्तेजित हो उठते कि मालूम होता, अब खड़े हो जाएँगे। कमली तो बार-बार सिर से नीचे सरक जाती। मैं जाड़े से कँपकँपा रहा था, किंतु तारे की छाँव में भी उनके मस्तक के श्रमबिंदु, जब-तब चमक ही पड़ते।

गर्मियों में उनकी 'संझा' उमसभरी शाम को भी शीतल कर देती थी। अपने घर के आँगन में वे आसन जमा बैठते और गाँव के उनके कुछ प्रेमी भी जुट जाते। खँजड़ियों और करतालों की भरमार हो जाती। एक पद बालगोबिन भगत कह जाते, उनकी प्रेमी-मंडली उसे

दुहराती, तिहराती। धीरे-धीरे स्वर ऊँचा होने लगता-एक निश्चित ताल, एक निश्चित गति से। उस ताल-स्वर के चढ़ाव के साथ श्रोताओं के मन भी ऊपर उठने लगते। धीरे-धीरे मन तन पर हावी हो जाता। होते-होते, एक क्षण ऐसा आता कि बीच में खँजड़ी लिए बालगोबिन भगत नाच रहे हैं और उनके साथ ही सबके तन और मन नृत्यशील हो उठे हैं। सारा आँगन नृत्य और संगीत से ओत-प्रोत है।

बालगोबिन भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनका बेटा मरा। इकलौटा बेटा था वह। कुछ सुस्त और बोदा-सा था, किंतु इसी कारण बालगोबिन भगत उसे और भी मानते। उनकी समझ में ऐसे आदमियों पर ही ज़्यादा नज़र रखनी चाहिए या प्यार करना चाहिए, क्योंकि ये निगरानी और मुहब्बत के ज़्यादा हक़दार होते हैं। बड़ी साध से उसकी शादी कराई थी, पतोहू बड़ी ही सुभग और सुशील मिली थी। घर की पूरी प्रबंधिका बनकर भगत को बहुत कुछ दुनियादारी से निवृत्त कर दिया था उसने। उनका बेटा बीमार है, इसकी खबर रखने की लोगों को कहाँ फुरसत। किंतु मौत तो अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है। हमने सुना, बालगोबिन भगत का बेटा मर गया। कुतूहलवश उनके घर गया। देखकर दंग रह गया। बेटे को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर एक सफेद कपड़े से ढाँक रखा है। वह कुछ फूल तो हमेशा ही रोपते रहते, उन फूलों में से कुछ तोड़कर उस पर बिखरा रखे हैं; फूल और तुलसीदल भी। सिरहाने एक चिराग़ जला रखा है। और, उसके सामने ज़मीन पर ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे हैं। वही पुराना स्वर, वही पुरानी तल्लीनता। घर में पतोहू रो रही है जिसे गाँव की स्त्रियाँ चुप कराने की कोशिश कर रही हैं। किंतु, बालगोबिन भगत गाए जा रहे हैं। हाँ, गाते-गाते कभी-कभी पतोहू के नज़दीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहिणी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात? मैं कभी-कभी सोचता, यह पागल तो नहीं हो गए। किंतु नहीं, वह जो कुछ कह रहे थे उसमें उनका विश्वास बोल रहा था-वह चरम विश्वास जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है।

बेटे के क्रिया-कर्म में तूल नहीं किया; पतोहू से ही आग दिलाई उसकी। किंतु ज्योंही श्राद्ध की अवधि पूरी हो गई, पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया, यह आदेश देते हुए कि इसकी दूसरी शादी कर देना। इधर पतोहू रो-रोकर कहती-मैं चली जाऊँगी तो बुढ़ापे में कौन आपके लिए भोजन बनाएगा, बीमार पड़े, तो कौन एक चुल्लु पानी भी देगा? मैं पैर पड़ती हूँ, मुझे अपने चरणों से अलग नहीं कीजिए। लेकिन भगत का निर्णय अटल था। तू जा, नहीं तो मैं ही इस घर को छोड़कर चल दूँगा-यह थी उनकी आख़िरी दलील और इस दलील के आगे बेचारी की क्या चलती?

बालगोबिन भगत की मौत उन्हीं के अनुरूप हुई। वह हर वर्ष गंगा-स्नान करने जाते। स्नान पर उतनी आस्था नहीं रखते, जितना संत-समागम और लोक-दर्शन पर। पैदल ही जाते।

करीब तीस कोस पर गंगा थी। साधु को संबल लेने का क्या हक? और, गृहस्थ किसी से भिक्षा क्यों माँगे? अत: घर से खाकर चलते, तो फिर घर पर ही लौटकर खाते। रास्ते भर खँजड़ी बजाते, गाते जहाँ प्यास लगती, पानी पी लेते। चार-पाँच दिन आने-जाने में लगते; किंतु इस लंबे उपवास में भी वही मस्ती। अब बुढ़ापा आ गया था, किंतु टेक वही जवानीवाली। इस बार लौटे तो तबीयत कुछ सुस्त थी। खाने-पीने के बाद भी तबीयत नहीं सुधरी, थोड़ा बुख़ार आने लगा। किंतु नेम-व्रत तो छोड़नेवाले नहीं थे। वही दोनों जून गीत, स्नानध्यान, खेतीबारी देखना। दिन-दिन छीजने लगे। लोगों ने नहाने-धोने से मना किया, आराम करने को कहा। किंतु, हँसकर टाल देते रहे। उस दिन भी संध्या में गीत गाए, किंतु मालूम होता जैसा धागा टूट गया हो, माला का एक-एक दाना बिखरा हुआ। भोर में लोगों ने गीत नहीं सुना, जाकर देखा तो बालगोबिन भगत नहीं रहे सिर्फ़ उनका पंजर पड़ा है।

–रामवृक्ष बेनीपुरी

शब्दार्थ

कमली	–	कंबल
कलेवा	–	सुबह का जलपान, यात्रा करते समय साथ रखा गया भोजन
पुरवाई	–	पूरब की ओर से बहने वाली हवा
अधरतिया	–	आधी रात
खँजड़ी	–	डफली के ढंग का परंतु आकार में उससे छोटा एक वाद्ययंत्र
निस्तब्धता	–	सन्नाटा, सुनसान
लोही	–	प्रात:काल की लालिमा
आवृत	–	ढका हुआ
कुश	–	एक प्रकार की नुकीली घास
बोदा	–	कम बुद्धिवाला
संबल	–	सहारा
ज़ीने	–	सीढ़ी
पंजर	–	मृत शरीर, लाश
सुभग	–	सुन्दर

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. बालगोबिन भगत गृहस्थ थे। फिर भी उन्हें साधु क्यों कहा जाता था ?
2. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त की ?
3. पुत्रवधू द्वारा पुत्र की मुखाग्नि दिलवाना–भगत के व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है ?

4. निम्न अनुच्छेद के आधार पर आगे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

बेटे के क्रिया-कर्म में तूल नहीं किया; पतोहू से ही आग दिलाई उसकी। किंतु ज्योंही श्राद्ध की अवधि पूरी हो गई, पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया, यह आदेश देते हुए कि इसकी दूसरी शादी कर देना। इधर पतोहू रो-रोकर कहती-मैं चली जाऊँगी तो बुढ़ापे में कौन आपके लिए भोजन बनाएगा, बीमार पड़े, तो कौन एक चुल्लु पानी भी देगा? मैं पैर पड़ती हूँ, मुझे अपने चरणों से अलग नहीं कीजिए। लेकिन भगत का निर्णय अटल था। तू जा, नहीं तो मैं ही इस घर को छोड़कर चल दूँगा-यह थी उनकी आख़िरी दलील और इस दलील के आगे बेचारी की क्या चलती?

(क) बालगोबिन भगत ने पतोहू से बेटे को आग क्यों दिलाई?
(ख) पतोहू बालगोबिन भगत को छोड़ कर जाना क्यों नहीं चाहती थी?
(ग) पतोहू के रोने पर भी भगत का निर्णय क्यों नहीं बदला?
(घ) बालगोबिन भगत ने आखिरी दलील क्या दी?
(ङ) 'चुल्लु भर पानी' का अर्थ बताइए।

पाठ से आगे

1. ''धर्म का मर्म आचरण में है, अनुष्ठान में नहीं।'' स्पष्ट कीजिए।
2. बालगोबिन भगत कबीर को 'साहब' मानते थे। इसके क्या-क्या कारण हो सकते हैं?
3. बालगोबिन्द भगत ने अपने पुत्र की मृत्यु पर भी शोक प्रकट नहीं किया। उनके इस व्यवहार पर अपनी तर्कपूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त कीजिए।
4. अपने गाँव-जवार में उपस्थित किसी साधु का रेखाचित्र अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।
5. ''अब सारा संसार निस्तब्धता में सोया है, बालगोबिन भगत का संगीत जाग रहा है, जगा रहा है।'' व्याख्या कीजिए।
6. रूढ़िवादिता से हमें किस प्रकार निपटना चाहिए? किसी एक रूढ़िवादी परम्परा का उल्लेख करते हुए बताइए कि आप उससे किस प्रकार निपटेंगे?

इन्हें भी जानिए

1. योजक चिह्न –

क. **माता-पिता, लड़का-लड़की, भाई-बहन** जिन पदों के दोनों खंड प्रधान हो, वहाँ योजक चिह्न लगाया जाता है।

ख. **ऊपर-नीचे, छोटा-बड़ा, पाप-पुण्य,** दो विपरीतार्थक शब्दों के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है।

ग. **उल्टा-पुल्टा, अनाप-शनाप, रोटी-वोटी** जब दो शब्दों में से एक सार्थक और दूसरा निरर्थक हो तो वहाँ योजक चिह्न का प्रयोग होता है।

2. उद्धरण चिह्न का प्रयोग :

जहाँ किसी पुस्तक से कोई वाक्य ज्यों-का-त्यों उद्धृत किया जाय वहाँ दुहरे उद्धरण चिह्न (“ ”) एवं जहाँ कोई विशेष शब्द एवं पुस्तक, समाचार पत्र, लेखक का उपनाम, शीर्षक इत्यादि उद्धृत किया जाय वहाँ इकहरे उद्धरण चिह्न (‘ ’) का प्रयोग होता है। जैसे –

“जीवन विश्व की संपत्ति है।” – जयशंकर प्रसाद

‘कामायनी’ की कथा संक्षेप में लिखिए।

‘निराला’ पागल नहीं थे।

‘हिन्दुस्तान’ एक हिन्दी दैनिक पत्र है।

3. रेखाचित्र – जब किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, घटना, दृश्य आदि का इस प्रकार वर्णन किया जाय कि पाठक के मन पर उसका हू-ब-हू चित्र बन जाये तो उसे रेखाचित्र कहते हैं। यथा ‘बालगोबिन भगत’ एवं ‘सोना’।

व्याकरण

1. इस पाठ में प्रयुक्त वैसे शब्दों का चयन कीजिए जो योजक चिह्न से जुड़े हों एवं उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

2. इस पाठ में आए क्रियाविशेषण छाँट कर लिखिए।

गतिविधि

1. किसी ख़ास प्रयोजन / ख़ास मौसम पर गाए जाने वाले गीत को ढूँढ़िए एवं कक्षा में सुनाइए।
2. इस पाठ में आषाढ़, भादो, कातिक, फागुन एवं माघ विक्रम संवत् कैलेंडर के मासों के नाम है। शेष बचे मासों के नाम क्रम से लिखिए।

5 हुंडरू का जलप्रपात

सामान्यतः यात्रा वृतांतों में पारंपरिक रूप से महत्त्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक स्थानों का वर्णन किया जाता है। 'हुंडरू का जलप्रपात' आदिवासी संस्कृति की विशिष्टता को उभारने वाला यात्रा वृतांत है। इस दृष्टि से पाठ उल्लेखनीय है। पहाड़, नदी, जंगल की सुंदरता के साथ ही, उस इलाके में आसानी से उपलब्ध अबरक और कोयला खदानों का भी वर्णन है। यानी प्रकृति के साथ ही, मनुष्य की जिजीविषा और श्रम की महत्ता का भी संयोजन है। पाठ में बहुलवादी संस्कृति (सामासिक संस्कृति) के प्रति विश्वास प्रकट किया गया है। झरने की सुंदरता और प्राकृतिक दृश्यों की विशिष्टता के उद्‌घाटन से पाठ रोचक बन गया है।

''छोटानागपुर स्वर्ग का एक टुकड़ा है।''

ज़मीन में हरियाली, आकाश में नीलिमा। पग-पग पर पहाड़ों को देखकर धरती भी ऊबड़-खाबड़ और ऊँची हो गई है। तीव्र धारा और गँदले पानी के साथ नदियाँ बलखाती बह रही हैं जिन्होंने मैदानों की छाती चीरी है और पर्वतों का अन्तर फोड़ा है। झाड़ी-झुरमुटों, पेड़-पौधों और लता-गुल्मों के साथ जंगल अपनी जगह पर आबाद है जिन्होंने जंगली जानवरों को शरण दिया है। बेहतरीन सड़कें जिनके बनाने में ठीकेदारों को कम तरद्‌दुद और विभाग को कम व्यय पड़ा है, साँप की तरह भागी जा रही हैं और उन्हीं के साथ कुछ सवारी पर, कुछ पैदल मुसाफिर भी द्रुतगति से चले जा रहे हैं।

धरती पर आदिवासियों का नृत्य हो रहा है और आसमान में बादल आँख-मिचौनी खेल रहे हैं। जन-जन के कंठ से मादक गीतों की सृष्टि हो रही है जिनसे पहाड़ और मैदान गूँज रहे हैं। जंगली जानवरों की आवाज के साथ जंगल का कोना-कोना बोल रहा है। विचित्र-विचित्र पक्षियों की चहकन से पेड़ों की शाखा-शाखा गुलज़ार है।

सुन्दर जलवायु, मनहर वातावरण। हवा धीरे-धीरे डोलती है तो अपने साथ फूलों की सुरभि बिखेरती चलती है। बादल धीरे-धीरे बरसते हैं तो उनसे स्वस्थ शरीर और सुन्दर स्वास्थ्य का वरदान मिलता है। नदियाँ कलकल-छलछल स्वर में बहती हैं तो किनारे पर के रहनेवाले को अमृत बाँटती जाती हैं। झरने सतत झर-झरकर आँखों को तरी तथा नमी, कल्पना को सुन्दर ख़ुराक, चित्त को स्वच्छता और पवित्रता प्रदान करते हैं।

खानों में कोयला और अबरक, जंगल में तरह-तरह की लकड़ी, फूल-फुनगियों पर नाचती तितलियाँ, फल-भार से झुके जा रहे पेड़, शोभा-संपन्न अवर्णनीय घाटियाँ, सुषमा की दर्शनीय नदियाँ, हरीतिमावाले मनमोहक मैदान, मन पर जादू-जैसा असर करनेवाले पर्वत, मस्त निवासी इन सबके साथ, यह छोटानागपुर है।

एक ओर पृथ्वी अपने कोष को उगल रही है, तो वह कोयला बनकर लोगों के घरों में सोना ला रहा है। एक ओर पृथ्वी अपनी चमक-दमक का प्रदर्शन कर रही है तो वह

अबरक बनकर दुनिया का शृंगार कर रही है। अपने निरंतर संघर्ष से नदियाँ पत्थरों को ख़राद-ख़राद एक नवीन आकार में प्रस्तुत कर रही हैं, तो उसे लोग श्वेत शालिग्राम कहकर पूजते हैं। पत्थरों से करुणा की धारा झर रही है जिसे लोग झरना कहकर विस्मित भाव से देखते हैं।



इस छोटानागपुर में कई दर्शनीय झरने हैं, पर उनमें हुंडरू का झरना निराला है। मैं जब भी राँची गया, हुंडरू देखने ज़रूर जाता हूँ। यह झरना है जिसने मेरे मन-प्राण पर जादू किया है; यह झरना है जिसकी स्मृति भूलती नहीं; यह झरना है जिसके बारे में लिखते हुए मैं अघाता नहीं।

राँची से पुरुलियावाली सड़क पर 14 मील जाने के बाद एक सड़क मिलती है जिससे हुंडरू पहुँचते हैं। पुरुलिया रोड से उसकी दूरी 13 मील है। यों राँची से हुंडरू 27 मील दूर है।

महात्मा गाँधी ने कहा है कि साध्य की पवित्रता एवं महत्ता तभी है जब उसका साधन भी महान हो। महान मंज़िल पर पहुँचने के लिए मार्ग भी महान ही चाहिए। जैसा हुंडरू का झरना, वैसा उसका मार्ग।

राँची से चलनेवाले मुसाफिर को झरना पहुँचने तक ऐसे-ऐसे सुन्दर मैदान मिलते हैं कि वहाँ थोड़ी देर ठहरकर टहलने की इच्छा होती है। ऐसे जंगल दिखलाई पड़ते हैं जिनकी विभीषिका से शायद बाघ को भी डर लगता हो और बीच-बीच में पहाड़ी उस पर झाड़ी। सब दर्शनीय, सब वर्णनीय! चूँकि महीना अगस्त का था, इसलिए धान की क्यारी की भी न्यारी हरियाली थी। बलखाती सड़क जिसपर चलने में आनंद आए। पथरीली ज़मीन एवं पत्थर की छाती चीरकर बहनेवाली पतली नदी जिसके देखने में आनंद आए। पेड़ों पर चहकती चिड़ियाँ जिनकी चहक सुनने में आनंद आए। सब मिलकर आनंद को कई गुणा बढ़ा रहे थे। हवा यों डोल रही थी, जैसे सलाह लेकर डोल रही हो। छोटानागपुर के निवासी सादगी के अवतार और ग़रीबी की मूर्ति, जिनकी रहन-सहन में शत-प्रतिशत कला बसती है, मार्ग में यों खड़े थे, जैसे मेरा स्वागत कर रहे हों। मकई के पौधे कहीं-कहीं अगल-बगल में यों लहरा रहे थे-जैसे यहाँ वालों की किस्मत लहरा रही हो।

इस प्रकार मार्ग-दर्शन का आनंद लेते हुए हम हुंडरू के पास पहुँचे। एक बार मन ही मन मैंने झरने को प्रणाम किया।

पहाड़ पर पानी की यह अजीब लीला है जिसका मुकाबला न रामलीला करे, न रासलीला। पानी का इस प्रकार उछलना-कूदना, धूम मचाना और उसकी यह आवाज़ जैसे, दस-पाँच हाथी एक बार चिंघाड़ रहे हों, जैसे- दस-पाँच ट्रेन के इंजन एक साथ आवाज़ कर रहे हों,जैसे- एक साथ कई हवाई जहाज़ चक्कर काट रहे हों या जैसे- कई सहस्र नाग एक साथ फन फैलाकर फुँफकार कर रहे हों। पहुँचने के साथ यात्री के कानों में ऐसी ही आवाज़ पड़ती है।

और अब झरना देखने लगा। वातावरण की पवित्रता ऐसी कि मालूम होता है, मानो हम देवलोक के समीप पहुँच गए।

है क्या यह ! युग-युग से पानी का आघात है-पत्थर की बर्दाश्त है और यों एक प्रकार से यह पत्थर की क्षमता का प्रदर्शन है। पर एक पत्थर ऐसा भी है जिसकी छाती को चीरकर पानी निकलता है। यों एक प्रकार से यह जल की क्षमता का प्रदर्शन है जिसके सामने पत्थर भी मात है। हाँ, पत्थर मात है-करुणा के सामने, प्रेम के सामने जिसके अपार बल के स्वरूप पत्थर की छाती से धारा फूटती है, पत्थर की आँख से आँसू निकलते हैं और पत्थर का कलेजा पिघल जाता है।

पहाड़ पर नदी का यह खेल है। यह नदी है स्वर्णरेखा-जिसके उद्‌गमस्थान से 50 मील आगे आकर हुंडरू का यह झरना है। स्वर्णरेखा नदी राँची, धनबाद, सिंहभूम एवं बालासोर जिलों से होकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

नदी जहाँ पहाड़ को पार करने की चेष्टा में पहाड़ पर चढ़ती है, वहाँ पानी की कई धाराएँ हो जाती हैं और जब सबकी सब धाराएँ एक होकर पहाड़ से नीचे गिरती हैं, एक विचित्र दृश्य दिखलाई देता है यही झरना है जिसकी ऊँचाई 243 फुट है। उजला पानी ऐसा प्रतीत होता है कि पानी के चक्कर और भँवर में पिसकर पत्थर का सफेद चूर्ण गिर रहा है। कभी ऐसा भी मालूम होता है कि रूई धुनने वाला अपनी धुनकी पर रूई धुनकर ऊँचे बैठा हुआ गल्ले को नीचे गिरा रहा है। बचपन में हवा की मिठाई लेकर फेरीवाला आता था तो उसका रंग लाल होता था। प्रतीत होता है, वैसी ही; लेकिन उजले रंग की हवा की मिठाई लेकर पर्वत आज स्वयं फेरी देने निकला है। और कहीं-कहीं बीच में चट्टान पर जब प्रबल धारा गिरती है, तो संघर्ष से इंद्रधनुष जैसा रंग उत्पन्न होता है। जान पड़ता है कि सतरंगा पानी हवा में उड़कर विलीन हो रहा है या हवा में उड़ता इंद्रधनुष फरफरा रहा है।

चारों ओर जंगल और पहाड़ के बीच में प्रकृति की यह लीलास्थली है। झरना के एक ओर का जंगल राँची में है, एक ओर का जंगल हजारीबाग में और बीच में झरना बह रहा है, मानो उसका यह संदेश हो कि वह सबके लिए है, सबका कल्याण उसका उद्देश्य है। वह न राँची का है, न हजारीबाग का, बल्कि सबका है।

बड़े झरने की बगल में एक इंच मोटी एक धारा ऊपर से नीचे धीरे-धीरे पत्थरों पर से उतर रही है-जैसे महादेवजी पर कोई भक्त दूध चढ़ा रहा हो। नीचे जहाँ घनघोर धारा गिरती है, वहाँ पानी करीब 20 फुट ऊपर उछलता है। लगता है, पत्थर को चीरकर आनेवाले पानी का स्वागत करने और उसको कंठहार पहनाने के लिए नीचे से पानी ऊपर दौड़ता है।

मेरे मित्र कहते हैं कि शिवजी की बारात शायद इस राह से गुजरी थी। उसका स्वागत करने को पर्वत ने इस गुलाबपाश का प्रबन्ध किया था। वही गुलाबपाश शाश्वत होकर अभी भी झरझर कर रहा है।

स्वयं झरने से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत मालूम होता है झरने के आगे की घाटी का दृश्य। पहाड़ों के बीच एक पतली-सी नदी बहती जाती है, जैसे थर्मामीटर में एक पतला पारा हो। आगे भी एक पहाड़ मालूम होता है। ज्ञात होता है, पहाड़ नदी को ललकार रहा है कि यहाँ से तुम किसी प्रकार पार होकर मेरे आगे जा सको तो जानूँ। यहाँ पर नदी यों दिखाई देती है जैसे, नदी के इर्द-गिर्द पत्थरों का अंबार लगाकर उस पर झाड़ी उगाई गई हो। प्रकृति या परमात्मा ने अपने हाथ से यह सब किया होगा अन्यथा मनुष्य जाति में इतनी सामर्थ्य कहाँ? सैकड़ों वर्षों में भी मानव के प्रयत्नों से शोभा के इस विशाल वैभव की सृष्टि कठिन है।

पहाड़ के ऊपर से एक पतली-सी पगडंडी नीचे गई है और उसके सहारे हम भी कई बार नीचे गए हैं। नीचे जाकर हम अनिमेष कुछ देर तक इस शोभा से अपनी आँखों की प्यास बुझाते रहे हैं।

यह शोभा, यह छटा और यह दृश्य यह इतना बड़ा प्रपात जहाँ 243 फुट से पानी नीचे गिरता है! बीच-बीच में चट्टानों की वजह से हुंडरू की शोभा बिखर जाती है। पानी कुछ पीलापन लिए हुए है और यों सरसराता-हरहराता गिरता है कि कुछ भयंकर मालूम पड़ता है। जोन्हे में यहाँ पानी गिरता है, बिल्कुल सफेद है और यह भयंकरता भी उसमें नहीं है। वह माधुर्य और कोमलता से ओत-प्रोत जान पड़ता है। यहाँ का पानी निरंतर संघर्ष के साथ चट्टान पर गिरता हुआ, मानो आग की सृष्टि करता है जिसका धुआँ बराबर ऊपर उड़ता रहता है।

हुंडरू का पानी कहीं साँप की तरह चक्कर काटता है, कहीं हरिण की तरह छलाँग भरता है और कहीं बाघ की तरह गरजता हुआ नीचे गिरता है। सारा पानी एक जगह सिमटकर जहाँ नीचे गिरता है, उस जगह इसका रूप बहुत विशाल और भयंकर हो गया है। उस जगह हाथी भी जाए तो धारा के साथ कहाँ चला जाए, इसका पता मिलना मुश्किल है। इसके बाद धीरे-धीरे मंथर गति से इसका पानी नदी के रूप में जिसको देखने के लिए दिन-रात दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहता है।

यहाँ डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की ओर से एक बँगला बनवा दिया गया है लेकिन खाने-पीने के सामान का यहाँ भी अभाव है। हुंडरू-प्रपात की भीड़ और चीजों का अभाव देखकर ख़्याल

आया कि यहाँ के लोग सचमुच अव्यावहारिक है। अगर किसी दूसरी जगह में ऐसा झरना होता, तो वहाँ के लोग इसके पास दुकान बगैरह सजाकर अपने लिए आय और दूसरों के लिए सुविधा की व्यवस्था कर देते।

धन्य हुंडरू! किस युग से किस महाकवि की वाणी, किस संगीत की स्वर-लहरी और किस प्रेमी की रुदन-ध्वनि से पिघलकर यह पाषाण बह रहा है, यह कह सकना असम्भव है। पत्थर का अंतस्थल जैसे पिघलकर बह रहा है, वैसे यदि मनुष्यों का अंतर द्रवित होकर बहने लगता तो संसार से कलह, कपट, स्वार्थ और छीना-झपटी का अंत हो जाता।

यहाँ दो तरह के पत्थर देखने में आए। एक वह पत्थर है जिसका अंतर फोड़कर विशाल झरना झर रहा है और एक वह भी पत्थर है जिस पर न जाने किस युग से पानी की यह धारा गिर रही है, पर वह जरा भी विचलित नहीं होता। ज्यों का त्यों खड़ा रहता है। घिसता भी नहीं, धँसता भी नहीं, खिसकता भी नहीं।

243 फुट का यह प्रपात निराला है। सुन्दरता यहाँ साकार हो गई है और वर्णन-शक्ति को यहाँ और भावों की कमी हो गई है। विचित्र शोभा है, जो कभी पुरानी नहीं पड़ती और धन्य प्रपात है, जो सदा एक-सा बह रहा है। अविरल और अविचल दोनों का उदाहरण यहाँ एक बार में ही उपस्थित है।

दानी दान करता है तो गुमान करता है; पर युग-युग से न जाने कितना पानी यह पहाड़ दान कर चुका, पर इसको कोई अभिमान नहीं है।

अंधे आवाज सुन लें तो प्रवाह का अंदाज लगा लें और बहरे प्रवाह देख लें तो आवाज का अंदाज लगा लें। समुद्र गंभीरता के लिए प्रसिद्ध है, तो यह हुंडरू अपनी चपलता के चलते मशहूर है।

किंवदंती यह है कि इस हुंडरू से 7 मील पर कुछ लोगों ने एक प्रपात देखा है जो इससे कई गुना बड़ा है; पर वहाँ जाने का रास्ता इतना बीहड़, घनघोर और भयंकर है कि जंगल के उस भाग में पहुँच सकना दुशवार है। अगर बात सही है, तो जंगल विभाग को उसका ठीक पता लगाकर वहाँ तक मार्ग का निर्माण कर देना चाहिए, जिससे वह प्रपात भी जनता के सामने आ सके।

जो भी हो, हुंडरू दर्शनीय है। इसकी याद भूलने की नहीं। कितने दिन गुजर गए, लेकिन पानी आँखों के सामने उसी प्रकार उछल-कूद मचा रहा है।

कामता प्रसाद सिंह 'काम'

शब्दार्थ

नीलिमा – नीलापन, श्यामलता
तरद्दुद – कठिनाई, परेशानी
द्रुतगति – तेज चाल

गुलज़ार	–	प्रफुल्लित, खिला हुआ
बाग़	–	बगीचा
अवर्णनीय	–	जिसका वर्णन नहीं हो सके
दर्शनीय	–	देखने लायक
विस्मित	–	आश्चर्यचकित
साध्य	–	लक्ष्य
विभीषिका	–	संकट, त्रासदी, भय
उद्गमस्थान	–	वह स्थान जहाँ से नदियाँ निकलती है, मूल-स्रोत, उत्पत्ति
विलीन	–	लुप्त हो जाना

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. ''जैसे हुंडरू का झरना वैसे उसका मार्ग''। इस कथन की व्याख्या कीजिए।
2. हुंडरू का झरना कैसे बना है ?
3. ''स्वयं झरने से भी ज़्यादा खूबसूरत मालूम होता है, झरने से आगे का दृश्य'' उस दृश्य की सुंदरता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
4. प्रस्तुत पाठ के आधार पर समझाइए कि किसी यात्रा-वृतांत को रोचक बनाने के लिए किन-किन बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए?
5. यहाँ पर एक दृश्य का वर्णन दो तरह से किया गया है:

(क) हुंडरू का पानी कहीं साँप की तरह चक्कर काटता है, कहीं हरिण की तरह छलाँग भरता है और कहीं बाघ की तरह गरजता हुआ नीचे गिरता है।

(ख) हुंडरू का पानी चक्कर काटकर, छलाँग भरता हुआ नीचे गिरता है।

इनमें से कौन-सा वर्णन आपको अच्छा लगता है और क्यों?

पाठ से आगे

1. अपने किसी गाँव, शहर की यात्राएँ की होगी उसमें से किसी एक यात्रा का वर्णन कीजिए ?
2. अपने राज्य के किसी एक जलप्रपात का वर्णन कीजिए ?
5. आपके द्वारा की गई यात्रा के दौरान आपको किसी न किसी प्राकृतिक दृश्य ने अवश्य आकर्षित किया होगा । उस दृश्य का वर्णन कीजिए ?

गतिविधि

1. बिहार के दर्शनीय स्थलों की सूची बनाइए । प्राकृतिक सम्पदा तथा कृषि के ध्यान में रखते हुए बिहार एवं झारखंड का तुलनात्मक वर्णन कीजिए।
2. आपने-अपने गाँव और उसके आस-पास ईख, अरहर, सरसों के लहलहाते फूलों पर मंडराते हुए भौंरों को अवश्य देखा होगा। साथ ही आम की मंजरियों पर मकरन्द को चूसते हुए मधुमक्खियों के झुंड एवं आम के पल्लवों के बीच छिपी हुई कोयल की कूक भी आपने अवश्य सुनी होगी। इस प्रकार के दृश्य को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

6 बिहारी के दोहे

रीतिकाल के प्रतिष्ठित शृंगारिक कवि बिहारी के दोहे गागर में सागर हैं। वैसे तो बिहारी प्रेम के कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं, पर उनके भक्ति और नीतिपरक दोहों को भी व्यापक लोकप्रियता मिली। इस पाठ में उनके द्वारा रचित तीनों तरह के दोहे शामिल हैं।

मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय।
जा तन की झांई परै स्यामु हरित दुति होय।।

जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु।।

बतरस-लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सोहँ करैं भौं हनु हँसै, दैन कहे नटि जाइ।।

जब-जब वै सुधि कीजियै, तब-तब सुधि जाँहि।
आँखिनु आँखि लगी रहैं, आँखें लागति नाँहि।।

नर की अरु नल नीर की गति एकैं करी जोय।
जेतो नीचौ हवै चलै तेतो ऊँचो होय।।

संगति सुमति न पावही परे कुमति के धन्ध।
राखौ मेलि कपूर में हींग न होत सुगंध।।

बड़े न हूजै गुनन बिनु, बिरद बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सो कनक, गहनो गढ़यो न जाय।।

दीरघ साँस न लेहु दुख, सुख साईं हि न भूल ।
दई दई क्यौं करतू है, दई दई सु कबूलि।।

बिहारी

शब्दार्थ

सरै	निकलना, बनना
काँचै	कच्चा
वृथा	व्यर्थ, बेकार
साँचै	सच्ची
राँचै	प्रसन्न
नर	मनुष्य
नीर	पानी, जल

जेतो		जितना
तेतो		उतना
धन्ध		रोज़गार, काम
कुमति		ख़राब बुद्धि
गुनन		गुण
बिनु		बिना, रहित
कनक		सोना, धतूरा
दीरघ साँस		लंबी साँस
साईं हि		स्वामी को
कबूलि		स्वीकार करना
बतरस लालच		बातचीत करने के आनंद के लोभ से
लाल	–	कृष्ण
लुकाई		छिपाकर
सौहँ		शपथ
नटि जाई		मुकर जाना
सुधि कीजियै		स्मरण किए जाते हैं
सुधि		चेतना
जाँहि		जाती रहती है
सुमति		अच्छी बुद्धि

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. **उन दोहों को लिखिए जिनमें निम्न बातें कही गईं हैं :**

   (क) बाह्याडंबर व्यर्थ है। (ख)नम्रता का पालन करने से ही मनुष्य श्रेष्ठ बनता है। (ग) बिना गुण के कोई बड़ा नहीं होता। (घ) सुख-दुख समान रूप से स्वीकारना चाहिए।

2. दुर्जन के साथ रहने से अच्छी बुद्धि नहीं मिल सकती। इसकी उपमा में कवि ने क्या कहा है?

3. **रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए :**

   (क) नर की अरु·····ऊँचै होई।।

   (ख) जपमाला, छापै, तिलक·····साँचै, राँचै रामु।।

   (ग) बड़े न हूजै·····गढ़्यो न जाय।।

   (घ) दीरघ साँस न लेहु दुख·····दई सु कबूलि।।

4. गोपियों ने कृष्ण की मुरली क्यों छुपाई?

पाठ से आगे

1. गुण नाम से ज्यादा बड़ा होता है। कैसे?
2. 'कनक' शब्द का प्रयोग किन-किन अर्थों में किया गया है।
3. हींग को कर्पूर के साथ रखने से सुगंधित क्यों नहीं होता है?

व्याकरण

1. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

भव, नर, बाधा, तन, नीर, कनक

2. निम्न शब्दों के आधुनिक / खड़ी बोली रूप लिखिए :

अरु, जेतौ, तेतौ, हरौ, वृथा, गुनन, बिनु ।

गतिविधि

1. रीतिकालीन अन्य कवि की रचनाओं को भी पढ़िए और वर्ग में सुनाइए ।
2. 'दई दई क्यौं करतू है, दई दई सु कबूलि'

   उपरोक्त पंक्ति में 'दई' शब्द बार-बार आया है जिसका अर्थ भिन्न-भिन्न है। दई=ईश्वर, दई=दिया। एक ही शब्द से जब दो प्रकार के अर्थ निकलते हैं तो वहाँ 'यमक' अलंकार होता है। इसी प्रकार के अन्य अलंकारों के बारे में शिक्षक/शिक्षिका से जानिए तथा उन पर चर्चा कीजिए।

7 ठेस

लोक मन के मर्मज्ञ कलाकार फणीश्वरनाथ रेणु की 'ठेस' कहानी में मिथिलांचल की लोकसंस्कृति का प्रभावी वर्णन है। यह कहानी कलाकार के मन की विशिष्टताओं का मार्मिक वर्णन करती है। श्रम के प्रति सम्मान की भावना, रिश्तों की गहराई और मनुष्यता की पक्षधरता को समझने में पाठ का योगदान महत्त्वपूर्ण है। आंचलिक कहानी की ख़ूबसूरती, घटना एवं संवेदना की दृष्टि से भी कहानी उल्लेखनीय है।

खेती-बारी के समय, गाँव के किसान सिरचन की गिनती नहीं करते । लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं । इसलिए खेत-खलिहान की मजदूरी के लिए कोई नहीं बुलाने जाता है सिरचन को । क्या होगा उसको बुलाकर ? दूसरे मजदूर खेत पहुँचकर एक-तिहाई काम कर चुकेंगे, तब कहीं सिरचन राय हाथ में खुरपी डुलाता हुआ दिखाई पड़ेगा। पगडंडी पर तौल-तौलकर पाँव रखता हुआ, धीरे-धीरे । मुफ़्त में मजदूरी देनी हो तो और बात है।

.....आज सिरचन को मुफ़्तखोर, कामचोर या चटोर कह ले कोई । एक समय था, जबकि उसकी मड़ैया के पास बड़े-बड़े बाबू लोगों की सवारियाँ बँधी रहती थीं । उसे लोग पूछते ही नहीं थे, उसकी ख़ुशामद भी करते थे । .....अरे, सिरचन भाई ! अब तो तुम्हारे ही हाथ में यह कारीगरी रह गई है सारे इलाके में । एक दिन का समय निकालकर चलो । कल बड़े भैया की चिट्ठी आई है शहर से। सिरचन से एक जोड़ा चिक बनवाकर भेज दो ।

मुझे याद है ..... मेरी माँ जब कभी सिरचन को बुलाने के लिए कहती, मैं पहले ही पूछ लेता भोग क्या-क्या लगेगा ?

माँ हँसकर कहती, जा-जा, बेचारा मेरे काम में पूजा-भोग की बात नहीं उठाता कभी।

ब्राह्मण टोली के पंचानन्द चौधरी के छोटे लड़के को एक बार मेरे सामने ही बेपानी कर दिया था सिरचन ने तुम्हारी भाभी नाखून से खाँटकर तरकारी परोसती है । और, इमली का रस डालकर कढ़ी तो हम कहार-कुम्हारों की घरवाली बनाती है । तुम्हारी भाभी ने कहाँ सीखा ?

इसलिए, सिरचन को बुलाने के पहले मैं माँ से पूछ लेता ..... ।

सिरचन को देखते ही माँ हुलसकर कहती-आओ सिरचन । आज नेनू मथ रही थी, तो तुम्हारी याद आई । घी की डाड़ी (खाखोरन) के साथ चूड़ा तुमको बहुत पसन्द है न..... । और बड़ी बेटी ने ससुराल से संवाद भेजा है, उसकी ननद रूठी हुई है, मोथी की शीतलपाटी के लिए ।

सिरचन अपनी पनियायी जीभ को सम्भालकर हँसता । घी की सोंधी सुगन्ध सूँघकर ही आ

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

रहा हूँ, भाभी । नहीं तो इस शादी-ब्याह के मौसम में दम मारने की भी छुट्टी कहाँ मिलती है।

सिरचन जाति का कारीगर है । एक-एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकर बड़े जतन से उसकी कुच्ची बनाता । फिर, कुच्चियों को रँगने से लेकर सुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्त। .....काम करते समय उसकी तन्मयता में जरा भी बाधा पड़ी कि गेहुँअन साँप की तरह फुंफकार उठता । फिर किसी दूसरे से करवा लीजिए काम । सिरचन मुँहजोर है, कामचोर नहीं ।

बिना मजदूरी के पेटभर भात पर काम करनेवाला कारीगर । दूध में कोई मिठाई न मिले, कोई बात नहीं किन्तु बात में जरा भी झाल वह नहीं बरदाश्त कर सकता ।.....

सिरचन को लोग चटोर भी समझते हैं.....तली-बघारी हुई तरकारी, दही की कढ़ी, मलाईवाला दूध, इन सबका प्रबंध पहले कर लो, तब सिरचन को बुलाओ; दुम हिलाता हुआ हाजिर हो जाएगा। खाने-पीने में चिकनाई की कमी हुई कि काम की सारी चिकनाई ख़त्म। अधूरा रखकर उठ खड़ा होगा । आज तो अब अधकपाली दर्द से माथा टनटना रहा है। थोड़ा-सा रह गया है, किसी दिन आकर पूरा कर दूँगा।.....'किसी दिन' माने कभी नहीं।

मोथी घास और पटेर की रंगीन शीतलपाटी, बाँस तीलियों की झिलमिलाती चिक, सतरंगे डोर के मोढ़े, भूसी-चुन्नी रखने के लिए मूँज की रस्सी के बड़े-बड़े जाले, हलवाहों के लिए ताल के सूखे पतों की छतरी-टोपी तथा इसी तरह के बहुत-से काम हैं, जिन्हें सिरचन के सिवा गाँव में और कोई नहीं जानता। यह दूसरी बात है कि अब गाँव में ऐसे कामों को बेकाम का काम समझते हैं लोग। बेकाम का काम, जिसकी मजदूरी में अनाज या पैसे देने की कोई जरूरत नहीं। पेट-भर खिला दो, काम पूरा होने पर एकाध पुराना-धुराना कपड़ा देकर विदा करो। वह कुछ भी नहीं बोलेगा।.....

कुछ भी नहीं बोलेगा, ऐसी बात नहीं। सिरचन को बुलानेवाले जानते हैं, सिरचन बात करने में भी कारीगर है।.....महाजन टोले के भज्जू महाजन की बेटी सिरचन की बात सुनकर तिलमिला उठी थी-ठहरो। मैं माँ से जाकर कहती हूँ। इतनी बड़ी बात !

बड़ी बात ही है बिटिया। बड़े लोगों की बात ही बड़ी होती है। नहीं तो दो-दो पटेर की पाटियों का काम सिर्फ खँसारी का सत्तू खिलाकर कोई करवाए भला? यह तुम्हारी माँ ही कर सकती है बबुनी। सिरचन ने मुस्कुराकर जवाब दिया था।

उस बार मेरी सबसे छोटी बहन की विदाई होने वाली थी। पहली बार ससुराल जा रही थी। मानू के दूल्हे ने पहले ही बड़ी भाभी को खत लिखकर चेतावनी दे दी है-मानू के साथ मिठाई की पतीली न आवे, कोई बात नहीं। तीन जोड़ी फैशनेबल चिक और पटेर की दो शीतलपाटियों के बिना आएगी मानू तो.....। भाभी ने हँसकर कहा-बैरंग वापस ! इसलिए, एक सप्ताह पहले से ही सिरचन को बुलाकर काम पर तैनात करवा दिया था माँ ने। देख

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

सिरचन, इस बार नई धोती दूँगी; असली मोहर छापवाली धोती। मन लगाकर ऐसा काम करो कि देखनेवाले देखकर देखते ही रह जाएँ।

पान-जैसी पतली छुरी से बाँस की तीलियाँ और कमानियों को चिकनाता हुआ सिरचन अपने काम में लग गया। रंगीन सुतलियों में झब्बे डालकर वह चिक बुनने बैठा। डेढ़ हाथ की बुनाई देखकर ही लोग समझ गए कि इस बार एकदम नए फैशन की चीज बन रही है, जो पहले कभी नहीं बनी।

मँझली भाभी से नहीं रहा गया । परदे की आड़ से बोली-पहले ऐसा जानती कि मोहर छापवाली धोती देने से ही अच्छी चीज बनती है तो भैया को खबर भेज देती।

काम में व्यस्त सिरचन के कानों में बात पड़ गई। बोला-मोहर छापवाली धोती के साथ रेशमी कुर्त्ता देने पर भी ऐसी चीज नहीं बनती बहुरिया ! मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है.....मानू दीदी का दूल्हा अफसर आदमी है । मँझली भाभी का मुँह लटक गया। मेरी चाची ने फुसफुसाकर कहा-किससे बात करती है बहू? मोहर छापवाली धोती नहीं, मुँगिया लड्डू। बेटी की विदाई के समय रोज मिठाई जो खाने को मिलेगी देखती है न !



दूसरे दिन चिक की पहली पाँती में सात तारे जगमगा उठे, सात रंग के । सतभैया तारा । सिरचन जब काम में मग्न रहता है तो उसकी जीभ जरा बाहर निकल आती है, ओठ पर। अपने काम में मग्न सिरचन को खाने-पीने की सुधि नहीं रहती। चिक में सुतली के फंदे डालकर उसने पास पड़े सूप पर निगाह डाली-चिउरा और गुड़ का एक सूखा ढेला। मैंने लक्ष्य किया, सिरचन की नाक के पास दो रेखाएँ उभर आईं। दौड़कर माँ के पास गया-माँ, आज सिरचन को कलेवा किसने दिया है, सिर्फ चिउरा और गुड़?

माँ रसोईघर के अन्दर पकवान आदि बनाने में व्यस्त थी। बोली-मैं अकेले कहाँ-कहाँ क्या-क्या देखूँ।.....अरी मँझली, सिरचन को बुँदिया क्यों नहीं देती?

-बुँदिया मैं नहीं खाता, काकी! सिरचन के मुँह में चिउरा भरा हुआ था। गुड़ का ढेला सूप में एक किनारे पड़ा रहा, अछूता।

माँ की बोली सुनते ही मँझली भाभी की भौंहें तन गईं। मुट्ठी-भर बुँदिया सूप में फेंककर चली गई।

सिरचन ने पानी पीकर कहा-मँझली बहूरानी अपने मैके से आई हुई मिठाई भी इसी तरह हाथ खोलकर बाँटती है क्या?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

बस, मँझली भाभी अपने कमरे में बैठकर रोने लगी। चाची ने माँ के पास जाकर कहा–छोटी जाति के आदमी का मुँह भी छोटा होता है। मुँह लगाने से सिर पर चढ़ेगा ही। किसी की नैहर-ससुराल की बात क्यों करेगा वह ?

मँझली भाभी माँ की दुलारी बहू है। माँ तमककर बाहर आई सिरचन तुम काम करने आए हो, अपना काम करो। बहुओं से बतकुट्टी करने की क्या जरूरत? जिस चीज की जरूरत हो, मुझसे कहो।

सिरचन का मुँह लाल हो गया। उसने कोई जवाब नहीं दिया। बाँस में टँगे हुए अधूरे चिक में फंदे डालने लगा।

मानू पान सजाकर बाहर बैठकखाने में भेज रही थी। चुपके से एक पान का बीड़ा सिरचन को देती हुई बोली, इधर-उधर देखकर-सिरचन दादा, काम-काज का घर। पाँच तरह के लोग पाँच किस्म की बात करेंगे। तुम किसी की बात पर कान मत दो।

सिरचन ने मुस्कुराकर पान का बीड़ा मुँह में ले लिया। चाची अपने कमरे से निकल रही थी। सिरचन को पान खाते देखकर अवाक् हो गई। सिरचन ने चाची को अपने ओर अचरज से घूरते देखकर कहा–छोटी चाची, ज़रा अपनी डिबिया का गमकौआ ज़र्दा तो खिलाना। बहुत दिन हुए।

चाची कई कारणों से जली-भुनी रहती थी, सिरचन से। गुस्सा उतारने का ऐसा मौका फिर नहीं मिल सकता। झनकती हुई बोली–मसखरी करता है? तुम्हारी बढ़ी हुई जीभ में आग लगे। घर में भी पान और गमकौआ ज़र्दा खाते हो ?.....चटोर कहीं के। मेरा कलेजा धड़क उठा.....।

बस सिरचन की उँगलियों में सुतली के फंदे पड़ गए मानो, कुछ देर तक वह चुपचाप बैठा पान को मुँह में घुलाता रहा। फिर अचानक उठकर पिछवाड़े थूक आया। अपनी छुरी, हँसिया वगैरह समेट-सम्हालकर झोले में रखा। टँगी हुई अधूरी चिक पर एक निगाह डाली और हनहनाता हुआ आँगन से बाहर निकल गया।

चाची बड़बड़ाई-अरे बाप रे बाप ! इतनी तेजी ! कोई मुफ़्त में तो काम नहीं करता। आठ रुपये में मोहर छापवाली धोती आती है।.....इस मुँहझौंसे के न मुँह में लगाम है, न आँख में शील। पैसा खर्च करने पर सैकड़ों चिकें मिलेंगी। बाँतर टोली की औरतें सिर पर गट्ठर लेकर गली-गली मारी फिरती हैं।

मानू नहीं बोली। चुपचाप अधूरी चिक को देखती रही।.....सातों तारे मन्द पड़ गए!
माँ बोली-जाने दे बेटी। जी छोटा मत कर, मानू। मेले से खरीदकर भेज दूँगी।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

मानू को याद आई, विवाह में सिरचन के हाथ की शीतलपाटी दी थी माँ ने। ससुरालवालों ने न जाने कितनी बार खोलकर दिखाया था पटना और कलकत्ता के मेहमानों को। वह उठकर बड़ी भाभी के कमरे में चली गई।

मैं सिरचन को मनाने गया। देखा, एक फटी हुई शीतलपाटी पर लेटकर वह कुछ सोच रहा है। मुझे देखते ही बोला बबुआ जी! अब नहीं। कान पकड़ता हूँ, अब नहीं।.....मोहर छापवाली धोती लेकर क्या करूँगा? कौन पहनेगा?.....ससुरी खुद मरी, बेटे-बेटियों को भी ले गई अपने साथ। बबुआ जी, मेरे घरवाली जिंदा रहती तो मैं ऐसी दुर्दशा भोगता? यह शीतलपाटी उसी की बुनी हुई है। इस शीतलपाटी को छूकर कहता हूँ, अब यह काम नहीं करूँगा।.....गाँव-भर में तुम्हारी हवेली में मेरी क़दर होती थी।.....अब क्या? मैं चुपचाप लौट आया। समझ गया, कलाकार के दिल में ठेस लगी है। वह नहीं आ सकता।

बड़ी भाभी अधूरी चिक में रंगीन छीट का झालर लगाने लगी-यह भी बेजा नहीं दिखाई पड़ता । क्यों मानू!

मानू कुछ नहीं बोली।.....बेचारी! किन्तु, मैं चुप नहीं रह सका चाची और मँझली भाभी की नजर न लग जाय इसमें भी।

मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था।

स्टेशन पर सामान मिलाते समय देखा, मानू बड़े जतन से अधूरी चिक को मोड़कर लिए जा रही है अपने साथ। मन-ही-मन सिरचन पर गुस्सा आया। चाची के सुर में सुर मिलाकर कोसने को जी हुआ।.....कामचोर, चटोर!

गाड़ी आई। सामान चढ़ाकर मैं दरवाजा बंद कर रहा था कि प्लेटफार्म पर दौड़ते हुए सिरचन पर नजर पड़ी बबुआ जी। उसने दरवाजे के पास आकर पुकारा।

क्या है? मैंने खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कहा। सिरचन ने पीठ पर लदे हुए बोझ को उतारकर मेरी ओर देखा दौड़ता आया हूँ.....दरवाजा खोलिए! मानू दीदी कहाँ है? एक बार देखूँ!



मैंने दरवाजा खोल दिया।

सिरचन दादा! मानू इतना ही बोल सकी।

खिड़की के पास खड़े होकर सिरचन ने हकलाते हुए कहा-यह मेरी ओर से है। सब चीज है2 दीदी। शीतलपाटी, चिक और

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

एक जोड़ी आसनी कुश की। गाड़ी चल पड़ी।

मानू मोहर छापवाली धोती का दाम निकालकर देने लगी। सिरचन ने जीभ को दाँत से काटकर, दोनों हाथ जोड़ दिए।

मानू फूट-फूटकर रो रही थी। मैं बंडल को खोलकर देखने लगा-ऐसी कारीगरी, ऐसी बारीकी, रँगीन सुतलियों के फँदों का ऐसा काम, पहली बार देख रहा था।

फणीश्वर नाथ 'रेणु'

शब्दार्थ

पतीली – तांबे पीतल आदि का ऊँचे किनारे वाला गोलाकार बर्त्तन
पनियायी – ललचाई
झाल – कटुता, कड़वा
चिक – बाँस की तीलियों से बना झीना परदा
नैनू – मक्खन
शीतलपाटी – चिकनी और पतली चटाई

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

(1) गाँव के किसान सिरचन को क्या समझते थे ?

(2) इस कहानी में आये हुए विभिन्न पात्रों के नाम लिखिए ?

(3) सिरचन को पान का बीड़ा किसने दिया था ?

(4) आपके विचार से सिरचन का महत्त्व कम क्यों हो गया?

(5) सिरचन चिक और शीतलपाटी स्टेशन पर ले जाकर मानू को देता है। इससे उसकी किस विशेषता का पता चलता है?

(6) निम्नलिखित गद्यांशों को कहानी के अनुसार क्रमबद्ध रूप में सजाइए

(क) उस बार मेरी सबसे छोटी बहन की विदाई होने वाली थी। पहली बार ससुराल जा रही थी। मानू के दुल्हे ने पहले ही बड़ी भाभी को खत लिखकर चेतवानी दे दी है-मानू के साथ मिठाई की पतीली न आवे, कोई बात नहीं। तीन जोड़ी फैशनेबुल चिक और पटेर की दो शीतलपाटियों के बिना आएगी मानू तो.

(ख) मुझे याद है.....मेरी माँ जब कभी सिरचन को बुलाने के लिए कहती, मैं पहले ही पूछ लेता भोग क्या-क्या लगेगा?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

(ग) मानू फूट-फूट कर रो रही थी। मैं बंडल को खोलकर देखने लगा ऐसी कारीगरी, ऐसी बारीकी, रंगीन सुतलियों के फँदों का ऐसा काम, पहली बार देख रहा था।

(7) निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही (✓) या गलत (✗) का निशान लगाइए

(क) सिरचन कामचोर था ।

(ख) सिरचन अपने काम में दक्ष था ।

(ग) सिरचन बात करने में भी कारीगर था ।

(घ) सिरचन वकील था ।

(8) कहानी के किन-किन प्रसंगों से ऐसा प्रतीत होता है कि सिरचन अपने काम को ज़्यादा तरज़ीह देता था उल्लेख कीजिए।

(9) इस कहानी में कौन सा पात्र आपको सबसे अच्छा लगा और क्यों ?

पाठ से आगे

1. आपकी दृष्टि में सिरचन द्वारा चिक एवं शीतलपाटी स्टेशन पर मानू को देना कहाँ तक उचित था ?
2. काम के बदले थोड़ा-सा अनाज या चंद रुपये देकर क्या किसी मजदूर के मजदूरी का मूल्य चुकाया जा सकता है? इस सम्बन्ध में अपना मत व्यक्त कीजिए ।
3. इस कहानी का अंत किए गए अंत से अलग और क्या हो सकता है ? सोच कर लिखिए ।

इन्हें भी जानिए

मुहावरें : ऐसा वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ का बोध कराए, मुहावरा कहलाता है। मुहावरे के प्रयोग से भाषा में सरलता, सरसता, चमत्कार और प्रवाह उत्पन्न होते हैं। जैसे आँख का तारा (बहुत प्यारा) । नमन अपने माता-पिता के आँखों का तारा है।

लोकोक्ति :

लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना होती है। उससे निकली बात बाद में लोगों की जुबान पर जब चल निकलती है तो 'लोकोक्ति' हो जाती है। जैसे एक पंथ दो काज (एक काम से दूसरा काम हो जाना)- पटना जाने से एक पंथ दो काज होंगे। कवि-सम्मेलन में कविता पाठ भी करेंगे और साथ ही जैविक उद्यान भी देखेंगे।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

आइए इसके साथ ही कुछ ऐसी बातों को भी जानें, जिससे मुहावरे और लोकोक्तियों की समानताओं और असमानताओं का पता भी चले ।

1. मुहावरों और लोकोक्तियों में पर्यायवाची शब्द नहीं रखे जा सकते। यही कारण है कि इनका अनुवाद संभव नहीं।
2. लोकोक्ति स्वतंत्र वाक्य होते हैं, जबकि मुहावरे वाक्यांश होते हैं।

व्याकरण

1. इन मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करते हुए अर्थ स्पष्ट कीजिए

(क) कान देना
(ख) दम मारना
(ग) मुँह में लगाम न होना
(घ) सिर चढ़ाना।

गतिविधि

1. स्टेशन पर, सिरचन का पहुँचना एवं वहाँ मानू को सामग्री देने के अंश को पढ़ने के बाद जो चित्र आपके मस्तिष्क में उभरते हो उसे चित्र बनाकर वर्ग कक्ष में प्रदर्शित कीजिए ।
2. स्थानीय स्तर पर शीतलपाटी, चिक, आसनी की तरह कोई अन्य वस्तु प्रचलित हो तो उसे बनाकर वर्गकक्ष में दर्शाइए ।
3. आपके आस-पास होनेवाली कारीगरी से उत्पन्न वस्तुओं की सूची तैयार कीजिए।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

8 बच्चे की दुआ

यह एक प्रार्थना गीत है इसमें दर्दमंद और वंचितों की हिफ़ाज़त का संकल्प है तथा खुद को बुराई से बचाकर नेक राह पर चलने की दुआ माँगी गयी है।

लब पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी
ज़िन्दगी शम्अ की सूरत हो ख़ुदाया मेरी

दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए

हो मेरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत

ज़िन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत या-रब
इल्म की शम्अ से हो मुझको मुहब्बत या-रब

हो मेरा काम ग़रीबों की हिमायत करना
दर्दमन्दों से ज़ईफों से मुहब्बत करना

मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो, उस राह पे चलाना मुझको



मो० इकबाल

शब्दार्थ

लब	–	होंठ
दुआ	–	प्रार्थना
ज़ीनत	–	शोभा
इल्म	–	शिक्षा
हिमायत	–	भलाई
मुहब्बत	–	प्यार, लगाव
चमन	–	फुलवारी
ज़ईफों	–	वृद्धों
नेक	–	अच्छा
या-रब	–	हे ईश्वर
राह	–	रास्ता

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. इस कविता में कवि किन-किन चीज़ों की चाह रख रहा है ?
2. कविता में संसार को बेहतर बनाने की कामना मुखर हुई है । उन कामनाओं को अपने शब्दों में लिखिए ।

पाठ से आगे

1. अल्लाह बुराई से बचाना मुझको तथा नेक राह में चलने की शक्ति प्रदान करना नज़्म की किन पंक्तियों में ऐसा भाव स्पष्ट किया गया है? नज़्म की उन पंक्तियों को लिखिए।
2. आपके घर में या पड़ोस में बुज़ुर्ग होंगे, आप उनकी देखभाल कैसे करना चाहेंगे ? उल्लेख कीजिए ।
3. अल्लाह और ईश्वर में कोई फ़र्क़ नहीं है। इस बात से आप कहाँ तक सहमत है ? स्पष्ट कीजिए ।
4. **व्याख्या कीजिए :**
   (क) ज़िन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत या-रब । इल्म की शम्अ से हो मुझको मुहब्बत या-रब
   (ख) हो मेरे दम से यूं ही मेरे वतन की ज़ीनत । जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
   (ग) मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको । नेक जो राह हो, उस राह पे चलाना मुझको

इन्हें भी जानिए

1. पाठ में अनेक शब्द दिए गए हैं, जिनमें नुक़्ते का प्रयोग है। उर्दू के विभिन्न वर्णों के नीचे विन्दु का प्रयोग होता है। इन्हें नुक़्ता कहते हैं। नुक़्ते का प्रयोग पाँच वर्णों में होता है-क, ख, ग, ज, फ। इनके चलते अर्थों में बदलाव आ जाता है। जैसे-

काज	–	काम	जरा	–	बुढ़ापा
काज़	–	बटन होल	ज़रा	–	थोड़ा
फन	–	साँप का फन	बाग	–	फुलवारी
फ़न	–	कला	बाग़	–	लगाम, रास
ख़ाना	–	किसी चीज को रखने की जगह			
खाना	–	भोजन			

पाठ से ऐसे शब्दों को चुनकर लिखिए जिसके नीचे नुक़्ता लगा है।

गतिविधि

इस कविता से मिलती-जुलती और भी कविताएँ या गीत आपने सुनी होंगी, उन्हें कक्षा में सुनाइए।

9 अशोक का शस्त्र-त्याग

वंशीधर श्रीवास्तव रचित एकांकी 'अशोक का शस्त्र–त्याग' अहिंसा के पक्ष में अपने कथानक का मार्मिक विकास करती है। शांति के पक्ष में सक्रिय होने की शिक्षा देती है। इस लिहाज़ से पाठ की उपादेयता उल्लेखनीय है। अभिनय, नाटकीय दृश्यों का संयोजन, प्रवाहमयता की दृष्टि से पाठ विशिष्ट है।

पहला दृश्य

(एक मैदान में मगध के सैनिकों के शिविर लगे हैं। बीच में मगध की पताका फ़हरा रही है। पताका के पास ही सम्राट अशोक का शिविर है। संध्या बीत चुकी है। आकाश में तारे चमकने लगे हैं। शिविरों में दीपक जल गए हैं। अपने शिविर में अशोक अकेले टहल रहे हैं। उनके मुख पर चिन्ता की छाया है। वे कुछ सोचते हुए आसन पर बैठ जाते हैं।)

अशोक (स्वत:) : आज चार साल से यह युद्ध हो रहा है और कलिंग आज भी जीता नहीं जा सका। दोनों ओर से लाखों आदमी मारे गए हैं, लाखों घायल हुए हैं, पर हम आज भी असफल हैं। क्या होगा इसका परिणाम?

द्वारपाल : (सिर झुकाकर) राजन् ! संवाददाता आना चाहता है।

अशोक : आने दो।

संवाददाता : (प्रवेश कर) महाराज अशोक की जय हो। शुभ संवाद है। गुप्तचर समाचार लाया है कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए हैं।

अशोक : (प्रसन्नतापूर्वक) मारे गए हैं! तो मगध की विजय हुई है! कलिंग जीत लिया गया है!
(संवाददाता चुप रहता है।)

अशोक : बोलते क्यों नहीं तुम? चुप क्यों हो?

संवाददाता : (धीरे से) बोलूँ क्या महाराज! कलिंग-दुर्ग के फाटक आज भी बंद है। फिर किस मुँह कहूँ कि कलिंग जीत लिया गया ।

अशोक : (उत्तेजित होकर) कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं?

संवाददाता : हाँ महाराज! कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं।

अशोक : (उत्तेजित होकर खड़े होते हुए) बंद हैं तो खुल जाएँगे। जाओ, जाकर सेनापति से कह दो कि कल सेना का संचालन मैं स्वयं करूँगा। कल या तो कलिंग के दुर्ग के फाटक खुल जाएँगे या मगध की सेना ही वापस चली जाएगी। जाओ । (हाथ से जाने का संकेत करते हैं।)

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

दूसरा दृश्य

(दूसरे दिन प्रातःकाल का समय। शस्त्र-सज्जित अशोक घोड़े पर बैठे हैं। उनके पास उनका सेनापति है। सामने कलिंग-दुर्ग हैं। जिसके फाटक बंद हैं।)

अशोक : मेरे वीर सैनिको ! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम इस कलिंग को जीत नहीं पाए हैं। उसके किसी दुर्ग पर मगध की पताका नहीं फ़हरा रही है। कलिंग के महाराज मारे गए हैं। उनके सेनापति पहले ही कैद हो चुके हैं, फिर भी कलिंग आत्मसमर्पण नहीं कर रहा है। आओ, आज हम अपनी मातृभूमि की शपथ लेकर प्रण करें कि या तो हम कलिंग के दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे या सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जाएँगे।

सब सैनिक : (तलवार खींचकर) मगध की जय! सम्राट अशोक की जय!



(सहसा दुर्ग का फ़ाटक खुल जाता है। सब आश्चर्य से उधर देखने लगते हैं। उनकी तलवारें खिंची की खिंची रह जाती हैं। शस्त्र-सज्जित स्त्रियों की विशाल सेना फ़ाटक के बाहर निकलने लगती है। सेना के आगे पुरुष भेस में एक वीरांगना है, जो सैनिक भेष में साक्षात् चंडी-सी दिखाई देती है। यह कलिंग महाराज की कन्या पद्मा है। स्त्रियों की सेना अशोक की सेना से कुछ दूरी पर रुक जाती है। अशोक के सिपाही मंत्रमुग्ध-से देखते रह जाते हैं। अशोक भी चकित रह जाते हैं।)

पद्मा : (आगे बढ़कर अपनी सेना से) बहिनो! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर-पत्नी हो। मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना है। जिस सेना ने तुम्हारे पिता, भाई, पुत्र और पति की हत्या की है, वह तुम्हारे सामने खड़ी है। आज उसी से तुम्हें लोहा लेना है। तुम प्रण करो कि जननी जन्म-भूमि को पराधीन होते देखने के पहले तुम सदा के लिए अपनी आँखें बंद कर लोगी।

अशोक : (स्वतः) यह कौन है? क्या साक्षात् दुर्गा कलिंग की रक्षा करने के लिए युद्धभूमि में उतर आई है? शेष सैनिक भी सभी स्त्रियाँ हैं। क्या स्त्रियों से भी युद्ध करना होगा? क्या अशोक को स्त्रियों का भी वध करना होगा? ना! मैं स्त्री-वध नहीं करूँगा। मुझे विजय नहीं चाहिए। मैं यह

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

पाप नहीं करूँगा। मैं शस्त्र नहीं चलाऊँगा। (प्रकट) सैनिकों, स्त्रियों पर हाथ न उठाना। (आगे बढ़कर) तुम कौन हो देवी ?

पद्मा : मैं कलिंग महाराज की कन्या हूँ। मैं हत्यारे अशोक की सेना से लड़ने आई हूँ। जब तक मैं हूँ, मेरी ये वीरांगनाएँ हैं, कलिंग के भीतर कोई पैर नहीं रख सकता। कहाँ है अशोक, कहाँ है मेरे पिता का हत्यारा? मैं उससे द्वंद्व-युद्ध करना चाहती हूँ।

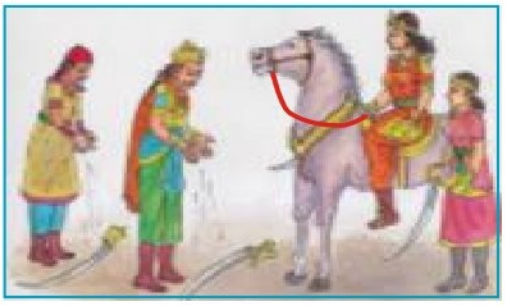
अशोक : अशोक तो मैं ही हूँ राजकुमारी! दोषी मैं ही हूँ। परंतु तुम स्त्री हो, तुम्हारी सेना भी स्त्रियों की हैं। मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा।

पद्मा : क्यों महाराज ?

अशोक : शास्त्र की आज्ञा है राजकुमारी।

पद्मा : और शास्त्र की आज्ञा है कि तुम निरपराधियों की हत्या करो? शास्त्र की आज्ञा है कि तुम अपनी विजय-लालसा पूरी करने के लिए लाखों माताओं की गोद सुनी कर दो? लाखों स्त्रियों की माँग का सिन्दूर पोंछ दो? फूँक दो उस शास्त्र को, जो तुम्हें यह सिखाता है। मैं तुमसे शास्त्र सीखने नहीं आई हूँ, शस्त्रों से युद्ध करने आई हूँ। तुम हत्यारे हो, मैं अपनी बलि चढ़ाकर तुम्हारे खून की प्यास बुझाने आई हूँ। अपने सिपाहियों से कहो कि तलवार उठाएँ, कलिंग की स्त्रियाँ तुमसे कुछ नहीं चाहतीं, केवल युद्ध चाहती हैं। (अशोक सिर झुका लेते हैं।)

पद्मा : क्यों, सिर क्यों झुका लिया महाराज? मैं युद्ध चाहती हूँ, केवल युद्ध। आज आपके भीषण युद्ध की पूर्णाहुति होगी।



अशोक : बहुत हो चुका राजकुमारी। मैं अब युद्ध नहीं करूँगा। कभी युद्ध नहीं करूँगा। (तलवार नीचे फेंक देते हैं।)

पद्मा : यह क्या महाराज!

अशोक : (अपने सैनिकों से) तुम भी अपनी तलवारें नीचे फेंक दो। आज से

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अशोक तुम्हें कभी किसी पर आक्रमण करने की आज्ञा नहीं देगा। फेंक दो अपनी तलवारें।
(सभी सैनिक अपनी-अपनी तलवारें फेंक देते हैं।)

पद्मा : (आगे बढ़कर) मैं भुलावे में नहीं आ सकती महाराज! मैं तुमसे युद्ध करूँगी। मुझे अपने पिता का बदला लेना है।

अशोक : (सिर झुकाकर) तो लीजिए बदला राजकुमारी। मैं अपराधी हूँ। जिस अशोक ने लाखों का सिर काटा है और जिस अशोक का सिर आज तक किसी के आगे नहीं झुका वह आपके आगे नत है। काट लीजिए इस सिर को । मैं हथियार नहीं उठाऊँगा । मेरी प्रतिज्ञा अटल है। (अशोक सिर झुकाकर खड़े हो जाते हैं।)

पद्मा : तो जाइए महाराज ! स्त्रियाँ भी निहत्थों पर वार नहीं करेंगी। आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए जीवित रहिए। (पद्मा अपनी स्त्रियों की सेना के साथ दुर्ग में चली जाती है।)

तीसरा दृश्य

(अशोक और उसके सभी सरदार पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके सामने एक बौद्ध भिक्षु बैठे हुए हैं।)

बौद्ध भिक्षु : (अशोक से) कहो, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि.....

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि.....

बौद्ध भिक्षु : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे.....

अशोक : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे.....

बौद्ध भिक्षु : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

अशोक : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

बौद्ध भिक्षु : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

अशोक : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

बौद्ध भिक्षु : प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहूँगा, अपनी प्रजा की भलाई करूँगा। सब प्राणियों को सुख और शांति पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा। सब धर्मों को समान दृष्टि से देखूँगा।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं शक्ति भर आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

बौद्ध भिक्षु : बोलो

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

सभी :

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

(पटाक्षेप)

वंशीधर श्रीवास्तव

शब्दार्थ

शस्त्र		हाथ में थामकर चलाया जाने वाला हथियार, जैसे-तलवार
त्याग	–	छोड़ना
संवाददाता	–	संवाद पहुँचानेवाला
गुप्तचर	–	छिपकर टोह लेनेवाला, जासूस
संचालन	–	नेतृत्व, सुचारु रूप से चलाना
आत्मसमर्पण	–	अपने आपको उपस्थित करना, स्वयं पकड़ में आना
पराधीन	–	दूसरों के अधीन
वीरांगना	–	वीर महिला, युद्ध में लड़ने वाली महिला
साक्षात्	–	सामने
प्रतिज्ञा	–	प्रण, निश्चय

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. पद्मा के ललकारने पर भी अशोक ने युद्ध करना स्वीकार क्यों नहीं किया ?
2. पद्मा को अशोक से बदला लेने का अच्छा अवसर था, तब भी उसने अशोक को जीवित क्यों छोड़ दिया?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

3.

बुद्धं शरणं गच्छामि ।
धर्मं शरणं गच्छामि ।
संघं शरणं गच्छामि ।

बॉक्स में दिए गए उपर्युक्त वाक्य संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं । इन्हें हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

पाठ से आगे

1. सैनिकों को उत्साहित करने के लिए राजकुमारी पद्मा और सम्राट अशोक द्वारा कही गयी बातों की तुलना कीजिए और बताइए कि अधिक प्रभावशाली कौन है ?
2. इस एकांकी को कहानी के रूप में लिखिए।
3. अगर आप पद्मा की जगह होते तो क्या करते? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।
4. कल्पना कर बताइए कि यदि अशोक और पद्मा का युद्ध हो गया होता तो क्या होता ?
5. 'अस्त्र' और 'शस्त्र' के अंतर को लिखिए ।
6. 'युद्ध से हानि' विषय पर अपने मित्र को एक पत्र लिखिए ।

व्याकरण

1. नीचे तीन वाक्य दिए गए हैं जो प्रश्नवाचक, पूर्णविराम और विस्मयादि स्थितियों को प्रकट करते हैं। पढ़िए और समझिए।

(क) मगध की विजय हुई है?

(ख) मगध की विजय हुई है।

(ग) मगध की विजय हुई है !

उक्त उदाहरण के आधार पर ऐसे ही तीन वाक्यों को लिखिए।

2. वाक्य में प्रयोग करके 'शस्त्र' और 'शास्त्र' में अन्तर स्थापित कीजिए।

गतिविधि

1. इस एकांकी के कुछ संवाद जोशीले आवाज़ में कहे गए हैं और कुछ नरम आवाज़ में। ऐसे दो-दो संवादों को लिखिए और अभिनीत कीजिए।
2. किसी उत्सव के मौके पर इस एकांकी का मंचन कीजिए।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

10 ईर्ष्या : तू न गई मेरे मन से

रामधारी सिंह 'दिनकर' के इस रोचक निबंध में जीवन के रोज़मर्रा के व्यवहारों पर टिप्पणी है और सही-संतुलित जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण विकसित करने की सीख है। जीवन-कौशल अध्ययन का एक उल्लेखनीय पहलू है। तनावों को कम करने में व्यक्ति की अपनी अंतरात्मा खास योगदान देती है। यह निबंध इस अंतर्निहित समझ को विकसित करता है। शीर्षक रोचक है और पहली नज़र में पढ़ने का आमंत्रण देता है। बिहार के यशस्वी साहित्यकार दिनकर के रचना संसार की विविधता को भी समझने में पाठ सहायक है।

मेरे घर के दाहिने एक वकील रहते हैं, जो खाने-पीने से अच्छे हैं, दोस्तों को भी ख़ूब खिलाते हैं और सभा-सोसाइटियों में भी काफी भाग लेते हैं। बाल-बच्चों से भरा-पूरा परिवार, नौकर भी सुख देने वाले और पत्नी भी अत्यंत मृदुभाषिणी। भला एक सुखी मनुष्य को क्या चाहिए ?



मगर, वे सुखी नहीं हैं। उनके भीतर कौन-सा दाह है, इसे मैं भली-भाँति जानता हूँ। दरअसल उनकी बगल में जो बीमा एजेंट हैं, उनके विभव की वृद्धि से वकील साहब का कलेजा जलता रहता है। वकील साहब को भगवान ने जो कुछ दे रखा है, वह उनके लिए काफी नहीं दीखता। वे इस चिंता में भुने जा रहे हैं कि काश! एजेंट की मोटर, उसकी मासिक आय और उसकी तड़क-भड़क भी मेरी हुई होती।

ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनंद नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद है; बल्कि उन वस्तुओं से दु:ख उठाता है, जो दूसरों के पास है। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है। और इस तुलना में पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है। एक उपवन को पाकर भगवान को धन्यवाद देते हुए उसका आनंद नहीं लेना और बराबर इस चिंता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला, एक ऐसा दोष है जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भी भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन-रात सोचते-सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है।

ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निंदा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही व्यक्ति बुरे किस्म का निंदक भी होता है। दूसरों की निंदा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जाएँगे और तब जो स्थान रिक्त होगा, उस पर अनायास मैं ही बिठा दिया जाऊँगा।

मगर, ऐसा न आज तक हुआ है और न होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो, अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निंदा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण अपने ही भीतर के सद्गुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निंदा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाए तथा अपने गुणों का विकास करे।

ईर्ष्या का काम जलाना है। मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत-से लोगों को जानते होंगे जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति हैं और जो बराबर इस फ़िक्र में ही रहते हैं कि कहाँ सुननेवाले मिले कि अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक-एक कांड इस ढंग से सुनाते हैं, मानो, विश्व-कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। मगर, जरा उनके अपने इतिहास को भी देखिए और समझने की कोशिश कीजिए कि जब से उन्होंने इस सुकर्म का आरंभ किया है, तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। यह भी कि अगर वे निंदा करने में समय और शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो आज उनका स्थान कहाँ होता ? चिंता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचंड चिंता ने पकड़ लिया है, उस बेचारे की जिंदगी ही खराब हो जाती है। किंतु ईर्ष्या शायद चिंता से भी बदतर चीज है, क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुंठित बना डालती है। मृत्यु, शायद, फिर भी श्रेष्ठ है बनिस्बत इसके कि हमें अपने गुणों को कुंठित बनाकर जीना पड़े। चिंता-दग्ध मनुष्य समाज की दया का पात्र है। किंतु ईर्ष्या से जला भुना आदमी ज़हर की एक चलती-फिरती गठरी के समान है जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है।

ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष ही नहीं है, प्रत्युत, इससे मनुष्य के आनंद में भी बाधा पड़ती है। जब भी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का उदय होता है, सामने का सूर्य उसे मद्धिम-सा दीखने लगता है, पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता और फूल तो ऐसे हो जाते हैं, मानो, वे देखने योग्य ही नहीं हों।

आप कहेंगे कि निंदा के बाण से अपने प्रतिद्वंद्वियों को बेधकर हँसने में एक आनंद है और यह आनंद ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है। मगर यह हँसी मनुष्य की नहीं, राक्षस की हँसी होती है और आनंद भी दैत्यों का आनंद होता है।

ईर्ष्या का संबंध प्रतिद्वंद्वियों से होता है, क्योंकि भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड़ सकती है, क्योंकि प्रतिद्वंद्वियों से भी मनुष्य का विकास होता है। किंतु, अगर आप संसार-व्यापी सुयश चाहते हैं तो आप, रसेल के मतानुसार, शायद, नेपोलियन से स्पर्धा करेंगे। मगर, याद रखिए कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्धा करता था और सीजर सिकंदर से तथा सिकंदर हरक्युलिस से, जिस हरक्युलिस के बारे में इतिहासकारों का यह मत है कि वह कभी पैदा ही नहीं हुआ।

ईर्ष्या का एक पक्ष सचमुच ही लाभदायक हो सकता है जिसके अधीन हर आदमी, हर जाति और हर दल अपने को अपने प्रतिद्वंद्वियों का समकक्ष बनाना चाहता है। किंतु यह तभी संभव है, जबकि ईर्ष्यालु व्यक्ति यह महसूस करता है कि कोई चीज़ है, जो उसके भीतर नहीं है; कोई वस्तु है, दूसरों के पास है किंतु वह यह नहीं समझ पाता है कि इस वस्तु को प्राप्त कैसे करना चाहिए। गुस्से में आकर वह अपने किसी पड़ोसी, मित्र या समकालीन व्यक्ति को अपने से श्रेष्ठ मानकर उससे जलने लगता है, जबकि वे लोग भी अपने-आपसे शायद, वैसे ही असंतुष्ट हों।

आपने यह भी देखा होगा कि शरीफ़ लोग अक्सर यह सोचते हुए अपना सिर खुजलाया करते हैं कि फलां आदमी मुझसे क्यों जलता है, मैंने तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ा; और अमुक व्यक्ति इस कदर मेरी निंदा में क्यों लगा हुआ है? सच तो यह है कि मैंने सबसे अधिक भलाई उसीकी की है।

ये सोचते हैं मैं तो पाक़-साफ हूँ, मुझमें किसी भी व्यक्ति के लिए दुर्भावना नहीं है; बल्कि, अपने दुश्मनों की भी मैं भलाई ही सोचा करता हूँ। फिर ये लोग मेरे पीछे क्यों पड़े हुए हैं? मुझमें कौन-सा वह ऐब है, जिसे दूर करके मैं इन दोस्तों को चुप कर सकता हूँ?

ईश्वरचंद्र विद्यासागर जब इस तजुरबे से होकर गुजरे तब उन्होंने एक सूत्र कहा, 'तुम्हारी निंदा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है।'

और नीत्से जब इस कूचे से होकर निकला, तब उसने ज़ोरों का एक ठहाका लगाया और कहा कि यार, ये तो बाज़ार की मक्खियाँ हैं जो अकारण हमारे चारों ओर भिनभिनाया करती हैं।

ये सामने प्रशंसा और पीछे-पीछे निंदा किया करती हैं। हम इनके दिमाग़ पर बैठे हुए हैं, ये मक्खियाँ हमें भूल नहीं सकतीं और चूँकि ये हमारे बारे में बहुत सोचा करती हैं, इसलिए ये हमसे डरती हैं और हम पर शंका भी करती हैं।

ये मक्खियाँ हमें सजा देती हैं हमारे गुणों के लिए। ऐब को तो ये माफ़ कर देंगी, क्योंकि बड़ों के ऐब को माफ़ करने में भी एक शान है, जिस शान का स्वाद लेने को ये मक्खियाँ तरस रही हैं।

जिनका चरित्र उन्नत है, जिनका हृदय निर्मल और विशाल है, वे कहते हैं, 'इन बेचारों की बातों से क्या चिढ़ना? ये तो खुद ही छोटे हैं।'

मगर, जिनका दिल छोटा और दृष्टि संकीर्ण है, वे मानते हैं कि जितनी भी बड़ी हस्तियाँ हैं, उनकी निंदा ही ठीक है। और जब हम इनके प्रति उदारता और भलमनसाहत का बर्ताव करते हैं, तब भी वे यही समझते हैं कि हम उनसे घृणा कर रहे हैं। और हम चाहे उनका जितना उपकार करें, बदले में हमें अपकार ही मिलेगा।

दरअसल, हम जो उनकी निंदा का जवाब नहीं देकर चुप्पी साधे रहते हैं, इसे भी वे हमारा अहंकार समझते हैं। खुशी तो उन्हें तभी हो सकती है, जब हम उनके धरातल पर उतरकर उनके छोटेपन के भागीदारी बन जाएँ।

सारे अनुभवों को निचोड़कर नीत्से ने एक दूसरा सूत्र कहा, 'आदमी में जो गुण महान समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं।'

तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है? नीत्से कहता है कि 'बाज़ार की मक्खियों को छोड़कर एकांत की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान है, उसकी रचना और निर्माण बाज़ार तथा सुयश से दूर रहकर किया जाता है। जो लोग नए मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं, वे बाजारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते हैं।' जहाँ बाज़ार की मक्खियाँ नहीं भिनकतीं, वह जगह एकांत है।

यह तो हुआ ईर्ष्यालु लोगों से बचने का उपाय। किंतु, ईर्ष्या से आदमी कैसे बच सकता है?

ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है। जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा जागेगी उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

ह्रास – गिरावट, कमी
ग्रामोफोन – (रेकार्ड प्लेयर) शब्द ध्वनियों को टेप करके पुनः सुनाने वाला यंत्र
ध्येय – लक्ष्य
सुकर्म – अच्छा काम
बदतर – ख़राब
बनिस्बत – बजाय, अलावा
प्रतिद्वंद्वी – विपक्षी, मुकाबला करने वाला
व्यापी – फैलाव
स्पर्धा – प्रतियोगिता
संकीर्ण – तंग, सिकुड़ा हुआ
उन्नत – ऊँचा, अच्छा, विकसित

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. वकील साहब सुखी क्यों नहीं हैं ?
2. ईर्ष्या को अनोखा वरदान क्यों कहा गया है ?
3. ईर्ष्या की बेटी किसे और क्यों कहा गया है ?
4. ईर्ष्यालु से बचने का क्या उपाय है ?
5. ईर्ष्या का लाभदायक पक्ष क्या हो सकता है ?

पाठ से आगे

1. नीचे दिए गए कथनों का अर्थ समझाइए

(क) जो लोग नए मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं, वे बाज़ारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते।

(ख) आदमी में जो गुण महान समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं।

(ग) चिंता चिता समान होती है।

2. अपने जीवन की किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब

(क) किसी को आपसे ईर्ष्या हुई हो।

(ख) आपको किसी से ईर्ष्या हुई हो।

3. अपने मन से ईर्ष्या का भाव निकालने के लिए क्या कर

व्याकरण

निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(1) मृदुभाषिणी –

(2) चिंता –

(3) सुकर्म –

(4) बाज़ार –

(5) जिज्ञासा –

इन्हें भी जानिए

वाक्य विचार की पूर्णता को प्रकट करनेवाले वैसे शब्द स जिसमें कर्त्ता और क्रिया दोनों होते हैं। जैसे मोहन

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के हैं

1. सरल या साधारण वाक्य
2. मिश्र वाक्य
3. संयुक्त वाक्य

सरल या साधारण वाक्य :

जिस वाक्य में एक क्रिया एवं एक कर्त्ता होता है, उसे ' कहते हैं। जैसे-वर्षा होती है।

मिश्र वाक्य :

जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य के अतिरिक्त दूसरा वाक्य कहते हैं। जैसे:-वह कौन-सा मनुष्य है, जिसने महात्मा गाँधं मैं खाना खा चुका तो वह आया।

संयुक्त वाक्य :

जिस वाक्य में साधारण या मिश्र वाक्य का मेल संयोजक संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे:-मैंने खाना खाया और भूख मिट गई पेट में दर्द होने लगा, और दर्द इतना बढ़ा कि तुरन्त डॉक्टर को

2. बॉक्स में दी गई जानकारी के आधार पर तीनों प्रकार के व पाठ से चुनकर लिखिए ।

गतिविधि

1. पाठ में आए महान विभूतियों के नामों की सूची बन बारे में जानिए ।

1

A. Warmer

Ask children t they have.

This is the way
We wash our face,
Wash our face,
Wash our face.
This is the way we



11 कबीर के पद

कबीर भक्तिकाल के अप्रतिम भक्त कवि थे। उन्होंने अपनी रचना के माध्यम से भक्ति के नाम पर व्याप्त बाह्य आडंबरों एवं व्यर्थ अनुष्ठानों पर करारा प्रहार किया है। पाठ में शामिल पदों में उनका यह रूप मुखर हो उठा है। पदों की महत्ता इस अर्थ में खासतौर पर उल्लेखनीय है कि उनका भाव बोध न सिर्फ तत्कालीन समय से जुड़ता है, बल्कि समकालीन समय में भी उनकी उपादेयता यथावत है।

पहले पद में स्थापित रूढ़ियों के समानान्तर सच के सीधे साक्षात्कार की प्रस्तावना है, अर्थात 'कागद की लेखी' की जगह 'आँखिन देखी' की प्रतिष्ठा, वहीं दूसरे पद में ईश्वर या अल्लाह को कहीं बाहर ढूंढ़ने के जगह उसका अपने भीतर ही साक्षात्कार की बात कही गयी है।

(1)

मेरा तेरा मनुआँ कैसे इक होई रे।
मैं कहता हौं आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी।
मैं कहता सुरझावनहारी, तू राख्यौ उरझाई रे।
मैं कहता तू जागत रहियो, तू रहता है सोई रे।
मैं कहता निर्मोही रहियो, तू जाता है मोही रे।
जुगन-जुगन समुझावत हारा, कही न मानत कोई रे।
सतगुरु धारा निर्मल बाहै, वामैं काया धोई रे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तब ही वैसा होई रे।

(2)

मोको कहाँ ढूंढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, न काबे कैलास में।
ना तो कौनों क्रिया करम में नाहिं जोग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतहि मिलिहौ, पलभर की तलास में।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब साँसों की साँस में।

कबीरदास

शब्दार्थ

मनुआँ	–	मन
आँखिन	–	आँख
कागद	–	कागज़
निर्मोही	–	अनुराग न रखने वाला
वामैं	–	उसमें
मोको	–	मुझको

देवल – मन्दिर

बैराग – विरक्ति

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए :

(क) मेरा तेरा मनुआँ····· ।

·····तू कहता कागद की लेखी ।

मैं कहता सुरझावनहारी····· ।

·····तू रहता है सोई रे।

(ख) ना तो कौनों क्रिया करम में····· ।

·····पलभर की तलास में।

2. इन पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए :

(क) मैं कहता निर्मोही रहियो, तू जाता है मोही रे।

(ख) मोको कहाँ ढूंढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।

3. 'मोको' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है?

पाठ से आगे

1. कबीर की रचनाएँ आज के समाज के लिए कितनी सार्थक/उपयोगी है? स्पष्ट कीजिए ।

2. सगुण भक्तिधारा : जिसमें ईश्वर के साकार रूप की अराधना की जाती है ।

   निर्गुण भक्तिधारा : जिसमें ईश्वर के निराकार (बिना आकार के) स्वरूप की अराधना की जाती है ।

   इस आधार पर कबीर को आप किस श्रेणी में रखेंगे ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए ।

3. सगुण भक्तिधारा एवं निर्गुण भक्तिधारा के दो-दो कवियों का नाम लिखिए ।

4. वैसे पंक्तियों को खोज कर लिखिए, जिसमें कबीर ने धार्मिक आडम्बरों पर कुठाराघात किया है ।

गतिविधि

1. अपने स्कूल या गाँव/शहर के पुस्तकालय में जाकर 'कबीर ग्रंथावली' या अन्य पुस्तकों से कबीर के बारे में विस्तृत जानकारी हासिलकर मित्रों तथा अपने शिक्षक से चर्चा कीजिए।
2. सगुण भक्ति एवं निर्गुण भक्ति की एक-एक कविता को वर्ग कक्ष में सुनाइए ।
3. कबीर के पदों से संबंधित अनेक कैसेट्स बाज़ार में उपलब्ध हैं। उन कैसटों को संग्रह कर सुनिए तथा उस पद को लय के साथ कक्षा में सुनाइए ।

12 विक्रमशिला

यह निबंध बौद्धकालीन शिक्षा केन्द्र विक्रमशिला विश्वविद्यालय के गौरवशाली अतीत से परिचय कराता है। इस अध्याय में प्राचीन ज्ञान परम्परा की अनेक विशिष्टताओं का उद्घाटन किया गया है।

NQDQPI



मैं विक्रमशिला हूँ। मुझे भारत की अस्मिता का अभेद्य कवच माना जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। मेरा अतीत आज के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय एवं ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से कहीं अधिक उन्नत और महत्त्वपूर्ण था। मेरे यहाँ आर्यभट और अतिश दीपंकर सरीखे विद्वान हुए जिनके योगदान को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है। खगोल विद्या के क्षेत्र में आर्यभट विश्व प्रसिद्ध हैं जबकि अतिश दीपंकर ने तिब्बत में बौद्ध-धर्म का प्रचार-प्रसार किया और लामा संप्रदाय की शुरुआत की।

आधुनिक भागलपुर जिला जो प्राचीन अंग महाजनपद नाम से लोकप्रिय है, के कहलगांव थाना क्षेत्र, पोस्ट पथरघट्टा के एक छोटे से गाँव अंतीचक में आठवीं शताब्दी के मध्य मेरा आविर्भाव पालवंश के सर्वाधिक प्रतापी राजा धर्मपाल के संरक्षण में हुआ। धीरे-धीरे मैं अपनी बौद्धिक शक्ति के ही बदौलत अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर छा गया।

अपने आचार्यों के विक्रमपूर्ण आचरण, उनकी अखंड शील सम्पन्नता के कारण ही मैं विक्रमशिला की संज्ञा से संबोधित हुआ। किंवदंति है कि विक्रम नामक यक्ष को दमित कर इस स्थान पर विहार बनाने के कारण मेरा नाम विक्रमशिला पड़ा।

मेरे प्रांगण में छह महाविद्यालय विद्यमान थे, जहाँ अलग-अलग 'द्वारपण्डित' नियुक्त किए गए थे। द्वारपण्डितों के समक्ष मौखिक परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवाले छात्र ही मेरे प्रांगण में

प्रवेश पा सकते थे। द्वारपण्डित आचार्य ज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे तंत्र, योग, न्याय, काव्य और व्याकरण में पारंगत थे। केन्द्रीय महाविद्यालय के द्वारपण्डितों को मेरे आधार स्तंभ की श्रेणी में रखा जा सकता है। उल्लेखनीय है कि हरिभद्र मेरे प्रथम आचार्य-कुलपति थे। नालंदा विश्वविद्यालय के आचार्य शांतिरक्षित के शिष्य होने के नाते कहीं-कहीं हरिभद्र को शांतिभद्र भी कहा गया है।

मेरे पास एक समृद्ध पुस्तकालय था। तंत्रविद्या एवं तर्कविद्या सहित प्रारंभिक दर्शन और बौद्ध दर्शन से संबंधित ग्रंथों का यहाँ विशाल संग्रह मौजूद था। यहाँ की पाण्डुलिपियों को तैयार करने के लिए आचार्य और शोधार्थी दोनों अधिकृत थे। राजा गोपाल द्वितीय के शासन के पन्द्रहवें वर्ष में प्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टशाहस्रिका-प्रज्ञापारमिता' की पाण्डुलिपि मेरे घर ही तैयार की गयी थी। यह ग्रंथ आज भी ब्रिटिश म्युजियम, लन्दन की धरोहरों में शामिल है।

दान, शील, धैर्य, वीर्य, ध्यान और प्रज्ञापारमिता के प्रमुख अंग थे, जिनमें पारंगत होना मेरे उद्देश्यों में शामिल था। उपाय कौशल्य, प्राणिधान, बल एवं ज्ञान को मिलाकर कुल 10 पारमिताओं में पारंगत होना अपने आप में साधारण बात नहीं थी । यह मनुष्य को पूर्ण महामानव बनाने की प्रक्रिया है, जो मेरी गरिमा की चरम परिणति है।

दसवीं-ग्यारहवीं सदी तक मैं पूर्वी एशिया का एक उत्कृष्ट शिक्षा-केन्द्र बन चुका था। सम्यक ज्ञान-दान परम्परा में मेरा कोई सानी नहीं था। मेरे प्रांगण-प्रवेश में प्राथमिकता वैसे विद्यार्थियों को ही दी जाती थी जो मेरे यहाँ पूरे सत्र में नियमित उच्च शिक्षा व शोधकार्यों के आकांक्षी होते थे। प्रत्येक नवागत विद्यार्थी को कुछ समय के लिए 'भिक्षु-वर्ग' में रहना पड़ता था। फिर आचार्य अपने शिष्य को पुत्रवत मान उसे बौद्ध सिद्धांतों से परिचित कराते थे, ताकि वे 'मेरे' उच्चादर्शों पर खरे उतर सकें। मेरा छात्र होना ही अपने आप में गौरव की बात हुआ करती थी। यहाँ के नामांकित छात्र देश-विदेश में मान-सम्मान के स्वत: ही हकदार हो जाते थे। राजदरबारों में यहाँ के आचार्यों और विद्यार्थियों को विशेष सम्मान मिला करता था।

तंत्र विद्या के अतिरिक्त व्याकरण, न्याय, सृष्टि-विज्ञान, शब्द-विद्या, शिल्प-विद्या, चिकित्सा-विद्या, सांख्य, वैशेषिक, अध्यात्मविद्या, विज्ञान, जादू एवं चमत्कार-विद्या मेरे पाठ्यक्रम के प्रमुख अंग थे। कक्षा की व्यवस्था और उसके समय निर्धारण के लिए अलग से आचार्य नियुक्त थे। अध्यापन का माध्यम संस्कृत भाषा थी।

वर्तमान में सरकार की सकारात्मक सोच एवं पुरातात्विक विभाग के अथक प्रयास से मैं वर्षों गुमनाम रहने के बाद एक बार फिर सुर्खियों में आ गया हूँ। पुरातात्विक खनन से मेरे प्राय: सभी इमारतों की प्राप्ति हो जाने की आशा प्रबल हो गयी है। यहाँ 50 फीट ऊँची एवं 73 फीट चौड़ी इमारत के रूप में प्रधान चैत्य प्राप्त हुए हैं। साढ़े चार फीट की भूमि स्पर्श मुद्रा में भगवान बुद्ध की प्रतिमा प्राप्त हुई है। पूर्वी और पश्चिमी भवन में पद्मासन पर बैठे अवलोकितेश्वर की कांस्य प्रतिमा प्राप्त हुई है। पद्मपाणि एवं मैत्रेय की प्रतिमा मिली है। कुछ क्षतिग्रस्त सीलें भी प्राप्त हुई हैं। एक सील का सत्यापन 'वीर वज्र' से किया गया है। खुदाई का काम अभी प्रारंभिक अवस्था में है। अनेक महत्त्वपूर्ण वस्तुओं के प्रकाश में आने की संभावनाएँ बढ़ती जा रही है। दस हज़ार छात्र, एक हज़ार अध्यापक जहाँ रह रहे हों, उनकी भव्यता एवं विशालता के संबंध में कहना ही क्या? वास्तव में कई दृष्टिकोण से मैं एक अद्भुत एवं अलौकिक विश्वविद्यालय था।

तेरहवीं सदी के आरंभ में तुर्कों के आक्रमण के कारण मेरा सर्वनाश हो गया। भ्रमवश किला समझे जाने के कारण ही मेरा यह हस्र हुआ। 'तबक़ात-ए-नासिरी' नामक ग्रंथ में मेरे विध्वंश का जीवंत वर्णन उपलब्ध है। धर्मस्वामी नामक एक तिब्बती लामा ने मेरे पतन का वर्णन अत्यन्त ही मार्मिक तरीके से किया है।

आप जब कभी भी शैक्षणिक परिभ्रमण का मन बनाएँ तो मेरे आँगन में जरूर पधारें ताकि मेरे सोए हुए अतीत, करवट ले रहे वर्तमान एवं बोए जा रहे भविष्य के अदृश्य बीज के बारे में और विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकें।

– पा०पु०वि०स०

शब्दार्थ

अस्मिता	–	इज्ज़त, प्रतिष्ठा
अभेद्य	–	जिसे भेदा न जा सके
कवच	–	शारीरिक सुरक्षा हेतु पहने जानी वाली चीज़
अतिशयोक्ति	–	बढ़ा-चढ़ाकर कही गयी बात
अतीत	–	बीता हुआ समय
महत्त्वपूर्ण	–	उपयोगी
सानिध्य	–	निकट
सरीखे	–	समान, की तरह
योगदान	–	देन
प्रसिद्ध	–	लोकप्रिय
विक्रमपूर्ण	–	साहसपूर्ण
शील	–	चरित्र
किंवदंति	–	कहा जाता है
विहार	–	भ्रमण करना
आविर्भाव	–	उदय, जन्म
प्रांगण	–	आँगन
समक्ष	–	सामने
समृद्ध	–	सम्पन्न
विशाल	–	बहुत बड़ा
पाण्डुलिपि	–	हाथ से लिखी हुई
म्युजियम	–	संग्रहालय
उत्कृष्ट	–	उत्तम

सानी	–	तुलना
आकांक्षी	–	अभिलाषी, इच्छुक
नवागत	–	नया आया हुआ
पुत्रवत	–	पुत्र की तरह
गुमनाम	–	छिपे रहना
सुर्खी	–	चर्चा
खनन	–	खुदाई
चैत्य	–	भवन
पारमिता	–	सीमा, हद

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. विक्रमशिला नामकरण के संदर्भ में प्रचलित जनश्रुति क्या है?
2. विक्रमशिला कहाँ अवस्थित है?
3. यहाँ के पाठ्यक्रम में क्या-क्या शामिल था?

पाठ से आगे

1. परिभ्रमण के दौरान आप इस स्थल का चयन करना क्यों पसंद करेंगे?
2. इस विश्वविद्यालय को आधुनिक बनाने के लिए आप क्या-क्या सुझाव देंगे?
3. तंत्र विद्या के बारे में आप क्या जानते हैं।?
4. **निम्नलिखित संस्थाओं को उनकी श्रेणी के अनुसार बढ़ते क्रम में सजाइए।**
   (क) विश्वविद्यालय (ख) प्रारम्भिक विद्यालय (ग) महाविद्यालय (घ) माध्यमिक विद्यालय (ङ) प्राथमिक विद्यालय

व्याकरण

संधि : दो वर्णों के मेल से होनेवाले परिवर्त्तन को संधि कहते हैं। जैसे – पुस्तक+आलय = पुस्तकालय। अ+आ = आ।

संधि के तीन भेद होते हैं–

1. स्वर संधि, 2. व्यंजन संधि, 3. विसर्ग संधि।

स्वर संधि : दो स्वर वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्त्तन को 'स्वर संधि' कहते हैं। जैसे – विद्या+अर्थी – विद्यार्थी, आ+अ = आ

व्यंजन संधि : व्यंजन वर्ण के साथ स्वर अथवा व्यंजन वर्ण के मेल से होने वाले परिवर्त्तन को 'व्यंजन संधि' कहते हैं। जैसे – दिक् + गज = दिग्गज

विसर्ग संधि : विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो परिवर्त्तन होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं। जैसे– मन:+रथ = मनोरथ

1. पूर्व के बॉक्स में दी गई जानकारी के आधार पर संधि विच्छेद कर संधि का नाम लिखिए :
अतिशयोक्ति, सर्वाधिक, परीक्षा, उल्लेखनीय, पुस्तकालय, शोधार्थी, विद्यार्थी, प्रत्येक, नवागत, उच्चादर्श, नामांकित, अवलोकितेश्वर

2. ऊपर बॉक्स में दी गई जानकारी के आधार पर निम्नलिखित शब्दों का समास बताइए:
अभेद्य, अखण्ड, पथरघट्टा, द्वारपंडित, कुलपति, शिक्षाकेंद्र, देश-विदेश, अलौकिक

3. संधि और समास में अंतर बताइए।

4. राजा का पुत्र–राजपुत्र
विद्या का आलय–विद्यालय
रसोई के लिए घर–रसोईघर

उपर्युक्त उदाहरणों में हमने देखा कि दो शब्दों के बीच एक विभक्ति का प्रयोग किया गया है। विभक्ति लोप के बाद दोनों शब्द मिलकर एक शब्द हो गए हैं। ऐसे ही संयुक्त शब्दों को समास कहते हैं।

3. निम्नलिखित शब्दों में से विभक्ति हटाकर एक नया शब्द बनाइए।

जनों के नायक.....
भूमि का सुधार.....
गृह में प्रवेश.....
शक्ति से हीन.....
देह से चोर.....
लोगों के नायक.....

गतिविधि

1. विक्रमशिला विश्वविद्यालय की भाँति प्राचीन काल में भारत में नालंदा, तक्षशिला आदि विश्वविद्यालय शिक्षा के केन्द्र थे, उसके सम्बन्ध में शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. सहपाठियों एवं अध्यापकों के साथ विक्रमशिला का परिभ्रमण कीजिए एवं वहाँ प्राप्त पुरातात्त्विक सामग्रियों की एक सूची तैयार कीजिए।

13 दीदी की डायरी

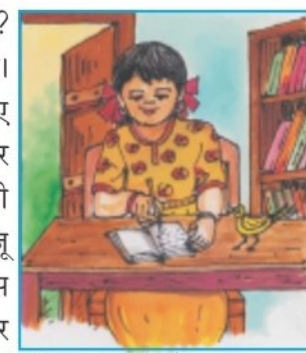
नये गद्य रूप 'डायरी' से परिचित कराता यह पाठ डायरी लेखन के साथ ही अप्रत्यक्ष रूप से मानवीय सरोकारों और जीवन के विविध अनुभवों का भी साक्षात्कार कराता है।

P2RZ63

गुलाब के फूल–सी नन्हीं संजू। है तो अभी छोटी पर है बड़ी सयानी। कक्षा आठ में पढ़ती है। स्वभाव से हँसमुख है। खूब हँसती हँसाती है। चुटकुले सुनाए तो हँसी के फव्वारे छूटने लग जाते हैं।

संजू को किताबें पढ़ने का शौक है। कहानी, कविता, कॉमिक्स आदि। यह शौक उसे माँ की देखा–देखी लगा है। संजू चाहे कक्षा में अच्छे नम्बर लाए या जन्म–दिन मनाए, उसे उपहार मिलता है पुस्तक का। फलत: उसके घर में छोटा–सा पुस्तकालय बन गया है। स्कूल में भी उसे चटपटी पुस्तक की तलाश रहती है।

अभी पिछले दिनों संजू ने गाँधी साहित्य पढ़ा। बापू के **'सत्य के प्रयोग'** उसे बहुत पसन्द आए। बापू ने इन प्रयोगों को अपनी डायरी में लिखा था। संजू ने सोचा वह भी डायरी लिखेगी। माँ ने भी उसका हौसला बढ़ाया। पिताजी को पता चला तो बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे एक सुन्दर डायरी ला दी।



अब संजू मुश्किल में पड़ गई। वह कैसे शुरू करे? तभी उसे याद आया, उसकी दीदी भी तो डायरी लिखती है। उसने दीदी को अपनी इच्छा बताई। दीदी ने हौसला बढ़ाते हुए कहा–यह तो कोई कठिन बात नहीं। बस, रात को मन लगाकर बैठ जाओ। दिनभर की सारी घटनाएँ याद करो और वैसी की वैसी लिख दो। बस इसे प्रतिदिन लिखते रहना जरूरी है। संजू ने हठ करते हुए कहा–''दीदी, अपनी डायरी दिखा दो ना। बस थोड़ा–सा पढ़कर लौटा दूँगी।'' दीदी पहले तो हिचकिचाई, फिर बात मान ली। संजू ने दीदी की डायरी के जो पृष्ठ पढ़े वे नीचे दिए जा रहे हैं।

1 जनवरी, 97

कॉलेज में कक्षा के सामने ठक–ठक होती रही। कारीगर पत्थर तराश रहे थे। एक छोटी–सी छेनी से वे पत्थर में फूल–पत्तियाँ उकेर रहे थे।

2 जनवरी, 97

आज सुबह शीला के घर गई। वह स्नानघर में थी। अकेली बैठे–बैठे क्या करती! पत्रिका का पुराना रंगीन पृष्ठ नजर आया। उसी को उलटने–पलटने लगी। इसमें एक चुटकुला बहुत मज़ेदार था। हँसते–हँसते लोट–पोट हो गई। अभी डायरी लिखते समय भी हँसी नहीं रुक रही है। फिर से पढ़ पाऊँ इसलिए लिख लेती हूँ इसे।

खरीददार–(मालिक से) इस भैंस की तो एक आँख खराब है, फिर इस भैंस के सात हजार रुपये क्यों माँग रहे हो?

मालिक–भैंस से दूध लेना है या कशीदाकारी करवानी है।

माँ को कल रात से मलेरिया है। मैं तो रात भर उनके पास बैठी रही। खाना भैया ने बनाया। आलू–मटर की सब्जी बनाई। गरम–गरम रोटियाँ सेक लीं। मैंने ज्यों ही पहला कौर मुँह में डाला तो फीका लगा। नमक तो था ही नहीं। माँ ने पूछा, सब्जी कैसी बनी ? मैंने कहा बहुत स्वादिष्ट है। इधर भैया का बुरा हाल। आँखें नीची। पर इससे क्या। नमक नहीं था तो कोई बात नहीं, बाद में डाल दिया। सोच रही थी–अगर भैया दो बार नमक डाल देते तो?

3 जनवरी, 97

पिकनिक का दिन रहा आज का। जहाँ हम गए वह स्थान बहुत सुन्दर था। हरे–हरे वृक्षों से घिरा हुआ, पानी से लबालब भरा एक सरोवर। शान्त वातावरण। पक्षियों की चहचहाहट। वहाँ पहुँचकर हम छोटी–छोटी टोलियों में बँट गए। मैं तो सईदा, नीलू, विमला और अंजू के साथ रही।

पहले तो वहाँ चारों ओर घूमते रहे। झूलों पर झूले। फिर सरोवर पर गए तो मछलियाँ देखते रहे। डुबती–उतराती, रंग–बिरंगी तथा छोटी–बड़ी मछलियाँ। तभी बहन जी ने बुला भेजा।

अब सभी मैदान में आ इकट्ठे हुए। नरम–नरम घास पर बैठ गए। गुनगुनी धूप थी। बारी–बारी से हमने गाना गाया। ढोलक बजी तो नाच–गान में रम गई सब। मंजु जो कक्षा में चुपचाप बैठी रहती थी, आज खूब नाची। मैंने भी जादू का खेल दिखाया। खेल में जिसने जो फल चाहा, उसे उसी फल की खुशबू सुँघा दी। जो मिठाई माँगी वही चखा दी। कितना आनंद आया, लिख न सकूँगी। मेरे जादू के करिश्मे को देख संजू तो मचल ही गई। बोली–''एक दो जादू तो मुझे भी सिखा दो, दीदी। मैं भी विज्ञान के ऐसे दूसरे खेल सीखूँगी। मन करता है पिकनिक के दिन बार–बार आएँ।

4 जनवरी, 97

आज रविवार था। कहीं आने–जाने की इच्छा तो थी नहीं। माँ ने चाट बनाई थी। जमकर नाश्ता किया। चाय की चुस्कियाँ लीं और फिर सुबह–सुबह ही बैठ गई। सोचा वह पुस्तक ही पढ़ डालूँ जो कल पुस्तकालय से लाई थी। नाम तो बड़ा अजीब था–तोतो–चान। एक जापानी लड़की की कहानी है। बड़ी मज़ेदार। जिस स्कूल में वह पढ़ती थी वह रेल के छह डिब्बों में चलता था। जो जहाँ चाहे बैठे। जो चाहे पढ़े। शिक्षक का कोई डर नहीं। पूरी आज़ादी। तोतो–चान एक मनमौजी लड़की जिसे अपनी शरारत के कारण कई स्कूल बदलने पड़े, वह यहाँ रेल के डिब्बेवाले स्कूल में जम गई। उसका जीवन बदल गया। मुझे यह पुस्तक बहुत अच्छी लगी। सोचती हूँ–क्या हमें भी पढ़ने की ऐसी आज़ादी मिल सकती है?

5 जनवरी, 97

आज का पूरा दिन उदासी में बीता। माँ ने मुझे बार-बार टोका। उदासीनता का कारण जानना चाहा। पर, मैं कुछ बोल न पाई। क्या बताऊँ, वह मेरी सहेली नीलू है न, कल से पढ़ने नहीं जाएगी। एक महीने बाद यह गाँव भी छूट जाएगा, उससे। उम्र तो मेरी जितनी ही है। पर, घरवाले उसके हाथ पीले कर के ही दम लेंगे। मुझे मिली तो गले लगकर रोने लगी। कहती थी-''बहन, पढ़ने का बेहद मन है। पर, क्या करूँ, कोई मेरी बात सुनता ही नहीं।''

नीलू कक्षा में अव्वल आती थी। खेलने-कूदने में भी किसी से कम न थी। एक ही प्रश्न रह-रहकर मेरे मन में उठ रहा है। क्या लड़कियों को पढ़ने का पूरा-पूरा अवसर नहीं मिलना चाहिए? दुनिया भर की लड़कियाँ आज क्या-क्या करतब दिखा रही हैं। हम हैं कि चौके-चूल्हे के चक्कर से किसी तरह उबर नहीं पाती। मुझे तो नीलू पर भी गुस्सा आता है। आखिर कब तक अपनी इच्छाओं का गला दबाती रहेगी। मैं तो यह स्थिति कदापि.....।

6 जनवरी, 97

स्कूल जाने के लिए समय पर घर से निकली। तपाक से छींक हुई। रिक्शेवाले ने छींका था। दादी माँ ने आवाज़ लगाई-''बिटिया, आज स्कूल न जाओ। सामने की छींक है।'' मेरा मन भी मैला हो गया था। एक पल सोचा-रिक्शा लौटा दूँ। तभी याद आया-आज तो हमारी कक्षा को अभिनय करना था जिसकी मैं प्रमुख पात्र थी। उससे तो मेरा अत्यन्त लगाव है। ''जो होगा सो हो जाएगा'' हिम्मत करके चल ही दी। अभिनय में मैंने भी भाग लिया।

हमारा अभिनय सभी ने सराहा। खूब तालियाँ बजाई। मैं तो व्यर्थ ही छींक से डर गई। उल्टे, मुझे पुरस्कार मिला। शाबाशी अलग। आगे से मैं शकुन-अपशकुनों के फेर में पड़ेवाली नहीं।

7 जनवरी, 97

आज कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। न पढ़ाई में मज़ा आया न खेल में। कोई डाँट-डपट भी नहीं हुई। कभी-कभी सोचती हूँ, सब लोग लड़कियों को ही क्यों डाँटते हैं?

– संकलित

शब्दार्थ

एकाग्रचित्त	–	एक ही विषय में ध्यान को लगाना, स्थिर चित्त
स्वादिष्ट	–	रुचिकर
ख़ुशबू	–	सुगन्ध
सयानी	–	चतुर स्त्री
करिश्मा	–	चमत्कार, करतब
शरारत	–	चुहलबाजी
तराशना	–	आकार देना
लबालब	–	पूरा भरा हुआ
करिश्मा	–	चमत्कार
उकेरना	–	नक़्क़ाशी करना
रम	–	रमणीक
तराशना	–	सजाना

प्रश्न–अभ्यास

पाठ से

1. संजू कैसी लड़की थी ? उसे किस चीज़ का शौक़ था ?
2. संजू को डायरी लिखने की प्रेरणा किससे मिली ?
3. 'सत्य के प्रयोग' पुस्तक के रचयिता कौन हैं ?

पाठ से आगे

1. ''व्यक्ति को प्रत्येक दिन डायरी लिखनी चाहिए।'' इस कथन से आप सहमत या असहमत हैं। तर्क दीजिए।
2. आज आपके विद्यालय में सांस्कृतिक समारोह आयोजित होने वाला है। आपको इस समारोह में भाग लेना है। घर से आप जैसे ही विद्यालय के लिए निकले, वैसे ही बिल्ली ने रास्ता काट दिया। अब आप क्या करेंगे और क्यों ?
3. आप एक सप्ताह की डायरी लिखिए। डायरी लिखने में आप इन बातों का ध्यान रख सकते हैं–किनसे मिले, वे कैसे थे, किन–किन बातों पर चर्चा हुई, घटना या दुर्घटना, अपना अनुभव आदि।

   आप डायरी लिखते होंगे। अपनी डायरी की मुख्य–मुख्य बातों को अपने मित्रों से चर्चा कीजिए तथा उनकी डायरी की मुख्य–मुख्य बातें भी उनसे जानिए।

व्याकरण

सजाना क्रिया है। सजाना से सजावट (भाववाचक संज्ञा) बनाने के लिए हम **सजाना** शब्द से **ना** हटाते हैं और **आवट** जोड़ते हैं। यानी सजा+आवट = सजावट। इसी तरह **पढ़ना** से पढ़ाई (भाववाचक संज्ञा) बनाने के लिए हम **पढ़ना** शब्द से **ना** हटाते हैं और **आई** जोड़ते हैं। यानी पढ़+आई = पढ़ाई।

आप भी नीचे दिए गए क्रिया शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :

लिखना

मिलाना

बनाना

चढ़ना

पीसना

गतिविधि

1. मज़ेदार चुटकुलों का संग्रह कर कक्षा में सुनाइए।
2. समाज में व्याप्त अपशकुनों को दूर करने के उपायों पर चर्चा कीजिए।

14 पीपल

प्रकृति चित्रण छायावादी कविता की उल्लेखनीय विशेषता है। यह कविता प्रकृति के विविध रूपों से हमारा आत्मीय परिचय कराती है। कविता के केन्द्र में प्राचीन पीपल वृक्ष है जो अनेक बदलावों का साक्षी है। पीपल वृक्ष के समक्ष विभिन्न प्रकार के पेड़, झरने, नदी, चिड़िया, ऋतुएँ, दिवस चक्र सक्रिय हैं। कहना न होगा कि यह कविता अनेक दृष्टियों से उल्लेखनीय है।

कानन का यह तरुवर पीपल
युग-युग से जग में अचल, अटल
ऊपर विस्तृत नभ नील-नील नीचे वसुधा में नदी, झील
जामुन, तमाल, इमली, करील
जल से ऊपर उठता मृणाल फुनगी पर खिलता कमल लाल
तिर-तिर करते क्रीड़ा मराल
ऊँचे टीले से वसुधा पर झरती है निर्झरिणी झर-झर
हो जाती बूँद-बूँद झर कर

निर्झर के पास खड़ा पीपल सुनता रहता कलकल-छलछल
पल्लव हिलते ढलढल-ढलढल
पीपल के पत्ते गोल-गोल
कुछ कहते रहते डोल-डोल
जब-जब आता पंछी तरु पर जब-जब आता पंछी उड़कर
जब-जब खाता फल चुन-चुनकर
पड़ती जब पावस की फुहार बजते जब पंछी के सितार
बहने लगती शीतल बयार

तब-तब कोमल पल्लव हिल-डुल गाते सर्सर, मर्मर मंजुल
लख-लख, सुन-सुन विह्वल बुलबुल
बुलबुल गाती रहती चह-चह सरिता गाती रहती बह-बह
पत्ते हिलते रहते रह-रह
जितने भी हैं इसमें कोटर
सब पंछी, गिलहरियों के घर
सन्ध्या को अब दिन जाता ढल सूरज चलते हैं अस्ताचल
कर में समेट किरणें उज्ज्वल

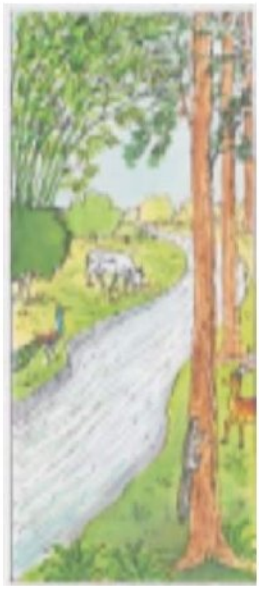
हो जाता है सुनसान लोक चल पड़ते घर को चील, कोक
अँधियाली संध्या को विलोक



P31V7Q

भर जाता है कोटर-कोटर बस जाते हैं पत्तों के घर
घर-घर में आती नींद उतर
निद्रा ही में होता प्रभात, कट जाती है इस तरह रात
फिर वही बात रे वही बात
इस वसुधा का यह वन्य प्रान्त
है दूर, अलग, एकान्त, शान्त

है खड़े जहाँ पर शाल, बाँस, चौपाये चरते नरम घास
निर्झर, सरिता के आस-पास
रजनी भर रो-रोकर चकोर कर देता है रे रोज भोर
नाचा करते हैं जहाँ मोर
है वहाँ वल्लरी का बन्धन बन्धन क्या, वह तो आलिंगन
आलिंगन भी चिर-आलिंगन
बुझती पथिकों की जहाँ प्यास निद्रा लग जाती अनायास
है वहीं सदा इसका निवास



–गोपाल सिंह 'नेपाली'

शब्दार्थ

कानन	–	जंगल
वसुधा	–	पृथ्वी
तमाल	–	एक सदाबहार पेड़
कटील	–	एक काँटेदार झाड़ी
मृणाल	–	कमल की कोमल डंठल
मराल	–	हंस
पावस	–	वर्षा
मंजुल	–	सुन्दर, मनोहर
विह्वल	–	व्यग्र
विलोक	–	देखना
निर्झर	–	झरना
निर्झरिणी	–	नदी, सरिता
रजनी	–	रात
वल्लरी	–	लता
अस्ताचल	–	सूर्यास्त

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. पीपल के पेड़ हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी है ?
2. कैसा वातावरण मिलने पर बुलबुल पंछी गाने लगती है ?
3. वन्य प्रान्त के सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

पाठ से आगे

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

(क) ऊपर विस्तृत नभ नील-नील
नीचे वसुधा में नदी झील
जामुन, तमाल, इमली, करील
जल से ऊपर उठता मृणाल
फुनगी पर खिलता कमल लाल

(ख) है खड़े जहाँ पर शाल, बांस,
चौपाये चरते नरम घास
निर्झर, सरिता के आस-पास
रजनी भर रो-रोकर चकोर कर देता है रे रोज भोर
नाचा करते हैं जहाँ मोर।

व्याकरण

1. पाठ में आए योजक चिह्न वाले शब्दों को लिखिए जैसे- नील-नील।
2. पर्यायवाची शब्द लिखिए

तरु –
कानन –
सरिता –
वसुधा –
बयार –

गतिविधि

1. पीपल के वृक्ष का एक चित्र बनाइए, जिसपर विभिन्न प्रकार के पक्षी बैठे हों तथा पूरब दिशा में सूरज निकल रहा हो।
2. 'पेड़ों का महत्त्व'–इस विषय पर कक्षा में गोष्ठी का आयोजन कीजिए।
3. वनस्पतियों का प्रयोग विभिन्न रोगों के इलाज हेतु औषधि के रूप में किया जाता है। उन वनस्पतियों की सूची इलाज की जानेवाली बीमारियों के साथ बनाइए, जैसे–

तुलसी का पत्ता – खाँसी

15 दीनबन्धु 'निराला'

आधुनिक काल के बेहद प्रतिष्ठित कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' पर लिखी गयी यह जीवनी एक संवेदनशील साहित्यकार के सरोकारों और संघर्षों को प्रकट करती है। निराला के व्यक्तित्व और जीवन के अनेक अनछुए पहलुओं का उद्घाटन करना पाठ का उद्देश्य है।

P3AR9D

महाकवि रहीम के प्रसिद्ध दोहे की यह एक पंक्ति महाकवि निराला पर सटीक बैठती है–**'जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय।'** निराला सचमुच दीनों को ही बराबर लखते थे और इन्हें लखते-लखते वह भी दीनबन्धु के समान हो गए थे। दीनबन्धु के समान न हुए होते, तो समस्त हिन्दी-संसार में आज उनकी जैसी लोकप्रियता दीख पड़ती है, वैसी आजकल किसी साहित्यकार की नहीं दीख पड़ी है। सर्वत्र उनकी अर्चना बड़ी श्रद्धा से हो रही है। बड़े-बड़े धुरन्धर महारथी साहित्य-संसार से चले गए, किसी को निराला के समान सार्वजनिक सम्मान नहीं मिला। अपने जीवन-काल में ही वह साहित्यानुरागियों के लिए आकर्षण-केन्द्र और श्रद्धाभाजन बने रहे। मृत्यु के बाद भी उनका सादर स्मरण विविध प्रकार से किया जा रहा है। यह उनके पुण्याचरण का ही प्रभाव है। पुण्यशील के पास सब विभूतियाँ आप-ही-आप आती हैं। दीनबन्धुता से बढ़कर पुण्यशीलता और है ही क्या? दीनबन्धु भगवान को सन्तुष्ट करने का सर्वोत्तम उपाय दीनों का सच्चा बन्धु होना ही है। निराला भी सच्चे अर्थ में दीनबन्धु थे। अपनी शक्ति के अनुसार वे जीवनपर्यन्त दीन-दुखियों की सेवा-सहायता करते रहे। जहाँ सेवा-सहायता में समर्थ न हो सके, वहाँ हार्दिक सहानुभूति का ही उपयोग करके सन्तोष पाया। पर, हर घड़ी उनके मन में दीनों की सेवा-सुश्रूषा की कामना ही जागती रही।

परमात्मा ने उनकी मनोवृत्ति और प्रवृत्ति समझकर ही उन्हें सबसे पहले श्रीरामकृष्ण-मिशन की सेवा में नियुक्त किया था और उन्होंने भी **'यथानियुक्तऽस्मि तथा करोमि'** को अक्षरशः चरितार्थ किया। परमहंस श्रीरामकृष्णदेव के वेलूर-मठ (कलकत्ता) में प्रतिवर्ष परमहंसजी और स्वामी विवेकानंदजी की जयन्तियों तथा पुण्यस्मृति-तिथियों पर दरिद्रनारायण विधिवत् भोजन कराया जाता था। वहाँ मिशन की शाखा 'विवेकानन्द-सोसायटी' के विद्वान संन्यासियों के साथ 'समन्वय'-सम्पादक निरालाजी भी जाया करते थे। उस विराट आयोजन के कार्यक्रमों में निराला केवल दरिद्रनारायण को भोज्य पदार्थ वितरित करने का ही काम अपने जिम्मे लेते थे। कंगालों को खिलाने में उनकी गहरी लगन देख लोग मुग्ध हो रहते थे। वहाँ अधिकतर बंगीय भद्र-समाज ही जुटता था और निराला मातृभाषा की तरह बंगला-भाषा बोलकर समागत समाज को आप्यायित कर देते थे। वे बंगीय समाज में दूध-मिसरी की तरह घुल-मिल जाते थे। स्वाभाविक रीति से बँगला बोलनेवाला व्यक्ति शीघ्र ही बंगाली-बन्धुओं का आत्मीय बन जाता है। अच्छी अँगरेजी और खाँटी बंगला बोलने के कारण ही वहाँ के समाज में भी वे पूर्णतः समादृत थे। बंगभाषा के साहित्य में उनकी पैठ किसी विलक्षण बंगाली से भी कम न थी। उस समाज के लोग आग्रहपूर्वक उनसे कवीन्द्र रवीन्द्र के गीत गवाकर सुनते और तृप्त होते थे।

भगवद्विभूतियाँ उन्हें ख़ूब मिली थीं। आकर्षक रूप, लम्बे-तगड़े डील-डौल का शरीर, व्यायाम के अभ्यास से सुगठित स्वास्थ्य, विलक्षण मेधाशक्ति, ललित मनहर कण्ठ, दयार्द्र हृदय, चिन्तनशील मस्तिष्क, उद्भावना शक्ति-सम्पन्न बुद्धि—सब कुछ भगवान् ने उन्हें भरपूर दिया था। बड़ी-बड़ी सुहावनी-लुभावनी आँखें, दमकती दाड़िम-दसनावली, घुँघराली अलकावली, लघु मुख-विवर, पतले-पतले अधर, पतली-पतली बाँकी अँगुलियाँ, प्रशस्त वक्षस्थल, हर तरह से सिरजनहार ने उन्हें सँवारा था। जिस मण्डली में बैठ जाते थे उसे अपने व्यक्तित्त्व से जगमगा देते थे। उनकी जुल्फें टकटकी बाँध लेती थीं। कविता-पाठ की भाव-भंगी श्रोताओं के हृयगत भावों को उद्दीप्त कर देती थी! 'मतवाला-मण्डल' (कलकत्ता) में एक बार एक धनी-मानी बंगीय परिवार से उनके विवाह का प्रस्ताव भी आया था। पर, वह तो एक पत्नीव्रत थे। उनके पास तो युवती छात्राएँ भी साहित्यिक उद्देश्य से आती थीं। छात्र भी आते थे। पर वे किसी छात्रा से वार्त्तालाप करते समय आँखें बराबर नहीं करते थे। कामिनी- कंचन का त्याग करके वे गृहस्थाश्रम में ही संन्यासी बने रहे। यदि उन दिनों मोहक पदार्थों के प्रति उनके मन में आसक्ति होती, तो उन्हें हस्तगत करनेवाले गुण उनमें पर्याप्त थे। किन्तु, सांसारिक सुख-भोगों की वासनाएँ उनकी पत्नी के साथ ही विलीन हो गई। कंचन की कामना कभी उनके भीतर झाँकने भी न पाई। द्रव्य के लिए उनका करतल प्रवाह क्षेत्र-मात्र था। द्रव्य-संचय उनका ध्येय कभी रहा ही नहीं। धन उनके पास अतिथि के समान अल्पावधि तक ही टिकने आता था। अगर हजार आया, तो डेढ़ हजार का चिट्ठा पहले से तैयार है। अभाव-ग्रस्तों के अभाव उनके दिमाग के दायरे में मँडराते थे। भरपेट खाने के लिए तरसनेवाले निकौड़िये से लेकर मेहनत-मशक्कत करनेवाले मजदूर तक उनकी निगाहों में बसे हुए थे और जब कभी उनके मन-माफिक अर्थलाभ हो जाता, वह तुरन्त इन मरभूखों की ओर दौड़ जाते। 'जिनके लहहि न मंगल नाहीं ते नर वर थोरे जग माहीं'-उन्हीं थोड़े लोगों में वे भी एक थे।

'मतवाला-मण्डल' में भिखमंगी की समस्या पर और अख़बारों में छपे इस विषय के समाचारों या लेखों पर जब कभी बातचीत होती थी, यदि निराला वहाँ उपस्थित रहते, बड़े आवेश में वे अपने युक्तियुक्त तर्क उपस्थित करते। वे देश में फैली हुई आर्थिक विषमता पर शब्दास्त्र-सन्धान करते समय उग्रतम साम्यवादी प्रतीत होते थे। यद्यपि हृष्ट-पुष्ट भिक्षुकों के प्रति उनकी सहानुभूति भी उन्मुख नहीं थी, तथापि असमर्थ या अपाहिज भिखारियों की दयनीय दशा के लिए वह शासन और समाज की ही तीव्र आलोचना किया करते थे। लँगड़े-लूले, अन्धे, कोढ़ी और निकम्मे दीन-बन्धुओं पर ही उनकी दृष्टि अटकती थी, फिर तो वह अपनी वास्तविक परिस्थिति को बिल्कुल भूल जाते थे। कलकत्ता-सदृश महानगर की सड़कों की दोनों पटरियों पर वह ढूँढ़ते फिरते थे कि वस्तुतः कौन बेचारा कैसी दुर्गति में है। उनका अधिकांश अवकाश-काल दीनों की दुनिया में ही बीतता था। वहाँ फुटपाथों पर भिखारियों के सिवा बहुतेरे निराश्रित ग़रीब और कुली-कबाड़ी भी रात में पड़े रहते हैं। उनके लिए बीड़ी, मूढ़ी, भूजा, चना, मूँगफली आदि खरीदकर वितरण करनेवाला धनकुबेरों की उस महानगरी में निराला के सिवा दूसरा कोई न

देखा गया। बड़े-बड़े सेठ घनघोर रात में भी उन पटरियों पर से गुजरते थे, पर कहीं-कहीं दो-चार पैसे फेंकनेवाले भले ही दीख जायँ, निराला की तरह उन दीनों से आत्मीयता स्थापित करनेवाले ढूँढ़े भी नहीं मिल सकते थे। उस महानगर में नाना प्रकार के मनोरंजन के साधन हैं। क्या उन्हें उपलब्ध करने के लिए निराला को पैसों की कमी थी? किन्तु, उनका मनोरंजन तो दीन-दुखियों को सुख पहुँचाने से ही होता था। कोई मित्र उन्हें सिनेमा-थियेटर भले ही ले जाय, उनके पैसे तो भूखे-रूखे ग़रीबों की सेवा में ही लगने पर अपनी सार्थकता समझते थे।

निराला केवल शहरों या बाज़ारों और स्टेशनों के अन्दर मिलनेवाले दीनजनों पर ही ध्यान नहीं देते थे, अपने गाँव और पड़ोस के ग़रीब गृहस्थों की सहायता का भी ध्यान रखते थे। उनके गाँव और जिले के भी कई आदमी उनकी उदारता या दानशीलता की कहानी सुनकर उनके पास आ धमकते थे। अतिथि भी उनके विचित्र भाँति के होते थे। परिचितों और कुटुम्बियों के अतिरिक्त ऐसे लोग भी कलकत्ता तक दौड़ लगाकर उनका पीछा करते थे, जो उनसे किसी-न-किसी प्रकार का लगाव जोड़कर उनके शील-सौजन्य से लाभ ऐंठ लेते थे। भोजन के सिवा कपड़े-जूते की माँग तो होती ही थी, चलते समय राह खर्च की फ़रमाइश भी होती थी। देखने वाले को भले ही यह नागवार मालूम होता हो, पर निराला की शक्ति भंग नहीं होती थी। उनकी शान्ति तो तभी भंग होती थी, जब किसी ज़रूरतमन्द की मदद नहीं कर सकते थे। किसी आदमी को अपने से अनुचित लाभ उठाते देखकर भी उनके धैर्य को ठेस नहीं लगती थी। दूसरों के अभाव को अपने ऊपर ओढ़ लेने से भी उनका शान्त-गम्भीर हृदय कभी विचलित होता नहीं देखा गया। अगर कोई कहता भी था कि आप इतना खटराग क्यों पालते हैं, ऐसे परमुण्डे फलाहार करनेवालों को टरकाया कीजिए, तो मुस्कराकर ही रह जाते थे। उनको भला सीख कौन दे सकता था? वह तो स्वयं ही नीति और धर्म के मर्मज्ञ व्यक्ति थे।

यह विशेषता निराला में ही देखी गई कि अपनी आवश्यकताओं को भुलाकर दूसरों की आवश्यकताओं को दूर करने के लिए परेशानियाँ और कठिनाइयाँ झेलने में अधीर नहीं होते थे। उन्हें अपने खाने-पीने या कपड़े-लत्ते की कभी चिन्ता ही नहीं हुई। अच्छा कपड़ा-जूता भी कुछ ही दिनों तक उनके पास टिकता था; तोशक-रजाई तक किसी को दे डालने में तनिक हिचक न होती थी। न उनके पास कुंजी रह पाती थी और न कभी कपड़े या रुपये-पैसे रखने के लिए ट्रंक या बक्स ही खरीदा। गद्दे या लिहाफ की परवाह न करके जैसे-तैसे सो रहे और उतने ही में आराम से दिन गुजार लिए। सुन्दर पलंग या शानदार कुर्सी-मेज की कभी कामना ही नहीं की। जिस कमरे में रहना है, उसकी सजावट का कभी सपना भी न देखा। यद्यपि उन्होंने 'मतवाला'-सम्पादक के अविरल स्नेह के प्रसाद-स्वरूप अच्छे-से-अच्छे कपड़े और तेल-फुलेल तथा खान-पान का सुख अच्छी तरह भोग लिया, तथापि अपनी कमाई के पैसे से कभी भोग-विलास की सामग्री नहीं बेसाही। कलकत्ता छोड़ने पर जब वे लखनऊ और प्रयाग में रहे, तब भी मस्त-मौला फ़कीर की तरह ही जीवन-यापन करते रहे। जहाँ कहीं रहे, आसपास के दुकानदारों को मुँहमाँगा दाम देकर निहाल कर दिया। इक्के-ताँगेवाले भी उनकी दरियादिली से

परिचित थे और उन्हें देखते ही दूसरे के साथ तय किया हुआ भाड़ा छोड़कर साग्रह बिठा लेते थे। अड़ोस-पड़ोस के ग़रीब उनसे इतने अधिक उपकृत रहते थे कि उन्हें राह चलते असीसने लगते थे। याचकों के लिए तो कल्पतरु थे ही, अपने मित्रों के लिए **मुक्तहस्त दोस्त-परस्त** थे। मित्रों और अतिथियों के स्वागत-सत्कार का वैसा हौसला अब देखने में नहीं आ रहा। बहुत-से लोगों को निराला-सम्बन्धी ये बातें अतिरंजित जान पड़ेंगी। पर, मैं तो निराला के साथ वर्षों रहकर उनके प्रतिदिन के जीवन-क्रम को ही निकट से देख चुका हूँ और उनके स्नेह-भाजन के रूप में उनका प्रगाढ़ स्नेह भी पाता रहा हूँ। किन्तु, आधुनिक युग में ऐसी बातों को अतिशयोक्ति समझनेवाले सज्जन यह सोचें तो सही कि भूखे को देखते ही अपने आगे परोसी हुई थाली उसके सामने रख देनेवाले कितने महानुभाव आज के समाज को विभूषित करते हैं। निराला खुद मामूली कपड़ों में गुजर करके ग़रीब को अपने नये कपड़े को ओढ़ा देते थे। उस तरह के आचरण के लोग साहित्य-जगत् में तो नहीं देखे गए हैं। जिस व्यक्ति में अन्यान्य लोगों से जो अधिक विशिष्ट गुण हों, उनका स्मरण न करना-कराना ईश्वर की दी हुई वाणी को व्यर्थ करना है।

– आचार्य शिवपूजन सहाय

शब्दार्थ

कल्पतरु	–	इच्छापूर्त्ति करनेवाला काल्पनिक पेड़
सटीक	–	उपयुक्त
दीन	–	ग़रीब
समस्त	–	संपूर्ण
सर्वत्र	–	सभी जगह
अर्चना	–	प्रार्थना
सम्मान	–	प्रतिष्ठा
प्रभाव	–	असर
आप्यायित	–	प्रसन्न
तृप्त	–	संतुष्ट
बेसाहना	–	खरीदना/एकत्रित करना
अधर	–	ओठ
सिरजनहार	–	ईश्वर
वार्त्तालाप	–	बातचीत
विलीन	–	समाप्त
संचय	–	संग्रह
ध्येय	–	उद्देश्य

लखै	–	देखना
दाड़िम	–	अनार
युक्तियुक्त	–	सटीक
परिस्थिति	–	हालात
नागवार	–	नापसंद
निहाल करना	–	खुश कर देना
मामूली	–	साधारण
व्यर्थ	–	बेकार
साहित्यानुरागी	–	साहित्य प्रेमी
कामिनी-कंचन	–	विषय वासना
मुक्तहस्त	–	खुले हाथ से
अविरल	–	लगातार

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. निराला को 'दीनबंधु' क्यों कहा गया है?
2. निराला संबंधी बातें लोगों को अतिरंजित क्यों जान पड़ती हैं ?
3. निम्न पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :
   (क) ''जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय।''
   (ख) ''पुण्यशील के पास सब विभूतियाँ आप-ही-आप आती हैं।''
   (ग) ''धन उनके पास अतिथि के समान अल्पावधि तक ही टिकने आता था।''

व्याकरण

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द : उच्चारण, मात्रा या वर्ण के साधारण बदलाव के बावजूद सुनने में समान परन्तु भिन्न अर्थ देनेवाले शब्द को श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहते हैं।
जैसे :

दिन	–	दिवस
दीन	–	ग़रीब

निम्नलिखित श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द का अर्थ लिखिए :

1.	समान	2.	केवल
	सम्मान		कैवल्य
3.	बन	4.	भगवान
	वन		भाग्यवान

5.	छात्र छत्र	6.	अन्य अन्न
7.	द्रव्य द्रव	8.	जगत् जगत
9.	अवधी अवधि	9.	क्रम कर्म
10.	आदि आदी	12.	चिंता चिता

अनेकार्थक शब्द : कुछ ऐसे शब्द प्रयोग में आते हैं, जिनके अनेक अर्थ होते हैं। प्रसंगानुसार इनके अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे :–

नाना – मेरे **नाना** जी **नाना** प्रकार के खिलौने लाए हैं। (नाना–माँ के पिता, विभिन्न)

आम – **आम** इन दिनों इतने महंगे हैं कि **आम** आदमी के लिए खरीदना मुश्किल है। (आम–एक प्रकार का फल, साधारण)

पानी – उचित समय पर नगर निगम ने **पानी** उपलब्ध कराकर नगरवासियों की **पानी** बचा ली। (पानी–जल, इज्जत)

फल – **फल** का नियमित सेवन करने से शरीर पर सकारात्मक **फल** पड़ता है। (फल–पेड़ का एक अंग, परिणाम)

दी गई जानकारी के आधार पर निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि एक से अधिक अर्थ स्पष्ट हो जाएँ :

1.	मन	2.	हर
3.	कर	4.	अर्थ
5.	मंगल	6.	पास
7.	काल	8.	पर

इन्हें भी जानिए

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने निराला के लिए 'दीनबंधु' विशेषण का प्रयोग किया है। कुछ अन्य प्रतिष्ठित विभूतियों से संबंधित विशेषण इस प्रकार हैं :

	विशेषण	प्रतिष्ठित विभूतियाँ
(क)	कथा-सम्राट	मुंशी प्रेमचन्द
(ख)	मैथिल कोकिल	विद्यापति
(ग)	भारत कोकिला	सरोजनी नायडू
(घ)	देशरत्न	डा० राजेन्द्र प्रसाद
(ङ)	लोकनायक	जयप्रकाश नारायण

16 खेमा

बाल-मजदूरी की नृशंसता को उभारने वाली कहानी खेमा हमें बाल श्रमिकों के प्रति संवेदनशील बनाती है। बाल अधिकारों की अवधारणा समकालीन विमर्श का महत्त्वपूर्ण गद्य है, कहानी इसके प्रति भी हमें जागरूक बनाती है।

P3JHB1

गली के नुक्कड़ पर बिना नाम की एक चालू और अस्थाई होटल। टूटी-सी टेबल पर चाय बनाने के लिए भट्ठी के साथ लगा लाल पंखा। पास ही दीवार से सटे एक टेबल पर आठ-दस लीटर दूध से भरा एल्युमीनियम का भगोना और चाय, शक्कर के डिब्बे। एक छींका जिसमें आठ-दस गिलास रखे हैं।

इस 'मुक्ताकाशी' होटल का मालिक कसारा अपने काम को हल्का करने के लिए पास के किसी गाँव से एक बालक को ले आया। कुछ तुतलाते बोलते इस बालक का नाम था, खेमा। यह लगभग आठ-नौ वर्ष का दिखाई पड़ता था, उसका रंग गेहुँआ था। कद लगभग साढ़े तीन फुट, ख़ाकी निकर के साथ पैबन्द लगी कमीज़ पहने था। दूध के दाँत अभी पूरे गिरे नहीं और चढ़ने लगा खेमा रोजगार की पहली पायदान पर।



सुबह की ग्राहकी के समय कसारा चाय बनाता और खेमा गिलासों को ग्राहकों को दे आता। फिर अपनी नन्हीं अंगुलियों के बीच चार-पाँच गिलासों को उठाकर टंकी पर धोने ले जाता। खेमा गिलासों में पानी डालकर उलट देता और धुले गिलासों को टेबल पर रखे छींके में पंजों के बल खड़ा होकर जमा देता। यह क्रम उसकी नियति बन गया था।

''ऐ रे खेमा, ये डायरी ले जा और लिखवा ला, तीन साइकल वाले के, दो मास्टर साहब के, पाँच सेठजी के'', कसारा ने खेमा को आदेशात्मक स्वर में कहा।

''हाँ काका, अभी लेकर जाता हूँ।'' चाय के साथ खेमा डायरी लेकर चल पड़ा। आठ-दस मिनट बाद घूमता-घामता खेमा डायरी लेकर आया। वह सम्भवत: समझने लगा था कि दुकान पर जाते ही फिर पिलना है।

''इतनी देर कहाँ रहा रे खेमा ? कसारा ने खेमा को झिड़कते हुए पूछा। ''वो..... वो, मास्साब दुकान पर नहीं थे।'' खेमा सफ़ेद झूठ बोल गया। कुछ समय बाद खेमा उठा और गिलास धोने लगा।

जब होटल पर चाय पीने वाले इक्के-दुक्के लोग रह गए तब खेमा ने अपने सेठ कसारा से कहा, ''मेरे पैर जलते हैं, चप्पल ला दो काका.....।''

''अभी रख दूँगा चप्पलें सिर पर, चल अपना काम कर, बड़ा आया चप्पलें पहनने वाला।''

खेमा निराश हो गया। अप्रैल का महीना था। धूप गहराने लगी थी। नंगे पैर खेमा इधर कोल्हू के बैल की तरह घूमता रहता। जूठे गिलास धोने जाता तो पहले अपने पैर धोता। शायद जलते पैरों पर पानी गिरने से खेमा को क्षणिक तसल्ली मिलती थी।

काम निपटा कर.....कसारा रोटी खाने बैठा। दो रोटी, प्याज और चटनी लेकर खाना खाने लगा। खेमा भी इसी टोह में था कि अब खाना मिल जाए। इस बीच आठ-दस लोग बेंचों पर आ बैठे। कसारा हाथ धोकर चाय बनाने लगा। खेमा का उतरा चेहरा देखा नहीं जाता था।

खेमा ग्राहकों को चाय देता, पानी पिलाता और ग्राहकों के आदेश पर बीड़ी-सिगरेट भी ले आता था। रोज़ाना चाय पीने वाले ग्राहक खेमा को भद्दी गालियाँ देकर पुकारते और खेमा डरा, सहमा, मुस्कुराता हुआ अपने काम में लगा रहता। हाँ, कनखियों से अपने नियमित ग्राहकों पर एक-दो बार नजर जरूर डाल लेता था क्योंकि उनसे जान-पहचान हो गई थी।

'ऐ रे खेमा' कहकर रोटी की तरफ इशारा करके कसारा पास के बरामदे में दोपहर की झपकी लेने लगा। खेमा ने भी अपना पेट भरा। उसको भी थकान के मारे नींद आने लगी।

कसारा के सोते भला खेमा कैसे आराम कर सकता था? गर्म हवा सहता, थकान का मारा खेमा बैठे-बैठे झपकियाँ ले लेता। कभी सिर पास की दीवार से टकरा जाता तो वह मुँह की लार हथेली से साफ करके उठ बैठता और कसारा की तरफ देखता।

होटल के पास क्लिनिक होने से सुबह-शाम ज्यादा चाय बिकती थी। हर तरह के बीमार क्लिनिक में उपचार कराने आते। दवाई लेते, चाय पीते। न जाने कितनों की बीमारी के जीवाणु खेमा के शरीर को बीधेंगे? खेमा इन सब से बेखबर अपने काम में लगा रहता। खेमा को आए लगभग दो महीने हो चुके थे। खेमा की सारी दुनिया कसारा के होटल में सिमट आई थी।

''ऐ रे खेमा.....'' कसारा ने पंखा घुमाते हुए ज़ोर से आवाज सुनाई।
''आ रहा हूँ।'' पास के जनरल स्टोर पर बैठा खेमा दौड़कर आया।

''कहाँ मर गया था, ये बर्तन क्या तेरा बाप धोएगा? कसारा ने आँखें निकालीं। कसारा के ताने सुनता खेमा बर्तन साफ करने जा बैठा।

''ऐ रे खेमा.....पहले यहाँ आ के चार चाय जनरल स्टोर पर दे आ।'' कसारा ने नाटकीय क्रोध में कहा।

''जा रहा हूँ।'' खेमा ने शांत स्वर में कहा।

शाम होते-होते बरतनों की सफाई नहीं हुई, इस कारण खेमा की पिटाई हो गई। खेमा बाल्टी लेकर हैंडपम्प पर गया और जैसे-तैसे पानी की बाल्टी ले आया। संभवत: कसारा का खौफ़ खेमा में उत्तेजना भर देता था। ख़ौफ से बालक स्थिर होकर बैठा रहता है, परन्तु खेमा तो कसारा के ख़ौफ के आगे मशीन की तरह दौड़ता रहता है।

रात होने से पहले खेमा ने सभी बर्तनों की सफाई कर दी। कसारा और खेमा ने खाना खाया कुछ देर बाद दोनों अपने-अपने बिस्तर पर लेट गए। कसारा जाग रहा था, परन्तु खेमा को सोते ही नींद आ गई।

अगले दिन सुबह से खेमा फिर अपने काम में लग गया। उसके लिए कुछ भी नया नहीं रहा।

दो दिन से मैं खेमा का जीवन क्रम देख रहा था। इस तरह शोषण! न जाने कितने खेमा जैसे इस देश में हैं जो बचपन में ही कच्ची टहनी से स्थूल जड़ बन जाते हैं। न जाने क्यों ?

जानकारी करने पर मुझे पता चला कि खेमा के माता-पिता ने बच्चों के भरण-पोषण के दायित्व से मुक्त होने के लिए अपने चार बेटों को इसी तरह से बेच दिया है। खेमा भाइयों में सबसे छोटा था। मैंने सोचा, खेमा को कुछ समय अपने पास रखकर स्कूल में दाखिला दिलवा दूँगा।

कसारा चायपत्ती, शक्कर लेने बाज़ार गया। मुझसे रहा नहीं गया और मैंने खेमा को आवाज लगाई। खेमा टेबल पर गीला कपड़ा घुमाता छोड़ मेरे पास आ खड़ा हुआ।

''क्यों खेमा, तुझे तेरे सेठजी कितने रुपये देते हैं?'' मैंने उत्सुकता से पूछा।

''मैं नहीं जानता, बापू जानते हैं।'' खेमा ने हथेलियाँ घुमाते हुए स्पष्ट स्वर में कहा।

''तुम स्कूल नहीं जाते हो खेमा?'' मेरे प्रश्न ने खेमा को चौंका दिया।

''मेरी तो पढ़ने की इच्छा है पर बापू स्कूल नहीं भेजते।'' कहते-कहते खेमा मेरे सामने बैठ गया।

''तू तेरे सेठ के पास खुश है?'' मैंने पूछा। खेमा निरुत्तर रहा।

''मेरे साथ चलेगा?'' मैंने दृढ़ता से कहा।

''क्या काम करना पड़ेगा?'' नन्हीं जान ने मुझे निरुत्तर कर दिया।

''स्कूल जाना, पढ़ाई करना मेरे साथ रहना।'' मैंने प्यार से कहा।

उसके चेहरे से प्रसन्नता झलकने लगी। मैंने दो-तीन दिन तक छानबीन करके खेमा के गाँव का पता लगाया और उसके पिता से मिलने गाँव जा पहुँचा। उसका पिता टूटी-फूटी झोंपड़ी के बाहर खाट पर बैठा था। थका-सा शरीर उदास चेहरा। मुझे देखकर उठा और हाथ जोड़ कर भय मिश्रित आश्चर्य से देखने लगा।

''आप.....?'' खेमा के पिता ने पूछा?

''मैं अध्यापक हूँ। खेमा को जानता हूँ।'' मैंने कहा।

''वो एक होटल पर है साहब.....।'' खेमा के पिता ने दीर्घ श्वास छोड़ते हुए कहा।

''मुझे मालूम है। मैं चाहता हूँ कि खेमा को पढ़ाऊँ, उसे अच्छा इंसान बनाऊँ। इसलिए खेमा को लेने आया हूँ।'' मैंने सहजता से कहा।

खेमा के पिता की आँखें भर आईं। निश्चय ही उसके मन में अपने बच्चे के प्रति अनुराग उमड़ पड़ा था।

''ठीक है, पर कसारा को उसके रुपए लौटाने पड़ेंगे।'' खेमा का पिता बोला।

''मैं व्यवस्था कर दूँगा।'' मैंने सहजता से कहा।

उसके चेहरे पर संतोष की लकीरें उभर आयीं। वह मेरे साथ चल पड़ा।

खेमा ग्राहकों को चाय के गिलास दे रहा था। खेमा के पिता ने कसारा से बात की और लगभग आधा घण्टे बाद खेमा मेरे पास था।



खेमा मेरे साथ चलने लगा। उसकी चाल बदल गई। जैसे पिंजरे से पंछी मुक्त हुआ हो। घर आकर मैंने स्नान किया फिर खेमा को स्नान करने के लिए कहा। दोनों ने खाना खाया।

खाना खाते समय मैं सोच रहा था कि यदि खेमा पढ़-लिखकर कुछ बन जाएगा तो मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी परन्तु खेमा जैसे अनेक बालक हैं, उनका क्या होगा? खैर.....

रात को मैं सोने लगा तो खेमा मेरे पास आया और मेरे पैर दबाने लगा। मैं उठ बैठा और पूछा कि मेरे पैर क्यों दबा रहा है, तो पता चला कि खेमा रोज रात को दो घण्टे कसारा के पाँव दबाता था। मेरी आँखें भर आयीं।

मैंने प्यार से खेमा के सिर पर हाथ फेरा। मैंने उसे बिस्तर पर सो जाने के लिए कहा। कच्ची नींद में सोया खेमा करीब दो घण्टे बाद बड़बड़ाने लगा, ''आया सेठजी।'' संभवत: कसारा की आवाज अर्द्ध निद्रावस्था में खेमा को सुनाई दी, ''ऐ रे खेमा.....।''

–संकलित

शब्दार्थ

पायदान	–	सीढ़ी, पैर रखने योग्य
पिलना	–	भिड़ जाना
अनुराग	–	प्रेम, भक्ति
आदेशात्मक	–	आदेशपूर्ण, आज्ञा
क्षणिक	–	थोड़ी देर रहने वाला
निरुत्तर	–	बिना उत्तर के
नियति	–	भाग्य, नियमन
छींका	–	चाय का गिलास रखने का जालीनुमा उपकरण

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. खेमा कसारा के होटल पर काम क्यों करता था ?
2. खेमा द्वारा चप्पल की माँग करने पर कसारा ने बेरूखी क्यों दिखाई ?
3. अपने पैरों पर पानी गिराने से खेमा को तसल्ली क्यों मिलती थी ?
4. किन परिस्थितियों में खेमा के पिता ने उसे बेच दिया था ?
5. जब लेखक ने खेमा के पिता से कहा कि वे खेमा को अपने साथ ले जाकर पढ़ाना चाहते हैं तब उसकी आँखें क्यों भर आईं ? अपना विचार दीजिए।

पाठ से आगे

1. 'खेमा' कहानी पढ़कर आपके दिमाग में कौन-कौन से प्रश्न उठ रहे हैं ?
2. कसारा से चप्पल माँगने पर खेमा को फटकार लगी उसके बाबजूद वह काम करने लगा ? आप रहते तो क्या करते ?
4. कसारा का होटल छोड़ने के बाद खेमा के जीवन में किस प्रकार का परिवर्तन आया होगा ? अपने विचार लिखिए।
5. बाल मज़दूरी की तरह समाज में अन्य कुप्रथाएँ भी प्रचलित हैं। उन पर चर्चा कीजिए।
6. बाल मज़दूरी समाप्त करने के लिए सुझाव दीजिए।

गतिविधि :

1. अपनी दिनचर्या की तुलना खेमा की दिनचर्या से कीजिए :

आपकी दिनचर्या	खेमा की दिनचर्या

2. **'खेमा' कहानी में आये निम्नलिखित प्रसंगों में से किसी एक पर चित्र बनाइए।**
   (क) कसारा के होटल पर काम करते हुए खेमा ।
   (ख) कसारा के पैर दबाते हुए खेमा ।
   (ग) जलते हुए अपने पैर पर पानी डालते हुए खेमा ।
3. अपने आस पड़ोस के किसी बाल मज़दूर से बात कर यह पता कीजिए कि किन कारणों से वह बाल मज़दूर बना।

17 ख़ुशबू रचते हैं हाथ

यह कविता वंचित लोगों के समृद्ध अवदान की संवेदनशीलता को रेखांकित करती है। महज़ समृद्धि के सौन्दर्य की अभ्यस्त दृष्टि से अलग यह कविता उसके पीछे सक्रिय श्रम की गरिमा का उद्घाटन करती है।

P3TICN

कई गलियों के बीच
कई नालों के पार
कूड़े-करकट
के ढेरों के बाद
बदबू से फटते जाते इस
टोले के अंदर
ख़ुशबू रचते हैं हाथ
ख़ुशबू रचते हैं हाथ।



उभरी नसोंवाले हाथ
घिसे नाखूनोंवाले हाथ
पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ
जूही की डाल-से ख़ुशबूदार हाथ
गंदे कटे-पिटे हाथ
ज़ख़्म से फटे हुए हाथ
ख़ुशबू रचते हैं हाथ।
ख़ुशबू रचते हैं हाथ



यहीं इस गली में बनती हैं
मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ
इन्हीं गंदे मुहल्लों के गंदे लोग
बनाते हैं केवड़ा, गुलाब, ख़स और रातरानी
अगरबत्तियाँ
दुनिया की सारी गंदगी के बीच
दुनिया की सारी ख़ुशबू

रचते रहते हैं हाथ
ख़ुशबू रचते हैं हाथ
ख़ुशबू रचते हैं हाथ।

– अरुण कमल

शब्दार्थ

ज़ख्म	–	घाव
रातरानी	–	एक तरह का सुगंधित फूल
मुल्क	–	देश
मशहूर	–	प्रसिद्ध
केवड़ा	–	एक तरह का सुगंधित फूल
खस	–	पोस्ता, सुगंधित घास

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. खुशबू रचने वाले हाथ कैसी परिस्थितियों में रह रहे हैं ?
2. 'खुशबू रचते हैं हाथ' से क्या तात्पर्य है ?

पाठ से आगे

1. आपके विचार से इस कविता का मुख्य उद्देश्य क्या हो सकता है?
2. **व्याख्या कीजिए :-**

   यहीं इस गली में बनती हैं
   मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ
   इन्हीं गंदे मुहल्लों के गंदे लोग
   बनाते हैं केवड़ा गुलाब ख़स और रातरानी अगरबत्तियाँ

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–**

   (क) 'उभरी नसोंवाले हाथ' का क्या अर्थ है?

   (ख) 'पीपल के पत्ते–से नए–नए हाथ' का क्या अर्थ है?

4. अमीरी एवं ग़रीबी के खाई को कैसे पाटा जा सकता है–अपना सुझाव दीजिए।

गतिविधि

1. पता कीजिए कि जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल कैसा होता है ?
2. अगरबत्ती बनाना, माचिस बनाना, मोमबत्ती बनाना, पापड़ बनाना, मसाले का निर्माण करना जैसे लघु उद्योगों में से किसी एक के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।
3. नवगीत के बारे में अपने शिक्षक से जानिए।
4. मजदूरों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची बनाइए।
5. इस कविता से मिलती–जुलती कुछ रचनाएँ संकलित कीजिए और कक्षा में सुनाइए।

18 हौसले की उड़ान

यह पाठ बिहार की बेटियों की असाधारण विशेषताओं का उद्घाटन करता है। बिहार की बेटियों का यह संसार समाज की रूढ़ियों पर प्रहार है। आधुनिक बिहार की बेटियों की संघर्ष और उनके हौसले की उड़ान से हमें परिचित कराता है यह पाठ।

P43EEB

ख़ूबसूरत और न्यायप्रिय व्यवस्था के निर्माण में शिक्षा और संघर्ष की अहम भूमिका होती है। यह भूमिका यदि बेटियों के समूह से आए तो बदलाव की नयी बयार का अहसास होता है लंबे समय से दमन, उत्पीड़न और उपेक्षा की शिकार बेटियों को ज्ञान और स्वाधीनता का स्वाद लग चुका है। आइए कुछ ऐसी ही बेटियों से मिलें, जिन्होंने अपने हौसले की उड़ान के बल पर सामाजिक ताने-बाने को बदलने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभायी।

नोखा प्रखंड, रोहतास की गुड़िया से मिलकर आपको एहसास हो जाएगा कि पढ़ाई का जुनून क्या होता है। गुड़िया के माता-पिता उसकी पढ़ाई के लिए राज़ी नहीं थे। एक दिन गुड़िया ने कुछ कर गुज़रने का हौसला महसूस किया। पिता मो० असीन इदरीसी को माँ समेत उसने घर में बंद कर दिया और तेरह किलोमीटर पैदल चल कर नोखा के उत्प्रेरण केन्द्र पहुँच गयी। वहाँ पहुँच उसने अपना नामांकन कराया। पेशे से ड्राइवर पिता को इस बात की जानकारी दो दिनों बाद मिली। आनन-फानन में वे उत्प्रेरण केन्द्र पहुँचे और बेटी को घर लाने की ज़िद पर अड़ गये। पर बेटी ने साफ तौरपर इनकार कर दिया। पिता को समाज की बंदिशों की चिंता थी, पर गुड़िया के आगे उनकी एक न चली। कुछ समय बाद उत्प्रेरण केन्द्र बंद हो गया। अब गुड़िया ने गाँव के स्कूल में अपना नामांकन करा लिया है। वह पढ़-लिखकर अध्यापिका बनना चाहती है। उसका सपना है कि अपनी जैसी लड़कियों के साथ ही उन लड़कियों की भी इच्छा पूरी कर सके जिनके मन में पढ़ने की ललक तो है, पर बाधाएँ जिन्हें पराजित कर देती हैं। गुड़िया गाँव समेत अपने इलाके में मिसाल बन गयी है।

कैमूर के चेनारी प्रखंड के मथही गाँव निवासी विष्णु शंकर तिवारी खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। दरअसल उनकी बेटी सोनी ने पूरे ज़िला में एथलेटिक्स प्रतियोगिता में 400 मीटर और 1600 मीटर की दौड़ में पहला स्थान प्राप्त किया था। वह गाँव ही नहीं पूरे प्रखंड की चहेती बन गयी। सोनी का हौसला लगातार बढ़ता गया। वह राज्यस्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में प्रतिभागी बन जमालपुर गयी, जहाँ उसे पहला स्थान मिला। फिर उसने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए चौथा स्थान प्राप्त किया। सोनी को विश्वास है कि एक दिन वह पूरे देश का भी प्रतिनिधित्व करेगी और देशवासियों की उम्मीद पर खरी उतरेगी।

कदम अपने उम्र की बच्चियों से अलग है। वह अध्ययनविरोधी ताक़तों के ख़िलाफ़ तनकर खड़ी हो जाने का हौसला रखती हैं फिर वह इसकी परवाह नहीं करती कि सामने खड़ा

आदमी कितना खतरनाक है। गणेशपुर मुशहरी प्राथमिक विद्यालय, बख्तियारपुर प्रखंड, मुंगेर जिला निवासनी कदम नरेगा कार्यस्थल के ठेकेदार के सामने बच्चों के जुलूस की नेत्री के रूप में तन कर खड़ी हो गयी । उसने ठेकेदार को साफ तौरपर कहा कि यदि कार्यस्थल पर हमारे स्कूल का एक भी बच्चा या बच्ची काम करते दिखे तो हम आपका काम नहीं होने देंगे। कदम स्कूल के बाल संसद की प्रधानमंत्री हैं पिता जितेन्द्र मांझी और माँ शांति देवी को अपनी इकलौती बेटी पर नाज़ है। कदम बड़ी होकर डॉक्टर बनना चाहती है और लोगों के दुख-दर्द दूर करने का जज्बा रखती है।

मथुरापुर कहतरवा पंचायत शिवहर के 94 वर्षीय मोहम्मद अब्दुल रहमान खान को अपनी पोती जैनब खानम पर गर्व है। वे जैनब की उम्रदराज़ी के लिए अल्लाह से दुआ माँगते हैं। दरअसल दादा जैनब के जीवट और इल्म (ज्ञान) की ललक के प्रति खासे संजीदा हैं। मोहम्मद मंसूर खान एवं फूलबीबी बेटी जैनब की पढ़ाई महज़ तीन दर्ज़े के बाद ही छुड़ा दी गयी। वजह पर्दा प्रथा की जकड़बंदी थी। लेकिन जब गाँव में ही जगजगी केन्द्र खुला तब एक बार फिर जैनब की ललक परवान चढ़ी। मार खाने के बावजूद वह तालीम (शिक्षा) के लिए स्कूल जाने लगी। फिर जैनब पीछे मुड़कर नहीं देखी। अब वह बी०ए० में पढ़ रही है, साथ ही लड़कियों को महिला शिक्षण केन्द्र में शिक्षित भी कर रही हैं। लड़कियों की आत्मरक्षार्थ प्रयासों में भी वह सहायक बनी है। ब्लू बेल्ट प्राप्त जैनब आत्मरक्षार्थ लड़कियों को कराटे का प्रशिक्षण भी दे रही है।

आपने देखा कि कैसे दृढ़ इच्छा शक्ति और बदलाव की इच्छा रखने वाली सामान्य बेटियों ने असाधारण काम किया और समाज के हौसले को बढ़ाया। बिहार की ये बेटियाँ आप सभी का आह्वान करती हैं कि शोषितों-वंचितों के प्रति मानवोचित दृष्टि का व्यवहार करें और उनके लिए किये जा रहे संघर्षों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

पा०पु०वि०स०

शब्दार्थ

ज़ज़्बा	–	ज़ोश
उम्रदराजी	–	लंबी उम्र के लिए
परवान चढ़ना	–	अत्यधिक उन्नति करना

गतिविधि

1. आप अपने पास-पड़ोस में किसी ऐसी लड़की या औरत के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए जो रूढ़ियों के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की हो।
2. वैसी महिलाओं की सूची बनाइए जिन्होंने अपने कार्यों से समाज में एक अलग मुकाम प्राप्त किया है।

19 जननायक कर्पूरी ठाकुर

बिहार की विभूतियों में जननायक कर्पूरी ठाकुर अत्यंत सम्माननीय हैं। इस पाठ में उनकी जीवन यात्रा के उल्लेखनीय पहलुओं का उद्घाटन किया गया है, जिससे उनकी जीवन-दृष्टि, संघर्षों, राजनैतिक विवेक के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का पता चलता है।



''हो सकता है कि विद्याध्ययन के पश्चात् मुझे कोई पद प्राप्त हो जाए। मैं बहुत आराम और ऐश–इशरत में दिन बिताऊँ। बड़ी कोठी, घोड़ा–गाड़ी, नौकर इत्यादि दिखावट के सभी सामान मुझे मयस्सर हों–. .....पर मुल्क का भी मुझ पर दावा कुछ कम नहीं है। अभी भारत माता परतंत्रता की पीड़ा से कराह रही है और मैं विद्याभ्यास के लिए अपनी पढ़ाई जारी रखूँ। यह मुमकीन नहीं है सर। जब तक देश के प्रत्येक निवासी को सम्मानजनक और सुविधा–संपन्न स्वाधीन जीवन–यापन करने का अवसर नहीं मिलेगा, तब तक मेरे परिजनों को भी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।''

ये अल्फ़ाज हैं ग़रीबों के मसीहा, जननायक कर्पूरी ठाकुर के। जिनमें बचपन से ही नेतृत्व क्षमता थी। 1942 ई० में अगस्त क्रांति के दौरान उन्होंने स्वयं तो कॉलेज का त्याग किया ही, साथ–ही–साथ दरभंगा, मुज़फ़्फरपुर एवं आस–पास के शहरों के सभी स्कूलों और कॉलेजों में जा–जाकर छात्रों को बहिष्कार के लिए प्रेरित करते रहे। लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा गठित ''आज़ाद दस्ता'' के वे सक्रिय सदस्य थे। तंग आर्थिक स्थिति से निजात पाने के लिए उन्होंने गाँव के ही मध्य विद्यालय में 30 रुपये प्रतिमाह की दर पर प्रधानाध्यापक का पद स्वीकार किया। दिन में स्कूल में अध्यापन कार्य करते और रात में आज़ाद दस्ता के सदस्य के रूप में जो भी ज़िम्मेदारी मिलती उसे बखूबी निभाते। 23 अक्टूबर 1943 ई० को रात्रि लगभग दो बजे वे गिरफ्तार कर लिए गए और दरभंगा जेल में डाल दिए गए। यह उनकी पहली जेल–यात्रा थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 1952 ई० के प्रथम आम चुनाव में समस्तीपुर के ताजपुर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से कर्पूरी ठाकुर सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर भारी बहुमत से विजयी रहे। बाढ़, भूख, ग़रीबी, बेकारी, भ्रष्टाचार, भूमि–सुधार, महँगाई, विकास इत्यादि समस्याओं पर उन्होंने विधानसभा के अंदर ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की। सन् 1952 से 1988 के अपने जीवन के अंतिम दिन तक बिहार विधानसभा के सदस्य रहे। इस दौरान बिहार विधानसभा के कार्यवाहक अध्यक्ष, विरोधी दल के नेता, उपमुख्यमंत्री एवं दो बार बिहार राज्य के मुख्यमंत्री भी बने।

बात सन् 1957 की है। कर्पूरी ठाकुर गाँवों का दौरा कर रहे थे। उसी दौरान उन्होंने

देखा कि एक हैज़ा पीड़ित अपने जीवन का अंतिम क्षण गिन रहा था। अस्पताल वहाँ से काफी दूर था और उसे अस्पताल ले जाने के लिए कोई सड़क-मार्ग नहीं था। उसके परिजन उसे मरते देखने के लिए विवश थे। लेकिन कर्पूरी ठाकुर ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने उस हैजा पीड़ित व्यक्ति को अपने कंधे पर उठाया और करीब पाँच कि०मी० पैदल चलकर उसे अस्पताल पहुँचाकर ही दम लिया। जन सेवा और क्षेत्र के लोगों से जुड़ाव की मिसाल कम ही देखने को मिलती है। उनके जीवन की ऐसी अनेक घटनाएँ हैं जिनमें उनका जनपक्षीय व्यक्तित्व उभरता है। पहली बार सचिवालय स्थित अपने कार्यालय कक्ष में जाने के लिए पहुँचे तो उन्हें ऊपरी तल पर ले जाने के लिए लिफ्ट से ले जाया गया। लिफ्ट के ऊपर अंग्रेजी में लिखे वाक्य को पढ़ते ही चौंक पड़े-"only for officers". शेष कर्मचारियों का आना-जाना सीढ़ियों से होता था। यानि केवल राजपत्रित पदाधिकारी ही लिफ्ट का प्रयोग कर सकते थे। अराजपत्रित कर्मचारियों को मनाही थी। उन्हें सीढ़ी से आना-जाना पड़ता था। कर्पूरी ठाकुर को इसमें सामंती प्रथा की बू आई। उन्होंने सरकार के वरीय अधिकारियों के प्रतिरोध के बावजूद लिफ्ट का प्रयोग सबके लिए आम कर दिया। यानी अब अराजपत्रित कर्मचारी के साथ-साथ सचिवालय में काम से आनेवाले अन्य लोग भी लिफ्ट का प्रयोग कर सकते थे।

महान बनना तो सहज है, लेकिन ऐसा बनना कि हर किसी को लगे कि वह तो अपने घर का है, अपना है, बहुत मुश्किल है। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी श्री कर्पूरी ठाकुर का जन्म समस्तीपुर के निकट पितौंझिया नामक गाँव में 24 जनवरी 1921 को हुआ। उनकी माता का नाम रामदुलारी देवी और पिता का नाम गोकुल ठाकुर तथा पत्नी का नाम फुलेसरी देवी था।

ठाकुर जी का बाल्यकाल अन्य ग़रीब परिवार के बच्चों की ही तरह खेल-कूद तथा गाय और अन्य पशुओं के चराने में बीता। कर्पूरी जी को दौड़ने और तैरने का शौक था। जब छह वर्ष के हुए तभी उन्हें गाँव की पाठशाला में दाखिल कराया गया। वे पाठशाला भी जाते थे और पशुओं को चराते भी थे। चरवाही में ग्रामीण गीतों का गायन बिहार की आंचलिक संस्कृति की एक विशिष्ट परंपरा है। बालक कर्पूरी इसमें विशेष रुचि लेता था। श्री राजेन्द्र शर्मा लिखते हैं ''इन्हें गीत गाने का और गाँव की मंडली में डफ बजाने का भी शौक था। होली और चैत गाने में गाँव की मंडली में बराबर अगुआगिरी करते रहे। मंडली में बैठकर डफ बजाने का काम तो वे विधायक बन जाने पर भी करते रहे।''

सन् 1940 ई० में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। दरभंगा के चंद्रधारी मिथिला कॉलेज में उन्होंने आई० ए० में नाम लिखवाया। लेकिन कॉलेज आना-जाना एक कठिन काम था। आर्थिक अवस्था इतनी अच्छी नहीं थी कि वे किसी छात्रावास में रहकर पढ़ते। फलतः वे घर से ही घुटने तक धोती पहने, कंधे पर गमछा रखे, बिना जूता-चप्पल पहने, पाँव-पैदल चलकर मुक्तापुर रेलवे स्टेशन पहुँचते थे। वहीं से रेलगाड़ी पकड़कर दरभंगा पहुँचते और कॉलेज में दिनभर पढ़कर संध्या समय लौटते। इस तरह नित्य 50-60 किलोमीटर

की यात्रा करते हुए उन्होंने कठिन शारीरिक श्रम के साथ दो वर्ष तक पढ़ाई जारी रखी। इतना कठोर जीवन बिताते हुए उन्होंने 1942 ई० में आई०ए० की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की।

स्नातक कला के प्रथम वर्ष में उसी कॉलेज में उन्होंने नामांकन कराया। लेकिन वे 1942 ई० के अगस्त क्रांति में कूदने से अपने को रोक न सके। दरभंगा जिले में कुव्यवस्था के खिलाफ़ उन्होंने कैदियों को संगठित करना शुरू किया।

फलस्वरूप इन्हें गिरफ्तार कर भागलपुर कैम्प जेल स्थानांतरित कर दिया गया। भागलपुर कैम्प जेल में कैदियों की सुविधा के लिए 25 दिनों का उपवास कर सरकार को झुकने को मजबूर किया। 1952 ई० से 1988 तक लगातार विधानसभा के सदस्य निर्वाचित होते रहे। 1967 ई० में बिहार के उपमुख्यमंत्री तथा 1970 एवं 1977 में बिहार के मुख्यमंत्री पद को सुशोभित किया। दलगत राजनीति से कर्पूरी ठाकुर को गहरा धक्का लगा। 12 अगस्त 1987 को उन्हें विपक्ष के नेता पद से हटाया गया। 17 फरवरी 1988 को हृदयाघात के कारण इस महान विभूति का निधन हो गया।

– पा.पु.वि.स.

शब्दार्थ

मयस्सर	–	उपलब्ध
मुमकिन	–	संभव
प्रतीक्षा	–	इंतज़ार
सर्वदलीय	–	सभी दलों का
अल्फाज़	–	शब्द
निष्कर्ष	–	नतीजा
खानगी	–	घर का, घरेलू, निजी

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. कर्पूरी ठाकुर अपने परिजनों को प्रतीक्षा करने के लिए क्यों कहते हैं।
2. मैट्रिक के बाद उच्च शिक्षा के लिए उन्हें कहाँ और किस प्रकार जाना पड़ता था ?
3. कर्पूरी ठाकुर को कौन-कौन सा कार्य करने में आनन्द मिलता था ?
4. सचिवालय स्थित कार्यालय में पहले दिन उन्होंने कैसा दृश्य देखा तथा उसपर उन्होंने क्या निर्णय लिया ?

पाठ से आगे

1. अपने अध्ययन के दौरान आपको किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है ।
2. आपको दिन भर में बहुत सारे काम करने पड़ते हैं। यथा-कॉमिक्स पढ़ना, खेलना, छोटे भाइयों की देख-रेख करना, खाना बनाने में सहयोग करना, परीक्षा की तैयारी करना, सोना आदि । आप किन कार्यों पर कितना समय देंगे और क्यों?

अनेक शब्दों के बदले एक शब्द

भाषा की सुदृढ़ता, भावों की गंभीरता और चुस्त शैली के लिए यह आवश्यक है कि लेखक शब्दों के प्रयोग में संयम से काम लें ताकि वह विस्तृत विचारों या भावों को थोड़े-से शब्दों में व्यक्त कर सके।

'गागर में सागर भरना' कहावत यहीं चरितार्थ होती है। विस्तृत विचारों या भावों को थोड़े शब्दों में 'अनेक शब्दों के बदले एक शब्द' की जानकारी से प्रस्तुत की जा सकती है।

जैसे:

(क) जो दीनों के बंधु हों – दीनबंधु

(ख) विभिन्न विषयों पर विचार करनेवाला – विचारक।

(ग) सामाजिक कुरीतियों को दूर करनेवाला – समाज-सुधारक ।

(घ) बिना शुल्क का – निःशुल्क

समास : दो या दो से अधिक पदों के अपने बीच की विभक्ति को छोड़कर जो नया शब्द बनता है उसे समास कहते हैं। जैसे- गंगा का जल-गंगाजल

समास के मुख्यतः छः भेद है-

1. अव्ययीभाव : जिस समास में पूर्वपद प्रधान हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इस समास में पहला पद अव्यय होता है। जैसे- यथाशक्ति, प्रतिदिन आदि।

2. तत्पुरुष : जिस समास में अंतिम पद प्रधान हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे- राष्ट्रपति, रसोईघर आदि।

3. कर्मधारय : जिस समास में विशेष्य-विशेषण हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे- नीलगाय, चंद्रमुखी आदि।

4. द्वंद्व : जिस समास में दोनों पद प्रधान हो उसे द्वंद्व समास कहते हैं। जैसे- भाई-बहन, राधा-कृष्ण आदि।

5. द्विगु : जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे- पंचवटी, त्रिभुज आदि।

6. बहुब्रीहि : समास में आए पदों को छोड़कर जब किसी अन्य पद की प्रधानता हो उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं। जैसे- पीताम्बर, वीणापाणि आदि।

गतिविधि

1. चारवाही/रोपनी के दौरान आपके क्षेत्र में गाये जानेवाले गीतों में से कोई एक गीत लिखिए।
2. अपने गाँव-जवार के किसी गायक या वादक से मिलकर उनके अनुभवों को सुनकर अपने शब्दों में लिखिए।

20 झाँसी की रानी

1857 की क्रांति भारतीय स्वाधीनता संग्राम का अविस्मरणीय अध्याय है। ब्रितानी हुकूमत से विद्रोह का विस्तार समाज के हर तबके तक हुआ। सुभद्रा कुमारी चौहान की यह कविता 'झांसी की रानी' के जीवन वृत्त, संघर्ष और विद्रोह से हमारा ओजपूर्ण साक्षात्कार कराती है। आम भारतीयों की जुबान पर बसी यह कविता प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की याद दिलाती है।

P4L6HL

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।



कानपुर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता का वह संतान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,

वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद ज़बानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों की वार
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना ख़ूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवाड़,

महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई ख़ुशियाँ छाई झाँसी में,
सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,

चित्रा ने अर्जुन को पाया
शिव से मिली भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई,
किन्तु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलानेवाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई,

नि:संतान मरे राजाजी।
रानी शोक-समानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
झाँसी हुई बिरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर पर भी घात,
उदयपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक की कौन बिसात,
जब कि सिन्ध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था बज्र-निपात,

बंगाले, मद्रास आदि की
भी तो वही कहानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लैफ्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में,

जख़्मी होकर वॉकर भागा,
उसे अज़ब हैरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना-तट पर अँग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,

अँग्रेजों के मित्र सिन्धिया
ने छोड़ी राजधानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

विजय मिली, पर अँग्रेजों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मुंदरा सखियाँ रानी के संग आई थी,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,

पर, पीछे ह्यूरोज आ गया,
हाय! घिरी अब रानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे होने लगे वार-पर-वार,

घायल होकर गिरी सिंहनी
उसे वीर-गति पानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेईस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,

दिखा गई पथ, सिखा गई
हमको जो सीख सिखानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

– सुभद्रा कुमारी चौहान

शब्दार्थ

भृकुटी	–	भौं
फिरंगी	–	अंग्रेज
मर्दानी	–	विरांगना, बहादुर स्त्री
खिलवाड़	–	खेल
सुभट	–	दक्ष, निपुण
विरुदावलि	–	विस्तृत यशोगान
नि:संतान	–	बिना संतान के
लावारिस	–	देखभाल नहीं करने वाला
वारिस	–	औलाद, संतान
अश्रुपूर्ण	–	आँसू से भरा हुआ
विरानी	–	सूनी
द्वंद्व	–	युद्ध
मनुज	–	मनुष्य

प्रश्न–अभ्यास

पाठ से

1. ''बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी''
उपर्युक्त पंक्ति में भारत को ''बूढ़ा'' कहा गया है, क्योंकि
(क) भारत गुलाम था।
(ख) भारत में एकता नहीं थी।
(ग) भारत का इतिहास प्राचीन है।
(घ) भारत की दशा शिथिल और जर्जर हो चुकी थी।

2. लक्ष्मीबाई का बचपन किस प्रकार के खेलों में बीता?

3. ''हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में''
उपर्युक्त पंक्ति में 'वीरता' और 'वैभव' का संकेत किस-किस की ओर है?

पाठ से आगे

1. इस कविता के आधार पर कालपी-युद्ध का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

2. **भाव स्पष्ट कीजिए**
(क) गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी।
(ख) हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी।

3. इस कविता से लक्ष्मीबाई से संबंधित कुछ पंक्तियाँ चुनकर उनके आधार पर रानी की वीरता का वर्णन कीजिए।

4. नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं जिनमें पद्य-भाषा को गद्य-भाषा में लिखा गया है:

पद्य की भाषा : चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी
गद्य की भाषा : वह पुरानी तलवार सन् सत्तावन में चमक उठी थी।
पद्य की भाषा : बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी।
गद्य की भाषा : फिर से बूढ़े भारत में भी नई जवानी आई थी।

नीचे दी गई कविता की कुछ पंक्तियों को आप भी गद्य की भाषा में लिखिए।

पद्य-भाषा : बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।

गद्य-भाषा : .....

पद्य-भाषा : वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद ज़बानी थी।

गद्य-भाषा : .....

गतिविधि

1. प्रथम भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख वीरों की चित्रावली बनाकर प्रत्येक चित्र के साथ उसका संक्षिप्त परिचय कीजिए।
2. प्रथम भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के क्या कारण थे? अध्यापक से ज्ञात कीजिए।
3. पाठ में आए पात्रों के बीच हुए संवाद को अपनी भाषा में लिखिए तथा अभिनय कीजिए।

21 चिकित्सा का चक्कर

बेढब बनारसी ने प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से चिकित्सा पद्धतियों के विरोधाभाषों को सफलतापूर्वक उभारा है। चिकित्सकों की वेशभूषा, नुस्ख़े, औषधि निर्णय के तर्क जैसे अनेक प्रसंगों पर कटाक्ष करते हुए व्यंग्यकार ने विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के मर्म का वर्णन किया है। पाठ के अध्ययन के बाद आप हिन्दी साहित्य की व्यंग्य की बानगी को समझ पाएँगे।

P4V2J9

मैं बिल्कुल हट्टा-कट्ठा आदमी हूँ। देखने में मुझे कोई भला आदमी रोगी नहीं कह सकता। मेरी आयु लगभग पैंतीस वर्ष की है। आज तक कभी बीमार नहीं पड़ा। लोगों को बीमार देखता था, तो मुझे बड़ी इच्छा होती थी कि किसी दिन मैं भी बीमार पड़ता तो अच्छा होता। यह तो न था कि मेरे बीमार होने पर दिन में दो बार बुलेटिन निकलते, पर इतना अवश्य था कि मेरे बीमार पड़ने पर हंटले बिस्कुट-जिन्हें साधारण अवस्था में घरवाले खाने नहीं देते, दवा की बात और है—खाने को मिलते। यू०डी० क्लोन की शीशियाँ सिर पर कोमल करों से बीवी उड़ेलकर मलती। और सबसे बड़ी इच्छा यह थी कि दोस्त लोग आकर मेरे सामने बैठते और गंभीर मुद्रा धारणकर के पूछते, कहिए, बेढबजी, कैसी तबीयत है? किसकी दवा हो रही है? कुछ फायदा है? जब कोई इस प्रकार से रोनी सूरत बनाकर ऐसे प्रश्न करता, तब मुझे बड़ा मज़ा आता। और उस समय मैं आनन्द की सीमा के उस पार पहुँच जाता।

हाँ, तो एक दिन मैं हॉकी खेलकर आया। कपड़े उतारे, स्नान किया। शाम को ही भोजन कर लेने की मेरी आदत है, पर आज मैच में रिफ्रेशमेण्ट जरा ज़्यादा खा गया था, इसलिए भूख न थी। श्रीमती जी ने खाने को पूछा। मैंने कह दिया कि आज स्कूल में मिठाई खाकर आया हूँ, कुछ विशेष भूख नहीं है। उन्होंने कहा, ''विशेष न सही साधारण सही। मुझे आज सिनेमा जाना है। तुम अभी खा लेते तो अच्छा था। संभव है, मेरे आने में देर हो।'' मैंने फिर इनकार नहीं किया, उस दिन थोड़ा ही खाया। बारह पूरियाँ थीं और वही रोज़ वाली आध पाव मलाई। खा चुकने के बाद पता चला कि 'प्रसाद' जी के यहाँ से बाग़ बाज़ार का रसगुल्ला आया है। रस तो होगा ही। कल तक संभव है, कुछ खट्टा हो जाए। छह रसगुल्ले निगलकर मैंने चारपाई पर धरना दिया। रसगुल्ले छायावादी कविताओं की भाँति सूक्ष्म नहीं थे, स्थूल थे।

एकाएक तीन बजे रात को नींद खुली। नाभि के नीचे दाहिनी ओर पेट में मालूम पड़ता था, कोई बड़ी-बड़ी सूइयाँ लेकर कोंच रहा है। परंतु मुझे भय नहीं मालूम हुआ, क्योंकि ऐसे ही समय के लिए औषधियों का राजा, रोगों का रामबाण, अमृतधारा की एक शीशी सदा मेरे पास रहती है। मैंने तुरत उसकी कुछ बूँदें पान कीं। दोबारा दवा पी। तिबारा। ''पीत्वा-पीत्वा पुनः पीत्वा'' की सार्थकता उसी समय मुझे मालूम हुई। प्रातःकाल होते-होते शीशी समाप्त हो गई। दर्द में किसी प्रकार की कमी न हुई। प्रातःकाल एक डॉक्टर के यहाँ आदमी भेजना पड़ा।



डॉक्टर साहब सरकारी अस्पताल के थे। वे इक्के पर तशरीफ़ लाए। सूट तो वे ऐसा पहने हुए थे कि मालूम पड़ता था, प्रिंस ऑफ वेल्स के वैलेटों में हैं। ऐसे सूटवाले का इक्के पर आना वैसे ही मालूम हुआ, जैसे लीडरों का मोटर छोड़कर पैदल चलना। मैं अपना पूरा हाल भी न कहने पाया था कि आप बोले, 'ज़बान दिखलाइए'। प्रेमियों को जो मजा प्रेमिकाओं की आँख देखने में आता है, शायद वैसा ही डॉक्टरों को मरीजों की जीभ देखने में आता है। डॉक्टर महोदय मुस्कुराए। बोले, ''घबराने की कोई बात नहीं है। दवा पीजिए, दो खुराक पीते-पीते आपका दर्द वैसे ही गायब हो जाएगा, जैसे हिन्दुस्तान से सोना गायब हो रहा है।'' मैं तो दर्द से बेचैन था। डॉक्टर साहब साहित्य का मजा लूट रहे थे। चलते-चलते बोले, ''अभी अस्पताल खुला न होगा, नहीं तो आपको दवा मँगानी न पड़ती। खैर, चंद्रकला फार्मेसी से दवा मँगवा लीजिएगा। वहाँ दवाइयाँ ताजी मिलती हैं। बोतल में पानी गरम करके सेंकिएगा।'' दवा पी गई। गरम बोतलों से सेंक भी आरम्भ हुई। सेंकते-सेंकते छाले पड़ गए, पर दर्द में कमी न हुई।

दोपहर हुआ, शाम हुई, पर दर्द ने मुझसे ऐसा प्रेम दिखलाया कि हटने का नाम दूर। लोग देखने के लिए आने लगे। मेरे घर पर मेला लगने लगा। ऐसे-ऐसे लोग आए कि कहाँ तक लिखूँ। हाँ, एक विशेषता थी, जो आता एक-न-एक नुस्ख़ा अपने साथ लेता आता था। किसी ने कहा, अजी कुछ नहीं हींग पिला दो। किसी ने कहा चूना खिला दो। खाने के लिए सिवा जूते के और कोई चीज बाकी नहीं रह गई, जिसे लोगों ने न बताई हो।

तीन दिन बीत गए, दर्द में कमी न हुई। लोग आते मुझे देखने के लिए, पर चर्चा छिड़ती थी, ''प्रसाद जी का अमुक नाटक रंगमंच की दृष्टि से कैसा है? राय कृष्णदास हफ्ते में नौ बार दाढ़ी क्यों बनाते हैं? मुझे भी कुछ बोलना ही पड़ता था। ऊपर से पान और सिगरेट की चपत अलग। भला दर्द में क्या कमी हो।

आख़िर में लोगों ने कहा कि तुम कब तक इस तरह पड़े रहोगे, किसी दूसरे की दवा करो। लोगों की सलाह से डॉक्टर चूहानाथ कातरजी को बुलाने की सलाह हुई। आप लोग डॉक्टर साहब का नाम सुनकर हँसेंगे, पर यह मेरा दोष नहीं है, उनके माँ-बाप का दोष है। यदि मुझे उनका नाम रखना होता तो अवश्य ही कोई साहित्यिक नाम रखता। वे थे यथा नाम तथा गुण। आपकी फीस आठ रुपये थी और मोटर का एक रुपया अलग। आप लंदन से एफ०आर०सी०एस० थे।

कुछ लोगों का सौन्दर्य रात में बढ़ जाता है, वैसे ही डॉक्टरों की फीस रात में बढ़ जाती है। खैर, डॉक्टर साहब बुलाए गए। आते ही हमारे हाल पर रहम किया और बोले,

''मिनटों में दर्द गायब हुआ जाता है, थोड़ा पानी गरम कराइए, तब तक यह दवा मँगवाइए।'' एक पुर्जे पर आपने दवा लिखी, पानी गरम हुआ। दो रुपये की दवा आई। डॉक्टर बाबू ने तुरंत एक छोटी-सी पिचकारी निकाली, उसमें एक लंबी सूई लगाई, पिचकारी में दवा भरी और मेरे पेट में वह सुई कोंचकर दवा डाली।

डॉक्टर साहब कुछ कहकर और मुझे सांत्वना देकर चले गए। उसके बाद मुझे नींद आ गई और मैं सो गया। मेरी नींद कब खुली, कह नहीं सकता, पर दर्द में कमी हो चली थी और दूसरे दिन प्रातःकाल पीड़ा रफ़ूचक्कर हो गई थी।

कोई दो सप्ताह मुझे पूरा स्वथ्य होने में लगे। बराबर डॉक्टर चूहानाथ कातरजी की दवा पीता रहा। अठारह आने की शीशी प्रतिदिन आती रही। दवा के स्वाद का क्या कहना। शायद मुर्दे के मुख में डाल दी जाए तो तिलमिला उठे। पंद्रह दिन के बाद मैं डॉक्टर साहब के घर गया उन्हें धन्यवाद देने के लिए। मैंने पूछा कि अब तो दवा पीने की कोई आवश्यकता न होगी। वे बोले, ''यह तो आपकी इच्छा पर है। पर यदि आप काफी एहतियात न करेंगे तो आपको 'अपेंडिसाइटीज' हो जाएगा। आपकी श्रीमतीजी बड़ी भाग्यवती हैं। अगर छह घंटे की देर हो जाती तो उन्हें जिंदगी-भर रोना पड़ता । वह तो कहिए आपने मुझे बुला लिया। अभी कुछ दिनों दवा पीजिए।''

इसी बीच में डॉक्टर महोदय ने ऐसे-ऐसे मर्ज़ों के नाम सुनाए कि मेरी तबीयत फड़क उठी। भला मुझे ऐसे मर्ज़ हुए, जिनका नाम साधारण क्या बड़े पढ़े-लिखे लोग भी नहीं जानते। मालूम नहीं, ये मर्ज़ सब डॉक्टरों को मालूम हैं कि केवल हमारे कातरजी को ही मालूम हैं। ख़ैर, मैंने दवा जारी रखी।

अभी एक सप्ताह भी पूरा न हुआ था कि दो बजे दिन को एकाएक सिर दर्द रूपी फ़ौज ने मेरे शरीर रूपी किले पर हमला कर दिया। डॉक्टर साहब ने जिन-जिन भयंकर मर्ज़ों का नाम लिया था, उनका स्वरूप मेरी रोती हुई आँखों के सामने नृत्य करने लगा। मैं सोचने लगा कि हमला उन्हीं में से किसी एक मर्ज़ का है। तुरंत डॉक्टर साहब के यहाँ आदमी दौड़ाया गया कि इंजेक्शन का सामान लेकर चलिए। वहाँ से आदमी बिना माँगी पत्रिका की भाँति लौटकर आया कि डॉक्टर साहब कहीं गए हैं। इधर मेरी हालत क्या थी, उसका वर्णन यदि सरस्वती शार्टहैण्ड से भी लिखें तो संभवतः समाप्त न हो। हवाई जहाज़ के पंखे की तेजी के समान तो करवटें बदल रहा था, इधर मित्रों और घरवालों की कांफ्रेंस हो रही थी कि अब कौन बुलाया जाए, पर निःशस्त्रीकरण सम्मेलन की भाँति कोई न किसी की बात मानता था, न कोई निश्चय ही हो पाता था।

मालूम नहीं, लोगों में क्या-क्या बहसें हुईं, कौन-कौन प्रस्ताव फेल हुए, कौन-कौन

पास। अंत में हमारे मकान के बगल में रहने वाले पंडितजी की विजय हुई और आयुर्वेदाचार्य, रसज्ञरंजन, चिकित्सा-मार्तण्ड, कविराज पंडित सुखदेव शास्त्री को बुलाने की बात तय हुई। एक सज्जन उन्हें बुलाने के लिए भेजे गए। कोई पैंतालीस मिनट बीत गए, परंतु न वैद्यजी आए, न भेजे गए सज्जन का ही पता चला। एक ओर दर्द आयकर की तरह बढ़ता जा रहा था, दूसरी ओर इन लोगों का भी पता नहीं। और भी बेचैनी बढ़ी, अन्त में जो साहब गए थे, लौटे। वे बोले, ''वैद्यजी ने बड़े गौर से पत्रा देखा और कहा कि अभी बुध के संक्रांति वृत्त में शनि की स्थिरता है, इकतीस पल नौ विपल में शनि बाहर हो जाएगा और डेढ़ घटी एकादशी का योग है। उनके समाप्त होने पर मैं चलूँगा। सुनकर मेरा कलेजा कबाब हो गया। मगर वे कह आए थे, अतएव बुलाना भी आवश्यक था। मैंने फिर उन्हें भेजा।

कोई आध घंटे बाद वैद्यजी एक पालकी पर तशरीफ़ लाए। आकर आप मेरे सामने कुर्सी पर बैठ गए। आप धोती पहने हुए थे और कंधे पर एक सफ़ेद दुपट्टा डाले हुए थे। इसके अतिरिक्त शरीर पर सूत के नाम पर जनेऊ था, जिसका रंग देखकर यह शंका होती थी कि कविराज जी कुश्ती लड़कर आ रहे हैं। वैद्यजी ने कुछ और पूछा। पहले नाड़ी हाथ में ली। पाँच मिनट तक एक हाथ की नाड़ी देखी, फिर दूसरे हाथ की। बोले, ''वायु का प्रकोप है, यकृत में वायु घूमकर पित्ताशय में प्रवेश कर आंत्र में जा पहुँची है। इससे मंदाग्नि का प्रादुर्भाव होता है और किसी कारण जब भोज्य पदार्थ प्रतिहत होता है, तब शूल का कारण होता है।''

कविराज जी मालूम नहीं क्या बक रहे थे और मेरी तबीयत दर्द और क्रोध से एक दूसरे ही संसार में छटपटा रही थी। आख़िर मुझसे न रहा गया। मैंने एक सज्जन से कहा, जरा अलमारी में से 'आप्टे' का कोश तो लेते आइए। यह सुनकर लोग चकराए। कुछ लोगों को संदेह हुआ कि अब मैं होश में नहीं हूँ। मैंने कहा दवा तो पीछे होगी, मैं पहले समझ तो लूँ कि मुझे रोग क्या है। तत्पश्चात वैद्यजी 'चरक' 'सुश्रुत' के श्लोक सुनाने लगे। और अंत में कहा, देखिए, मैं दवा देता हूँ और अभी आपको लाभ होगा। पंडितजी ने दवा दी। कहा की अदरख के रस में इस औषधि का सेवन करना होगा। ख़ैर साहब, फीस दी गई। किसी प्रकार वैद्यजी से पिण्ड छूटा। दो दिन दवा की गई। कभी-कभी अवश्य कम हो जाता था, पर पूरा दर्द न गया। सी०आई०डी० के समान पीछा छोड़ता ही न था।

चारपाई पर पड़ा रहने लगा। दिन को मित्रों की मंडली आती थी। वह आराम देती थी कम, दिमाग चाटती थी अधिक। एक सज्जन मुझे देखने के लिए तशरीफ़ लाए थे। बोले, ''साहब, आप लोगों को देश का हर समय ध्यान रखना चाहिए। आप किसी भारतीय हकीम अथवा वैद्य को दिखलाइए।'' मैंने मन में सोचा कि वैद्य महाराज को तो मैंने दिखा ही लिया, हकीम भी सही।



हकीम साहब आए। यद्यपि मैं अपनी बीमारी का ज़िक्र और बेबसी का हाल लिखना चाहता हूँ, पर हकीम साहब की पोशाक और उनके रहन-सहन तथा फ़ैशन का ज़िक्र न करना मुझसे न हो सकेगा। सर्दी बहुत तेज़ नहीं थी। बनारस में बहुत तेज़ सर्दी नहीं पड़ती। फिर भी ऊनी कपड़ा पहनने का समय आ गया था। परंतु हकीम साहब चिकन का बंददार कुरता पहने हुए थे। सिर पर बनारसी लोटे की तरह टोपी रखी हुई थी। पाँव में पाज़ामा ऐसा मालूम होता था कि चूड़ीदार पाज़ामा बनने वाला था, परंतु दर्ज़ी ईमानदार था, उसने कपड़ा चुराया नहीं, सबका सब लगा दिया अथवा यह भी हो सकता है कि ढीली मोहरी के लिए कपड़ा दिया गया हो, दर्ज़ी ने कुछ कतर-ब्योंत की हो और चुस्ती दिखाई हो। जूता कामदार दिल्ली वाला था। हकीम साहब पतले-दुबले इतने थे कि मालूम पड़ता था, अपनी तंदुरूस्ती अपने मरीज़ों को बाँट दी है। हकीम साहब में नज़ाकत भी बला की थी। रहत थे बनारस में मगर कान काटते थे लखनऊ के।

आते ही मैंने सलाम किया, जिसका उत्तर उन्होंने मुस्कुराते हुए बड़े अंदाज़ से दिया और बोले, ''मिज़ाज कैसा है?''

मैंने कहा, ''मर रहा हूँ। बस, आपका ही इंतजार था। अब यह ज़िन्दगी आपके ही हाथों में है। हकीम साहब ने कहा, ''यार ! आप तो ऐसी बात करते हैं, गोया ज़िन्दगी से बेज़ार हो गए हैं। भला ऐसी गुफ़्तगू भी कोई करता है। मरे आपके दुश्मन, नब्ज़ तो दिखाइए। खुदाबंदकरीम ने चाहा तो आनन-फानन में दर्द रफ़ूचक्कर होगा।''

मैंने कहा, ''अब आपकी दुआ है। आपका नाम बनारस ही नहीं, हिंदुस्तान में लुकमान की तरह मशहूर है, इसीलिए आपको तकलीफ़ दी गई है।''

दस मिनट तक हकीम ने नब्ज़ देखी। फिर बोले, ''मैं नुस्खा लिख देता हूँ। इसे इस वक्त आप पीजिए, इंशा अल्लाह जरूर शिफ़ा होगी।''

हकीम साहब चलने को तैयार हुए। उठे। उठते-उठते बोले, ''जरा एक बात का ख्याल रखिएगा कि आजकल दवाइयाँ लोग बहुत पुरानी रखते हैं। मेरे यहाँ ताजी दवाइयाँ मिलती हैं।''

दर्द फिर कम हो चला। परंतु दुर्बलता बढ़ चली थी। कभी-कभी दर्द का दौरा भी अधिक वेग से हो जाता था। घरवालों को और मुझे भी दर्द के संबंध में विशेष चिन्ता होने लगी। कोई कहता था कि लखनऊ जाओ, कोई एक्स-रे का नाम लेता था। किसी-किसी ने राय दी कि जल-चिकित्सा कीजिए। एक सज्जन ने कहा, यह सब कुछ नहीं। आप होमियोपैथी

के मार्ग की पहचान करें और बताएँ कि—

के मार्ग की पहचान करें और बताएँ कि—

इलाज़ शुरू कीजिए। देखिए, कितनी शीघ्रता से लाभ होता है। बोले, ''साहब, इन नन्ही–नन्ही गोलियों में मालूम नहीं कहाँ का जादू है। साहब, जादू का काम करती हैं, जादू का।

एक प्रकृति–चिकित्सा वाले ने कहा था कि आप गीली मिट्टी पेट पर लेपकर धूप में बैठिए। एक हफ्ते में दर्द हवा हो जाएगा। हमारे ससुर साहब एक डॉक्टर को लेकर आए। उन्होंने कहा ''देखिए साहब, आप पढ़े–लिखे आदमी हैं। समझदार हैं।'' मैं बीच में बोल उठा, ''समझदार न होता तो आपको कैसे यहाँ बुलाता।''

इसी बीच मेरी नानी की मौसी मुझे देखने आई। उन्होंने बड़े प्रेम से देखा। देखकर बोली, मैं तो पहले ही सोच रही थी कि यह कुछ ऊपरी खेल है।'' मैंने पूछा, ''यह ऊपरी खेल क्या है नानी जी?'' बोलीं, ''बेटा, सब कुछ किताब में थोड़े ही लिखा रहता है। बात यह है कि किसी चुड़ैल का फसाद है।'' मेरी स्त्री और माता की ओर देख कहने लगीं, ''देखो न इसकी बरौनी कैसी खड़ी है। कोई चुड़ैल लगी है। किसी को दिखा देना चाहिए।'' मैंने कहा, ''डॉक्टर तो मेरी जान के पीछे लग गए हैं। क्या चुड़ैल उनसे भी बढ़कर है?'' जब सब लोग चले गए तब मेरी पत्नी ने कहा, ''तुम लोगों की बात क्यों नहीं मान लिया करते? कुछ हो या न हो, इसमें तुम्हारा हर्ज ही क्या है?'' मेरे दर्द में किसी विशेष प्रकार की कमी न हुई। ओझा से तो किसी प्रकार की आशा क्या करता? पर बीच–बीच में दवा भी होती जाती थी।

कुछ लाभ अवश्य हुआ, पर पूरा फायदा न हुआ। मैंने अब पक्का इरादा कर लिया कि लखनऊ जाऊँ। जो बात काशी में नहीं हो सकती, लखनऊ में हो सकती है। वहाँ सभी साधन हैं।

सब तैयारी हो चुकी थी कि इतने में एक और डॉक्टर को एक मेहरबान लिवा लाए। उन्होंने देखा, कहा, ''जरा मुँह तो देखूँ।'' मैंने कहा, ''मुँह, जीभ जो चाहे देखिए।'' देखकर बड़े जोर से हँसे। मैं घबराया, ऐसी हँसी केवल कवि–सम्मेलन में बेढंगी कविता के समय सुनाई देती है। मैं चकित भी हुआ। डॉक्टर बोले, ''किसी डॉक्टर को यह सूझी नहीं, तुम्हें, 'पाइरिया' है। उसी का जहर पेट में जा रहा है और सब फसाद पैदा कर रहा है।'' मैंने कहा, तब क्या करूँ?'' डॉक्टर साहब ने कहा, ''इसमें करना क्या है? किसी दंत–चिकित्सक के यहाँ जाकर दाँत निकलवा दीजिए।'' मैंने अपने मन में कहा आपको यह तो कहने में कुछ कठिनाई ही नहीं हुई। गोया दाँत निकलवाने में कोई तकलीफ़ ही नहीं होती। खैर, रात भर मैंने सोचा। मैंने भी यही निश्चय किया कि यही डॉक्टर ठीक कहते हैं। दंत–चिकित्सक के यहाँ से पुछवाया। उसने कहलाया कि तीन रुपये की दाँत तुड़वाने के लिए लगेंगे। कुल दाँतों के लिए छियानवे रुपये लगेंगे। मगर मैं आपके लिए छह रुपये छोड़ दूँगा। इसके अतिरिक्त दाँत बनवाई डेढ़ सौ अलग। यह सुनकर पेट के दर्द के साथ सिर में भी चक्कर आने लगा। मगर मैंने सोचा कि जान सलामत है तो सब कुछ। इतना और खर्च करो। श्रीमती से मैंने रुपये माँगे। उन्होंने पूछा, ''क्या होगा?'' मैंने सारा हाल कह दिया। वे बोलीं, तुम्हारी बुद्धि कहीं घास

चरने गई है? आज कोई कहता है दाँत उखड़वा डालो, कल कोई कहेगा, सारे बाल उखड़वा डालो, परसों कोई डॉक्टर कहेगा, नाक नुचवा डालो, आँखें निकलवा दो। यह सब फ़िजूल है। खाना ठिकाने से खाओ। पंद्रह दिन में ठीक हो जाओगे।'' मैंने कहा, तुम्हें अपनी दवा करनी थी तो इतने रुपये क्यों बरबाद कराए ?

–बेढब बनारसी

शब्दार्थ

चिकित्सा – उपचार, इलाज
बुलेटिन – ख़बर, समाचार
वैलेट – विशेष सेवक
रिफ्रेशमेन्ट – तरोताजा
छायावादी – एक साहित्यिक युग जिसमें चित्रण की सूक्ष्मता पर बल दिया गया
एहतियात – सावधानी
प्रादुर्भाव – प्रकट होना

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. लेखक को बीमार पड़ने की इच्छा क्यों हुई ?
2. लेखक ने वैद्य और हकीम पर क्या-क्या कहकर व्यंग्य किया है ? उनमें से सबसे तीखा व्यंग्य किस पर है ? उल्लेख कीजिए।
3. अपने देश में चिकित्सा की कितनी पद्धतियाँ प्रचलित हैं ? उनमें किन-किन पद्धतियों से लेखक ने अपनी चिकित्सा कराई ?
4. इस पाठ से हास्य और व्यंग्य की बातें छाँटकर लिखिए। जैसे–''रसगुल्ले छायावादी कविताओं की भाँति सूक्ष्म नहीं थे, स्थूल थे।''
5. **किसने कहा, किससे कहा ?**
   (क) मुझे आज सिनेमा जाना है। तुम अभी खा लेते तो अच्छा था।
   (ख) घबराने की कोई बात नहीं है। दवा पीजिए, दो ख़ुराक पीते-पीते आपका दर्द ग़ायब हो जाएगा।
   (ग) वायु का प्रकोप है। यकृत में वायु घूमकर पित्ताशय में प्रवेश कर आंत्र में जा पहुँचा है।
   (घ) ''दो खुराक पीते-पीते आपका दर्द वैसे ही गायब हो जाएगा, जैसे–हिन्दुस्तान से सेना ग़ायब हो रहा है।'' इस वाक्य का भाव स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

2. एलोपैथी, होमियोपैथी एवं आयुर्वेद चिकित्सा से आप क्या समझते हैं ?

3. किस आधार पर इस पाठ को हास्य और व्यंग्य की श्रेणी में रखेंगे ? स्पष्ट कीजिए।

व्याकरण

1. इस पाठ में प्रयुक्त मुहावरों को चुनकर लिखिए।

2. **इन युग्म शब्दों के अर्थ लिखिए।**

(क)	प्रसाद	(ख)	भवन
	प्रासाद		भुवन
(ग)	कांति	(घ)	भव
	क्रांति		भव्य

गतिविधि

1. हकीम साहब की वेश-भूषा और उनके कद-काठी का वर्णन लेखक ने बड़े मज़ेदार ढंग से किया है। लेखक के वर्णन के आधार पर आप हकीम साहब का चित्र बनाइए।

2. इस व्यंग्य रचना को गम्भीर रचना में बदलिए।

इन्हें भी जानिए

जब किसी घटना या दृश्य का वर्णन करते समय असंगतियों को हास्यपूर्ण ढंग से प्रकट किया जाता है, तब उसे व्यंग्य कहते हैं। व्यंग्य ऊपर से हास्य लगता है, लेकिन जब उसके मर्म तक हमारी निगाह जाती है, तब हम असंगति या विकृति के कारणों की असलियत से परिचित होते हैं। प्राय: व्यवस्था की विकृतियों का वर्णन करने के लिए इस विधा का प्रयोग किया जाता है।

22 सुदामा चरित

सुदामा और कृष्ण बाल-सखा थे। सुदामा अति दीन थे। भिक्षा माँगकर भोजन करते थे और हरि-भजन में लीन रहते थे। उनकी पत्नी को अपनी दरिद्रता पर बड़ा क्षोभ होता था। उन्होंने दरिद्रता दूर कराने के लिए सुदामा को द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण के पास जाने को विवश कर दिया। श्रीकृष्ण अपने दीन मित्र सुदामा को अपार धन देकर जिस उदारता एवं मित्रभाव का परिचय दिया वह अद्वितीय है। ब्रज भाषा की यह कविता खड़ी बोली हिन्दी के अतीत से भी हमें परिचित कराती है।

P54XKH

सीस पगा न झगा तन में, प्रभु जानै को आहि, बसै केहि ग्रामा
धोती फटी-सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह की नहिं सामा
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल देखि, रह्यौ चकि सो बसुधा अभिरामा
पूछत दीनदयाल को धामु, बतावत आपनो नाम सुदामा



बोल्यो द्वारपालक, सुदामा नाम पांड़े सुनि
छाँड़े राजकाज ऐसे जी की गति जाने को।
द्वारका के नाथ हाथ जोरि धाय गहे पाँय,
भेंटे भरि अंक लपटाय दुख साने को ।।
नैने दोऊ जल भरि पूछत कुसल हरि,
विप्र बोल्यो विपदा में मोहिं पहिचाने को।
जैसी तुम करी तैसी करै को दया के सिन्धु,
ऐसी प्रीति दीनबन्धु दीनन सों भाने को ।।

ऐसे बिहाल बिवाइन सों पग, कंटक-जाल लगे पुनि जोये,
हाय! महादुख पायो सखा! तुम आये इतै न, कितै दिन खोये
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोये,
पानि परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोये

आगे चना गुरु मात दिये, ते लये तुम चाबि, हमें नहिं दीने,
स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सौं, चोरी की बानि में हौं जु प्रबीने
गाँठरि काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा रस भीने,
पाछिलि बानि अजौं न तजौ तुम, तैसेई भाभी के तन्दुल कीने।।

वैसोई राज समाज बनै, गज–बाजि घने, मन संभ्रम छायौ ।
कैधों परयौं कहुँ मारग भूलि कें, कै अब फेरि मैं द्वारिका आयौ।।
भौन बिलोकिबे को मन लोचत, सोचत ही सब गाँव मँझायौ।
पूछत पाँड़े फिरें सबसों पर, झोंपरि को कहुँ खोजु न पायौ।।

कै वह टूटी सी छानी हुती, कहँ कंचन के सब धाम सुहावत।
कै पग में पनही न हुतीं, कहँ लै गजराजहु ठाढ़े महावत।।
भूमि कठोर पै रात कटै, कहँ कोमल सेज पै नींद न आवत।
कै जुरतो नहिं कोदो सवाँ, प्रभु के परताप तें दाख न भावत ।।

धन्य धन्य जदुवंश–मनि, दीनन पै अनुकूल ।
धन्य सुदामा सहित तिय, कहि बरसहिं सुर फूल ।।

– नरोत्तमदास

शब्दार्थ

पगा	–	पगड़ी
झगा	–	ढीलाकुर्त्ता
आहि	–	है
उपानह	–	जूता
साने	–	मिश्रित करना
बिहाल	–	बेहाल
जोये	–	जिसे
जाल	–	समूह
कंटक	–	बाधा, काँटा
जु	–	जो
दाख	–	अंगुर, मुनक्का
अभिरामा	–	मोहक
बोल्यो	–	बोला
नैन	–	आँख
बिपदा	–	दु:ख

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. सुदामा के आगमन की सूचना देते समय द्वारपाल के मनोदशा का चित्रण कीजिए।
2. सुदामा की दीन दशा देखकर श्रीकृष्ण किस प्रकार भाव-विह्वल हो गये?
3. गुरु के यहाँ की किस बात की याद श्रीकृष्ण ने सुदामा को दिलाई?
4. अपने गाँव वापस आने पर सुदामा को क्यों भ्रम हुआ?

पाठ से आगे

1. श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता आज उदाहरण के रूप में क्यों प्रस्तुत की जाती है?
2. सुदामा को कुछ न देकर उनकी पत्नी को सीधे वैभव सम्पन्न करने का क्या औचित्य था?
3. कविता के भावों को ध्यान में रखकर एक कहानी लिखिए।
4. आपका प्रिय मित्र यदि आपसे कोई वस्तु छुपाता है तो आप उसे किस तरह की उलाहना देते हैं?

व्याकरण

1. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखिए :
   मनि, सीस, राजकाज बिहाल, दसा, बामि, मारग।

गतिविधि

1. श्रीराम-सुग्रीव मैत्री और दुर्योधन-कर्ण मैत्री के बारे में भी पढ़िए और उन पर एक-एक लघु नाटिका तैयार कीजिए।
2. श्री कृष्ण से मिलने के बाद सुदामा के गाँव में हुए परिवर्तन को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

23 * राह भटके हिरन के बच्चे को



जाड़े की रात
पहाड़ पर रो रहा है एक हिरन
खेल में मदमस्त
भटक गया है वह राह

वह नन्हा हिरन
उसके लिए बहुत दुखी हूँ मैं
उसकी दो खुली आँखों में
वेदना है कितनी !

हिरन के छौने रे, हिरन के छौने
रो मत, सो जा आराम से
जरूर मिलेगी तेरी माँ तुझे !
सो जा, सो जा

बाँस के वन, पाइन ऑक के वन
रात की हवा
तुझे लोरी सुना रहे हैं !
डर मत, बेहिचक सो जा

आकाश में हैं तारे भरे
नीचे झरे
ढेर के ढेर पत्ते
कितने नरम हैं
हिरन के छौने, सो जा !

सो जा सुबह तक
सूरज उगेगा
उसकी सुनहरी किरणें
छुएँगी जंगल के पत्तों को
मिल जायेगी तुझे तेरी माँ
रो मत, मत रो, नन्हे हिरन

अनुवादक–राजेन्द्र प्रसाद मिश्र

–डा० नि० (वियतनाम)

शब्दार्थ

मदमस्त – डूब जाना, लीन हो जाना **वेदना** – दुःख, पीड़ा **बेहिचक** – बिना रुकावट के